दैनिक जागरण
कई बार मौन ही सबसे गंभीर आलोचना होता है

एक जरूरी निर्देश

गृह मंत्रालय की ओर से सभी राज्य सरकारों को यह निर्देश देना आवश्यक था कि वे लॉकडाउन का सख्ती से पालन कराने के साथ ही हर तरह के धार्मिक एवं सांस्कृतिक आयोजनों पर भी रोक लगाएं। इस निर्देश की जरूरत इसलिए बढ़ गई थी, क्योंकि एक तो देश के कुछ हिस्सों में लॉकडाउन के प्रति अपेक्षित गंभीरता का परिचय नहीं दिया जा रहा है और दूसरे, आने वाले दिनों में बैसाखी, रंगोली बिहू, विशु, पोइला बैसाख, संक्राति आदि पर्व हैं। वास्तव में राज्य सरकारों और उनके प्रशासन से ज्यादा आम लोगों को यह समझने की जरूरत है कि जब तक कोरोना वायरस के संक्रमण का खतरा टल नहीं जाता तब तक ऐसा कुछ नहीं किया जाना चाहिए जिससे किसी भी तरह का जमावड़ा लगे। कोई भी इससे अनभिज्ञ नहीं हो सकता कि दिल्ली के निजामुद्दीन इलाके में तब्लीगी जमात के जमावड़े ने देश को कैसी मुश्किल में डाल दिया है? यदि कोरोना के खिलाफ लड़ाई कठिन हो गई है तो इस जमात के गैर जिम्मेदाराना रवैये के कारण ही। निःसंदेह धार्मिक, सांस्कृतिक पर्वों और उनसे जुड़े किस्म-किस्म के आयोजनों की अपनी एक महत्ता है, लेकिन कोरोना वायरस के संक्रमण का खतरा जिस तरह सिर उठाए हुए है उसे देखते हुए समझदारी इसी में है कि ये आयोजन घर पर ही रहकर प्रतीकात्मक तरीके से मनाए जाएं। निःसंदेह ग्रामीण इलाकों में फसल कटाई का काम तो करना ही होगा, लेकिन पूरी सावधानी के साथ।

चूंकि हर तरह का जमावड़ा कोरोना वायरस के संक्रमण को बेलगाम करने वाला साबित हो सकता है इसलिए यह भी जरूरी है कि राजनीतिक और सामाजिक समूह भी यह समझें कि उनकी ओर से ऐसा कुछ न किया जाए जिससे कहीं पर भी भीड़ जुटे। इसकी अनदेखी नहीं की जा सकती कि कही-कहीं लॉकडाउन से प्रभावित लोगों की मदद के नाम पर ऐसे समूहों की ओर से जाने-अनजाने भीड़ जुटाने वाले काम कर दिए जा रहे हैं। इसी तरह कई स्थानों पर सब्जी मंडियों अथवा राशन की दुकानों में भीड़ जुट जा रही है। यह सब खतरे को बढ़ाने और शासन-प्रशासन के साथ उन करोड़ों लोगों की मेहनत पर पानी फेरने वाला भी है जो लॉकडाउन का पालन करने में लगे हुए हैं। यदि एक के बाद एक राज्य लॉकडाउन बढ़ाने की मांग कर रहे हैं तो इसकी एक वजह यह भी है कि लोग सोशल डिस्टेंसिंग यानी सार्वजनिक मेल-मिलाप से परहेज को लेकर उतनी गंभीरता नहीं दिखा रहे जितनी आवश्यक ही नहीं अनिवार्य है। इससे इन्कार नहीं कि लॉकडाउन ने कई समस्याओं को जन्म दे दिया है, लेकिन बंदिशों से बचने की कोई भी कोशिश मुसीबतों को और बढ़ाने का ही काम करेगी।

हर हाल में हो अनुपालन

बिहार में कोरोना संक्रमण के बढ़ते दायरे के बीच राज्य सरकार द्वारा इस वायरस की चेन को तोड़ने के लिए किए जा रहे उपायों का हर हाल में अनुपालन करना नितांत आवश्यक हो गया है, ताकि यह महामारी कम्युनिटी स्तर पर पांव न पसार सके। इसी वजह से राज्य सरकार ने इंफ्लुएंजा एवं इस तरह की अन्य तथा श्वसन संबंधी बीमारी की पहचान कर इसे नियंत्रित करने की दिशा में काम करना शुरू कर दिया। इन बीमारियों के लक्षण कमोबेश कोरोना के लक्षण से मिलते-जुलते हैं। इसी कड़ी में सर्दी-खांसी की दवा खरीदने वालों का डाटा बनाने तथा घर-घर जाकर आशंकितों की पहचान के लिए सर्वे करने का निर्णय लिया गया। ऐसी परिस्थिति में लोग निजी चिकित्सकों से भी परामर्श लेने पहुंचते हैं। तय किया गया है कि वे भी ऐसे मरीजों की सूचना संबंधित अधिकारी को देंगे। इसी क्रम में प्रदेश के दवा दुकानदारों से सर्दी-खांसी, जुकाम और बुखार की दवा खरीदने वालों की जानकारी मांगी गई है। दुकानदारों को हर दिन इन दवाओं की खरीद के बिल, जिसमें नाम, पता और मोबाइल नंबर की जानकारी मुहैया करानी है। सरकार तो अपनी ओर से हरसंभव उपाय कर रही, लेकिन इसे अंजाम तक पहुंचाने की जिम्मेदारी आम लोगों के साथ इस प्रक्रिया में शामिल सभी की है। स्मरण रहे कि तेजाब की बिक्री के संबंध में सर्वोच्च न्यायालय द्वारा सख्त आदेश जारी किया गया था, लेकिन सर्वविदित है कि यह आसानी से सर्वसुलभ है। इसपर गाइडलाइन का ईमानदारी से अनुपालन नहीं किया गया। आज भी तेजाबी हमले की घटनाएं सामने आ रही हैं। बहरहाल इससे सबक लेते हुए जरूरी है कि जानलेवा कोरोना वायरस को रोकने के लिए सरकार द्वारा जारी हर निर्देश का अक्षरशः अनुपालन सुनिश्चित किया जाए। संबंधित विभाग के अधिकारियों-कर्मचारियों को मुस्तैदी से अपने दायित्व का निर्वहन करना होगा। घरों के सर्वे के दौरान आशा कार्यकर्ता या जीविका दीदियों को यह कोशिश करनी होगी कि वे उक्त परिवार के संदर्भ में सटीक सूचनाएं संकलित कर सकें। सनद रहे कि अभी कुछ लोग इसकी भयावहता को समझ तो रहे, लेकिन उसके प्रति संवेदनशील नहीं हैं और इसी वजह से शासन-प्रशासन को सहयोग नहीं कर रहे। उन्हें यह समझना होगा कि उनकी एक चूक कितने लोगों के लिए महंगी साबित हो सकती है।

धार्मिक कट्टरता ने बढ़ाया खतरा

ब्रह्मा चेलानी

समय आ गया है कि भारत तब्लीगी जमात की प्रतिगामी विचारधारा से उत्पन्न खतरे को पहचाने

जैसे फासीवाद ने दुनिया को द्वितीय विश्व युद्ध की गर्त में धकेला उसी तरह साम्यवाद ने हम पर सबसे बड़ी स्वास्थ्य आपदा थोप दी है। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी वुहान से उपजे जिस वायरस पर पर्दा डाले बैठी रही उसने पूरी दुनिया को सबसे भयावह महामारी का शिकार बना दिया। यह दर्शाता है कि किसी एक देश में कायम तानाशाही कैसे समस्त संसार का बेड़ा गर्क कर सकती है? कुछ धार्मिक उन्मादी भी इस आपदा को और बढ़ाने में सहायक बने। ऐसा ही एक तबका है तब्लीगी जमात का। यह सुन्नी इस्लाम की देवबंदी शाखा की एक मुहिम है जिसके दुनियाभर में आठ करोड़ से अधिक अनुयायी हैं। इस जमात के चलते दुनिया के कई देशों में हालात और खराब हो गए हैं। कहने को तो तब्लीगी जमात गैर राजनीतिक संगठन है, लेकिन उसका एकनिष्ठ लक्ष्य वैश्विक जिहाद ही है। अपने कुछ सहयोगी संगठनों की आतंकी गतिविधियों के बावजूद तब्लीगी जमात को आतंकी सगंठन नहीं कहा जा सकता। हालांकि अपने वैचारिक मुलम्मे से यह जिस तरह कम पढ़े-लिखे युवाओं को लुभाता है उससे आतंकी संगठनों को नए रंगरूट मिलने में मदद मिलती है। यह लंबे समय तक अल कायदा से लेकर ताबिलान जैसे संगठनों के लिए नई भर्तियों में अहम भूमिका निभाता रहा है। हरकत उल मुजाहिदीन और हरकत उल जिहाद ए इस्लामी जैसे अपने खुद के संगठनों के लिए भी उसने यह आपूर्ति की है। पाकिस्तान में तब्लीगी जमात के एक प्रमुख नेता मुफ्ती तकी उस्मानी ने राष्ट्रीय टेलीविजन पर दावा किया पैगबंर मोहम्मद ने जमात के एक कार्यकर्ता के सपने में आकर कोरोना का उपचार बताया कि इसके लिए बस कुरान की कुछ आयतें पढ़नी होंगी। दुनिया के कई देशों में इस जमात के इज्तेमा यानी सम्मेलन बदस्तूर जारी रहे। यह सब इसके बावजूद चलता रहा जब सऊदी अरब ने उमरा और ईरान ने पवित्र शिया स्थलों को बंद कर दिया।

भारत में तब्लीगी जमात के मुखिया मौलाना मुहम्मद साद कंधालवी ने मरकज की ताकत के नाम पर मासूम तब्लीगियों को बरगलाकर उन्हें बीमारी के मुंह में धकेल दिया। मरकज असल में इस संगठन का मुख्यालय है जो नई दिल्ली के निजामुद्दीन में है। साद का यह कहना कि 'अल्लाह हम सभी की हिफाजत करेगा', ईरान के शिया धर्मगुरुओं की गलती दोहराने जैसा ही था जिन्होंने अपने पवित्र शहर कोम को कोरोना वायरस का केंद्र बना दिया। तब्लीगी जमात के इज्तेमाओं ने दक्षिण पूर्व एशिया से लेकर पश्चिमी अफ्रीका तक सुन्नी मुसलमानों वाले देशों की देहरी तक इस बीमारी को पहुंचाया। कुआलालंपुर की पेटलिंग मस्जिद में 27 फरवरी से 1 मार्च के बीच 16,000 जमातियों के जमावड़े ने कोरोना संक्रमण के बीज छह दक्षिण पूर्व एशियाई देशों में बोए। इनमें ब्रूनेई, कंबोडिया, मलेशिया, सिंगापुर, थाईलैंड और वियतनाम शामिल हैं। कुआलालंपुर के बाद तब्लीगी जमात का और जलसा पाकिस्तान में हुआ। यह 11-12 मार्च को लाहौर के उपनगरीय इलाके रायविंड स्थित जमात के मुख्यालय में हुआ जिसमें करीब ढाई लाख लोग जुटे। इससे पहले कि पाक प्रशासन हरकत में आता, सैकड़ों लोग वायरस के संपर्क में आ गए। उन्होंने न केवल पाकिस्तान, किर्गिस्तान और नाइजीरिया तक संक्रमण फैला दिया।

अवधेश राजपूत

रायविंड के बाद अगला पड़ाव थी नई दिल्ली, जहां 13 मार्च से यह आयोजन होना था। हालांकि तब तक दिल्ली में कोरोना के मद्देनजर बड़े आयोजनों पर पाबंदी लगा दी गई थी, फिर भी निजामुद्दीन में जुटान हुई। इंडोनेशिया जैसे देश ने अंतिम क्षणों में अपने यहां इज्तेमा पर प्रतिबंध लगा दिया। वहां 18 मार्च को यह प्रस्तावित था जिमसें करीब 8,800 जमाती शिरकत करते। हमारी एजेंसियों ने नई दिल्ली में इज्तेमा होने दिया। महाराष्ट्र ने समझदारी दिखाते हुए वसई में ऐसे कार्यक्रम को दी गई मंजूरी रद कर दी। नई दिल्ली का जमावड़ा तो एक अप्रैल को तब तक रहा जब तक कि 2,346 जमातियों को वहां से निकाला नहीं गया। यह आयोजन भारत के लिए बहुत भारी साबित हुआ। इसने 22 मार्च से जारी राष्ट्रव्यापी लॉकडाउन की साधना में भी विघ्न डालने का काम किया। इसमें जुटे तमाम विदेशी नागरिकों द्वारा अपने पर्यटन वीजा के बेजा इस्तेमाल ने भारतीय सुरक्षा एजेंसियों की क्षमता पर भी सवाल खड़े किए। इस सबसे तब्लीगी जमात की प्रतिष्ठा को जो ठेस पहुंची उसकी भरपाई आसान नहीं होगी। इस आपदा के गुजर जाने के बाद यह संगठन इसे लेकर कुख्यात हो जाएगा कि उसके इज्तेमा के चलते कैसे कोरोना संक्रमण फैला, जो तमाम लोगों की मौत की वजह बना।

महामारी के दौरान अपनी संदिग्ध भूमिका से सुर्खियों में आने के चलते तब्लीगी जमात में बीते कुछ वर्षों से चली आ रही आंतरिक वर्चस्व की लड़ाई और तेज हो सकती है। उसकी कलह और हिंसक रूप ले सकती है। बांग्लादेश, पाकिस्तान और ब्रिटेन में जमात के कट्टर होते धड़े साद की सदारत को चुनौती दे रहे हैं।

पाकिस्तान में सेना-मुल्ला गठजोड़ खासा पुराना है। इससे सेना को भारत और अफगानिस्तान के खिलाफ आतंकी मोहरे तैयार करने में मदद मिलती है। ऐसे में तब्लीगी जमात का वैश्विक मुख्यालय नई दिल्ली में होना पाकिस्तानी सेना की आंखों में खटकता है, क्योंकि इस्लामिस्ट और आतंकी समूहों पर पूर्ण नियंत्रण ही जनरलों की घरेलू सत्ता और उनकी क्षेत्रीय रणनीति का अहम हिस्सा है। इसीलिए इस पर हैरानी नहीं कि ये जनरल पाकिस्तान में तब्लीगी जमात को नई दिल्ली समूह से इतर स्वतंत्र रूप से संचालन को उकसाते रहे हैं। वहां जमात और फौज के बड़े गहरे संबंध हैं। इनकी दुरभिसंधि से ही आतंकी विषबेल फलती-फूलती है। जमात के सबसे बेहतरीन शागिर्दों को फौज द्वारा चुना जाता है। उनका चयन भी अमूमन जमात के रायविंड स्थित मुख्यालय से होता है जहां से चुने गए अव्वल लड़कों को चार महीने के विशेष प्रशिक्षण के लिए भेजा जाता है।

समय आ गया है कि भारत तब्लीगी जमात की प्रतिगामी विचारधारा से उत्पन्न खतरे को पहचाने। यह न केवल सेक्युलरिज्म और लोकतंत्र, बल्कि धार्मिक सहिष्णुता के भी खिलाफ है। चूंकि जमात राष्ट्रीय सीमाओं को भी नहीं मानती इसलिए यह राष्ट्र-राज्य तंत्र को भी चुनौती देती है। जमात ने जिस उन्माद के साथ कोरोना वायरस को फैलाने की करतूत की वह बताता है कि यह समूह राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय सुरक्षा के लिए बड़ा खतरा है।

(लेखक सामरिक मामलों के विश्लेषक हैं)

response@jagran.com

अभी संभलने का वक्त है हमारे पास

डॉ. फैयाज खुदसर

वैश्वीकरण ने मानव को प्राकृतिक न्याय के विपरीत संसाधनों का शोषण करना सिखाया है

इन दिनों नीला आकाश, रात को उसमें चमकते अनगिनत तारे और सुबह चिड़ियों की चहचहाहट मुझे मेरे बचपन की ओर खींच ले जाती है। दिल और दिमाग से मैं खुद को वर्षों पीछे गंगा-गंडक के संगम पर बसे छोटे से शहर खगड़िया में खड़ा पाता हूं। मैं ही क्यों गांवों में पले-बढ़े, लेकिन इस वक्त महानगरों का हिस्सा बने हजारों-हजार लोग भी शायद मेरा जैसा महसूस करते होंगे। पहले जनता कर्फ्यू और फिर लॉकडाउन कोरोना वायरस से उपजी महामारी से बचने के लिए एहतियातन उठाया गया कदम है। फिलवक्त हम इंसानों के पदचाप ठहर गए हैं। सड़कों पर गाड़ियों का चलना तकरीबन बंद है। महानगरों में आवाजाही पर रोक ने ऐसा माहौल बना दिया है जो दूसरे जीवों के अधिकारों को सशक्त बना रहा है। शहरी परिवेश में जिन पक्षियों का दर्शन दुर्लभ था, वे आज यह हर तरफ दिख रहे हैं।

ग्लोबल कार्बन प्रोजेक्ट से जुड़े वैज्ञानिकों का मानना है कि वैश्विक स्तर पर कार्बन उत्सर्जन में पांच फीसद या इससे भी ज्यादा की सुखद गिरावट आएगी। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद यह अपनी तरह की पहली घटना होगी। इसके सही आंकड़े तो संकट खत्म होने के बाद के अध्ययनों से ही मिल सकेंगे, लेकिन इसका असर अभी भी महसूस किया जा सकता है। मसलन, दिल्ली एवं इसके आस-पास इस वक्त दिखने वाला नीला आसमान। बमुश्किल बीस दिन पहले यह धूल कणों और धुएं से मिश्रित काला और भयानक नजर आता था। हवाई जहाजों के जमीन पर बने रहने, कारखानों के बंद होने और वाहनों के सड़कों से नदारद रहने से शायद ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन में अभूतपूर्व गिरावट आई है। वैश्वीकरण ने हमें प्राकृतिक न्याय के विपरीत संसाधनों का अत्यधिक शोषण करना सिखाया है। मानव ने विकास की दिशाहीन दौड़ मे पीने के पानी एवं शुद्ध वायु तक को भी नजरअंदाज किया। उसने प्रकृति की अनमोल धरोहर-जल एवं वायु का भी बाजारीकरण कर दिया। इसका खामियाजा समाज के अंतिम पंक्ति में खड़े लोगों को उठाना पड़ रहा है।

इन दिनों केरल के कोझीकोड में मालाबार सिवेट का सड़क पर निकल आना, दिल्ली-एनसीआर की सड़कों पर नीलगायों का विचरण करना, देहरादून शहर में हाथी का बेरोकटोक घूमना दिखाता है कि पक्षियों और जंगली जानवरों ने अपने पर्यावास की सीमाएं बढ़ा ली हैं। लगता है ये जीव अपने मूल पर्यावास पर अपना आधिपत्य जमा रहे हैं। आज यमुना नदी का साफ पानी लोगों के लिए आकर्षण का केंद्र होने के साथ कौतूहल का विषय भी बना हुआ है। नदी आज यह बताने की कोशिश कर रही है कि संयम और धीमी गति से चलने वाले मानव जीवन से दूसरे जीवों एवं प्राकृतिक संसाधनों को थोड़ी जगह और थोड़ा समय मिल जाता है, जिससे अंततः मानव जीवन ही फायदे में रहता है। लॉकडाउन हम मनुष्यों को गहरा संदेश भी दे रहा है और शिक्षा भी। जीवन शैली में बदलाव, प्राकृतिक संसाधनों का सतत प्रयोग एवं वैज्ञानिक तरीकों से प्रकृति को फिर से स्थापित करना ही मानव जीवन को लंबे समय तक इस धरती पर जीवित रख सकता है।

अधिकतर सूक्ष्म जीवाणु जंगली जीवों को ही पोषिता बनाते हैं, लेकिन प्राकृतिक पर्यावासों में लगातार आ रही गिरावट से नाना प्रकार के जंगली जीव विलुप्त होने के कगार पर हैं। नतीजन वातावरण में मौजूद वायरस अन्य पोषिता की तलाश करते हैं और मूल पोषिता के अभाव में मुनष्य उनका पोषिता बन जाता है। मैं खुद वृद्धावस्था की ओर अग्रसर हूं, लेकिन मैं नहीं चाहता कि हमारा पर्यावरण कभी वृद्ध हो। इसके लिए पर्यावरण को निरंतर बायोडायवर्सिटी पार्क के रूप में संजीवनी देनी होगी। यही मनुष्यों को धरती पर अजर-अमर रखने में सक्षम होगी। हम सचेत हो जाएं। अभी भी हमारे पास वक्त है।

(लेखक यमुना बायोडायवर्सिटी पार्क, दिल्ली के वैज्ञानिक हैं)

response@jagran.com

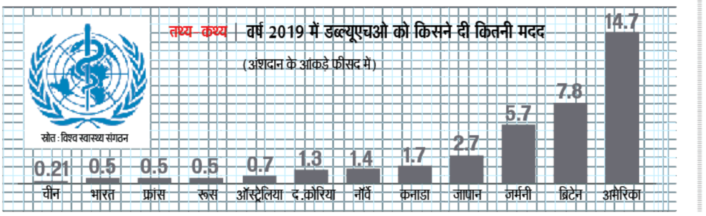

ऊर्जा

विनम्रता

आदिशक्ति का अंश होने के कारण हम सभी शक्ति से संपन्न हैं। जो मनुष्य इस सत्य को समझता है, वह इसका सदुपयोग करते हुए आत्महित और लोकहित के कार्य करता है। इसके विपरीत जो इस सत्य की अनदेखी करता है और स्वयं को ही परम शक्तिशाली समझने की भूल करता है, वह व्यर्थ में ही अहंकारी बन स्वयं तथा औरों का अहित कर बैठता है। अहंकार का संबंध अनर्थ से है, विनाश से है। अहंकार से पीड़ित बुद्धि कुटिल, संकीर्ण और संशयी हो जाती है। भक्त विभक्त हो जाता है और आत्मा अंधकार से ग्रस्त हो जाती है। इन दुर्गुणों के दुष्प्रभाव से मनुष्य आत्मीयहीन एवं मित्रहीन होता जाता है। उसकी सफलता संदिग्ध हो जाती है और अंततः अपयशों और असफलताओं का बोझ लिए ही उसका जीवन समाप्त होता है।

लंकापति रावण विद्वान, साहसी और शक्तिशाली राजा था, लेकिन अपने अहंकार के मद में चूर होकर उसने सीता माता का हरण कर लिया। इसका क्या दुष्परिणाम हुआ, इससे कोई अनभिज्ञ नहीं। दूसरी तरफ श्रीराम के चरित्र को देखें। तीनों लोकों के स्वामी एवं अपूर्व पराक्रमी होते हुए भी अहंकार उनको छू न पाया था। कुल और जाति से परे सभी को उन्होंने अपना मित्र बनाया। यहां तक कि पशु और पक्षियों के प्रति भी उनका प्रेम बरसता था। राम की अपार शक्ति के साथ उनकी इस सहज विनम्रता की जुगलबंदी का ही यह परिणाम है कि युगों-युगों से वे आज भी मानवमात्र के ह्रदय में बसे हुए हैं।

साधारण मनुष्य होने के कारण हम सभी परिस्थितियों के अधीन हो कभी-कभी अहंकार के प्रभाव में आ जाते हैं। यह कुछ हद तक सामान्य भी है, लेकिन दुर्गुण तो हर परिस्थिति में त्याज्य हैं। अतः इन पर विजय पाने के लिए हमें अपने महापुरुषों के जीवन मूल्यों का स्मरण करना चाहिए। अहंकार रहित साहसी मनुष्य के लिए इस संसार में कुछ भी अप्राप्य नहीं।

चंदन कर्ण

घर-परिवार को मिला सम्मान

फिर से

पता नहीं देश में इन दिनों चाय की खपत बढ़ी है या घटी है, पर इतना जरूर है कि घरों में नखरे कम हो चले हैं

आभास हो रहा है कि इन दिनों सभी को घर का भोजन रास आ रहा है! लौकी, टिंडे, तरोई, करेला आदि सब्जियों पर गाज नहीं गिर रही है! मंगोड़ी, कढ़ी आदि की पैरवी करते लोग घूम रहे हैं। रायता तो खूब फैला ही रहे हैं, नहीं-नहीं बना रहे हैं! लोगों को अब न चाइनीज फूड याद आ रहे हैं और न इटालियन याद आ रहे हैं, बस भारतीय भोजन याद आ रहे हैं। आज नानी-दादी के जमाने के व्यंजन याद किए जा रहे हैं। भारतीय रसोई आबाद हो रही है और बाजार बंद हो रहे हैं। बाजार का स्वाद जीभ को याद भी आ रहा होगा, लेकिन फिर ध्यान आता है कि नहीं घर में बने खाने ही स्वादिष्ट हैं। रोटी अब मालपुए जैसी लग रही है, बल्कि यूं कहूं कि रोटी पिज्जा से बेहतर स्वाद दे रही है। बाजरे की रोटी भी याद आ रही है, मक्के की, ज्वार की भी, सभी मुंह में पानी ला रही हैं। कोई भी बच्चा तक चूं नहीं बोल रहा है! हवा में गूंज हो रही है कि भोजन मिल रहा है, खा लो, क्या पता कल यह भी मिले या नहीं। इस चुप सी गूंज को भी लोग सुन पा रहे हैं। अब कोई नहीं कह रहा कि सब्जी में नमक कम है और मिर्ची ज्यादा पड़ गई है, बस स्वाद है इसी का स्वर सुन रहे हैं।

कल तक कुछ पति सास की भूमिका में थे। अब वे भी जिन्न की तरह बोतल में उतर गए हैं। मटर आना बंद हो गए हैं नहीं तो पतियों के हाथ में मटर छीलने का ही काम अवश्य रहता। हालांकि मटर की जगह पालक ने ले ली है। पत्नी थाली में पालक रखकर दे रही है, जरा साफ कर दो। पति को चाकू पकड़ना सिखाया जा रहा है, वह ना-नुकर करने की कोशिश कर रहा है, लेकिन पत्नी कह रही है कि नहीं जी यह तो सीख ही लो, क्या पता कल क्या हो! पति डरते-डरते चाकू पकड़ रहे हैं। बच्चे पूछ रहे हैं कि मम्मी, पापा ने चाय बनाना सीख लिया क्या? मैं बात को टाल जाती हूं, क्योंकि जो काम फैलेगा वह चाय बनाने से अधिक होगा। पता नहीं देश में चाय की खपत बढ़ी है या घटी है, यह तो आप सभी बता पाएंगे, लेकिन इतना जरूर है कि नखरे कम हो चले हैं।

घर की महिला को तो पहले भी घर में ही रहना था, अब भी है तो उसे खास फर्क नहीं पड़ा है। करोड़ों ऐसी महिलाएं हैं जिन्होंने महानगर नहीं देखे हैं, रेल गाड़ियां नहीं देखी हैं। वे पहले भी घर में रहकर मंगोड़ी-पापड़ बना रही थीं, अब भी बना रही हैं, लेकिन अब मंगोड़ी-पापड़ बना रही महिला को सम्मान की नजर से देखा जा रहा है। महिला को हेय दृष्टि से देखना बंद हो गया है। उसका काम महान की श्रेणी में आता जा रहा है। मैं तो इस बात से खुश हूं कि कहीं से भी लौकी-तरोई-टिंडे आदि के खिलाफ आवाज सुनाई नहीं दे रही है। हमारी प्रिय सब्जियां सम्मान पा रही हैं। पहले घर को सम्मान मिला फिर महिला को और अब सब्जियों को। बाजार और बाहर निकलने का डर अच्छा है। डरते रहो और खुश रहो।

(अजित गुप्ता का कोना ब्लॉग से साभार)

मेलबाक्स

आपराधिक संलिप्तता

विवेक काटजू का आलेख 'विश्व स्वास्थ्य संगठन की नाकामी' पढ़ा। वास्तव में संगठन के वर्तमान महासचिव टेड्रोस गेब्रेयसस ने कोरोना मामले में जैसा आचरण दिखाया है, वह नाकामी से कहीं बहुत आगे आपराधिक संलिप्तता दर्शाता है। इटली और फ्रांस की तमाम फैशन इंडस्ट्री चीन के वुहान से संचालित होती रही है। वहां का कपड़ा तथा अन्य सामान एवं वहीं के कारीगर यूरोप जाते हैं। जब एक जनवरी को चीन ने टेड्रोस को सूचित कर दिया था कि किसी अज्ञात रोग से वुहान में मौतें हो रही हैं तो ये उनकी जिम्मेदारी थी कि वहां जाकर जांच करते और यूरोपीय देश, जो वुहान के संपर्क में रहते थे, उन्हें आगाह कर देते कि एक अज्ञात अत्यंत संस्पर्शी बीमारी वहां से उनके यहां पहुंच सकती है। किंतु शायद चीनी आर्थिक हितों को चोट न पहुंचे, ऐसा सोचकर महासचिव चुप्पी साधे रहे। उन पर अंतरराष्ट्रीय न्यायालय में केस चलना चाहिए। टेड्रोस का आचरण-व्यवहार हमें संयुक्त राष्ट्र के एक पूर्व महासचिव यू थांट (1962- 71) की याद दिलाता है। थांट उन वर्षों में यूएनओ के सेक्रेटरी जनरल थे, जब भारत को चीन से एक एवं पाकिस्तान से दो युद्ध लड़ने पड़े। इनके अलावा सिक्किम में 1967 की एक संक्षिप्त मुठभेड़ भी हुई। इन तमाम घटनाओं में थांट ने बड़ी निर्लज्जता से आक्रमणकारी देशों (चीन एवं पाकिस्तान) का साथ दिया। वे अपने महान पद की मर्यादा को भुलाकर गरिमाहीन वक्तव्य देते रहे। संयुक्त राष्ट्र तथा उसके विभिन्न अंगों (सुरक्षा परिषद् को छोड़कर) में सर्वोच्च पदों पर छोटे देशों के नेताओं को बैठाया जाता है, ताकि ये देश स्वयं को सम्मानित महसूस करें। टेड्रोस इथियोपिया के हैं, थांट बर्मा के थे। किंतु पद संभालने के बाद उसके अनुरूप व्यवहार की निष्पक्षता और कर्तव्यनिष्ठा दिखलाना इन लोगों की प्राथमिकता होनी चाहिए। यदि ऐसा न हो तो उसके लिए किसी दंड की व्यवस्था यूएन चार्टर में की जानी चाहिए।

अजय मित्तल, मेरठ

सबक लेने की जरूरत

इस समय पूरी दुनिया कोरोना की चपेट में है। भारत की दृष्टि से यह बहुत चिंताजनक स्थिति है, क्योंकि आबादी के मामले में भारत दुनिया में दूसरे पायदान पर है। भारत को यह महामारी किस हद तक नुकसान पहुंचा सकती है, यह हम छोटी आबादी वाले देशों की वर्तमान स्थिति को देखकर समझ सकते हैं। क्योंकि विश्व में स्वास्थ्य पर खर्च करने वाले देशों की सूची में पहले पायदान पर अमेरिका है, जो अपने कुल जीडीपी का एक बड़ा भाग स्वास्थ्य और उससे संबंधित उपकरणों पर खर्च करते हैं। इटली दूसरे स्थान पर आता है। परंतु ये देश कोरोना को रोकने में कामयाब नहीं हो पा रहे हैं। इससे भारत और बाकी सभी विकासशील देशों को सतर्क रहने व सबक सीखने की जरूरत है।

अखिल सिंघल, दिल्ली विवि

खर्चों में कटौती हो

कोरोना ने ऐसी दहशत फैलाई कि सारे मुद्दे इंसानी आंकड़ों में तब्दील हो गए। दुनिया के सामने बचाव के अलावा कोई इलाज नहीं बचा। हमारा देश स्वास्थ्य सेवाओं में पहले ही बहुत पीछे रहा है उस पर कोविड-19 ने नई मुसीबत पेश कर दी। डॉक्टरों, नर्स और पुलिस को जरूरी सुरक्षा उपकरण मुहैया करना एक चुनौती बन गई। बहुत से लोग सरकार को आर्थिक मदद दे रहे हैं, जो सराहनीय है। इसके बावजूद एक बुनियादी सवाल उठना लाजमी है कि क्यों न अनुपयोगी खर्चों को स्थगित कर राहत कोष में डाला जाए? संभवतः यह राशि बड़ी मात्रा में पीपीइ, वेंटिलेटर और जरूरी उपकरण की खरीदारी में मददगार साबित हो सकती है।

mkmishra75@yahoo.in

अफवाहों को हवा

जहां एक तरफ लॉकडाउन के दौरान लोग घरों में बंद हैं, वहीं कुछ लोग अफवाहों को हवा देने में लगे हैं। इस महामारी के दौरान लोगों को स्वस्थ रहने के साथ-साथ सतर्क भी रहने के आवश्यकता है। किसी भी प्रकार की फर्जी अथवा अफवाह भरी खबरों को फैलाने से बचें।

अमन जायसवाल, दिल्ली विवि

इस स्तंभ में किसी भी विषय पर राय व्यक्त करने अथवा दैनिक जागरण के राष्ट्रीय संस्करण पर प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए पाठकगण सादर आमंत्रित हैं। आप हमें पत्र भेजने के साथ ई-मेल भी कर सकते हैं।
अपने पत्र इस पते पर भेजें :
दैनिक जागरण, राष्ट्रीय संस्करण,
डी-210-211, सेक्टर-63, नोएडा
ई-मेल: mailbox@jagran.com

संपादक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त, पूर्व प्रधान संपादक-स्व. नरेन्द्र मोहन, संपादकीय निदेशक-महेन्द्र मोहन गुप्त, प्रधान संपादक-संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 * इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई शुल्क अतिरिक्त।

डॉ. धनंजय चोपड़ा
प्रभारी, सेंटर ऑफ मीडिया स्टडीज, इलाहाबाद विवि

आजकल

सामाजिक बदलाव लाने वाली आपदा

विश्व आज एक नए संकट के दौर से गुजर रहा है। हमारा देश भी इस संकट से अछूता नहीं है। हमें इसके परिणाम के बारे में गंभीरता से सोचना चाहिए। सबसे पहले हमें स्वास्थ्य के प्रति गंभीरता का प्रदर्शन करते हुए स्वास्थ्य साक्षरता की दर को बढ़ाना होगा। लॉकडाउन के बीच अधिकांश लोग यह कह हे हैं कि वे न केवल जागरूक हो रहे हैं, बल्कि बहुत सी जरूरी आदतों को अपने जीवन का हिस्सा बना रहे हैं। निश्चित तौर पर यह संकट लोगों को एक बड़े सामाजिक परिवर्तन की ओर उन्मुख करेगा

कोरोना संकट से निपटने के लिए लागू किए गए लॉकडाउन के अनेक दुष्परिणाम सामने आ रहे हैं। आज देश-दुनिया की व्यापक आबादी कोरोना जनित संकट का सामना कर रही है। साथ ही वह भविष्य में उभर कर सामने आने वाली अनेक आशंकाओं के बारे में भी चिंतित है। हालांकि लॉकडाउन के इस दौर में कई सकारात्मक पहलू भी दुनिया के सामने उभर कर आए हैं। दरअसल लॉकडाउन पूरी दुनिया में सामाजिक बदलाव की नई बयार लाने का काम करने जा रहा है। इस संकट से उबर कर जो नई दुनिया हमारे सामने होगी वह बहुत बदली-बदली नजर आएगी। वैश्विक इतिहास में वह चौथी दुनिया होगी और जो पहले से कहीं अधिक संवेदनशील, सृजनशील व अधिक स्वास्थ्य साक्षरता रखने वाली होगी। वास्तव में लॉकडाउन के समय दिखने वाली लोगों की तरह-तरह की सक्रियताएं इस बात का आभास दे रही हैं कि लोग बदल रहे हैं। इस बात की भी गवाही मिल रही है कि इस तरह की सक्रियताएं अधिकांशतः सकारात्मक हैं और भविष्य में यदि ये बनी रह गईं तो 21वीं सदी के तीसरे दशक में हम नए तरह के समाज से रू-ब-रू होंगे।

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद हमने तीसरी दुनिया के लिए जो सपने संजोए थे, उनमें सबसे पहला था कि हम लोगों को अधिक संवेदनशील, सृजनशील और साक्षर तो बना ही लेंगे। लेकिन हम बहुत चाहकर भी ऐसा कर पाने में असफल ही रहे। सच कहें तो पिछली सदी के पांचवें दशक में हमने लोगों की तीन भूख को शांत करने के प्रयासों को शिद्दत के साथ शुरू किया था। इनमें पहली मानसिक भूख, दूसरी पेट की भूख और तीसरी जेब की भूख थी। जबकि सच यह है कि न तो हम लोगों को पूरी तरह साक्षर कर पाए, न ही सभी को पेट भर भोजन उपलब्ध करा पाए और न ही लोगों को इस लायक बना पाए कि उनकी जेब में हमेशा बचत के पैसे हों। व्यवस्था को चलाने वाले हमेशा इस असफलता का ठीकरा जनता के सिर पर फोड़ते चले आ रहे हैं कि वे खुद को बदलना ही नहीं चाहते। तीसरी दुनिया के सपनों में से एक भी पूरा नहीं हुआ, सिवाय तकनीकी और औद्योगिक विकास के।

बहरहाल इस बार एक अलग ही माहौल है। लोग पहली बार इस तरह से पूरी दुनिया को हलकान देख रहे हैं तो अपने आस-पास अनायास सामने आ गई मुसीबतों से जूझते, नाफरमानी और लापरवाही करते और फिर उसका खामियाजा भुगतते लोगों को भी देख रहे हैं। लोग घरों में कैद हैं और सबकी सलामती की दुआएं मांग रहे हैं। लोगों का हाल-चाल जानने और उसे बेहतरी का रास्ता सुझाने व ढाढस बंधाने की तो मानो होड़ मची है। सब चाहते हैं कि लॉकडाउन में उनके अपने किसी भी कीमत पर अवसाद की स्थिति में न जाने पाएं। बालकनी संगीत के कंसर्ट हो रहे हैं तो कई जगह बालकनी कीर्तन। एक जगह पर एकत्र होने की मनाही है, अपने-अपने घर पर रहते हुए साथ निभाने से बचने की नहीं। बस यही वजह है कि दुनिया पास आ रही है। आज लोगों को समझ में आ रहा है कि क्यों सदी के प्रारंभ में ही हमें सोशल नेटवर्किंग का साथ मिल गया था। सच कहें तो तकनीक के इस दौर में इतनी इमोशनल और इतनी केयरिंग सोसायटी की कल्पना शायद ही किसी समाजशास्त्री ने कभी की हो।

दूसरी बयार सृजनशीलता की है। दरअसल सृजनशीलता की पहली शर्त ही है संवेदनशीलता का होना। यही वजह है कि लोग आज अधिक सृजनशील होते जा रहे हैं। कह तो यह भी सकते हैं कि लॉकडाउन का फायदा उठाते हुए अपने भीतर की सृजनशीलता को बाहर लाने और उसे मांजने का काम बहुत शिद्दत के साथ होता नजर आ रहा है। यह समय शिक्षा, कला, तकनीकी, सोच-विचार में नए-नए प्रयोग करने का बनता जा रहा है। नवाचार की नई खेप सामने आने को है। इस काम में युवाओं के साथ-साथ किशोरों और बच्चों की फौज का सामने आते दिखना बहुत कुछ बदलती दुनिया का आभास दे रहा है। वास्तव में यह एक अद्भुत समय है। चारों ओर से विध्वंस यानी सांसों के टूटते जाने और लोगों के बिखरते जाने की खबरें आ रही हैं और उसी के बीच रचनाओं का उदय हो रहा है। ऐसा समय आधुनिक सामाजिक व्यवस्था में कभी नहीं हुआ।

तीसरी बयार स्वास्थ्य साक्षरता की है। सब देख रहे हैं कि इस संकट भरे जूझते समय में कुछ लोगों का जागरूकता के मामले में बहुत पीछे होने का खामियाजा सभी भुगत रहे हैं। लोग डर रहे हैं और तरह-तरह से डरा भी रहे हैं। ऐसे लोग तमाम कोशिशों को धता बताते हुए सावधानी बरतना ही नहीं चाहते। वास्तव में सामान्य भारतीय स्वास्थ्य साक्षरता में बहुत पीछे है। यह कहना शायद गलत नहीं होगा कि हमारे देश में स्वास्थ्य के प्रति साक्षरता या फिर जागरूकता दर बेहद कम स्तर की है। महज कुछ प्रतिशत लोग ही हैं जिनमें उच्च स्तर की स्वास्थ्य साक्षरता देखने में आती है। ऐसे में जब कोरोना संक्रमण का खतरा सामने आया तो लोगों को लगने लगा कि उन्होंने अपने इम्यून सिस्टम को लेकर लापरवाही बरती है। बच्चों और बुजुर्गों में कुपोषण की भी चिंता लोगों को सताने लगी। जाहिर है कि हमारी तैयारी जागरूकता के अभाव में कुछ कमजोर ही थी।

आने वाले समय में जब हम इस वैश्विक संकट से उबर कर बाहर आएंगे तो चौथी दुनिया के एक नए तरह के समाज का हिस्सा बन चुके होंगे। यह भी तय है कि वह समाज अधिक संवेदनशील होने के साथ-साथ अधिक रचनात्मक होगा। वह समाज अधिक सृजनशील होने के साथ अधिक नवाचारी यानी इनोवेटिव होगा। और वह समाज अधिक स्वास्थ्य साक्षर होने के साथ अधिक जागरूक होगा। बस जरूरत इस बात की है कि लोग आगामी कुछ दिनों तक लॉकडाउन को सकारात्मक रूप से लेते रहने की कोशिश करते रहें।

लॉकडाउन से उबरने की रणनीति

मेजर जनरल जेकेएस परिहार (सेवानिवृत्त)

निःसंदेह लॉकडाउन ने कोविड-19 संक्रमण की वैश्विक गति और भारत में कुछ अभूतपूर्व सामाजिक गतिविधियों और त्वरित प्रवृत्तियों के साथ सीधे जुड़ जाने वाले असामान्य उछाल के बावजूद सकारात्मक प्रभाव डाला। कोरोना महामारी की वर्तमान प्रवृत्ति 14 दिनों की इन्क्यूबेशन अवधि और छह से आठ सप्ताह तक वायरस के जीवन चक्र से नियंत्रित होती है। इसलिए संक्रमण के मामलों में वृद्धि अपरिहार्य है। अगला मुद्दा लॉकडाउन से बाहर आने का है। चूंकि लॉकडाउन को कोविड-19 के तेजी से प्रसार के चक्र को तोड़ने के लिए एक त्वरित एवं आवश्यक उपाय के रूप में लागू किया गया था जिसके परिणामस्वरूप राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखते हुए प्रत्येक भारतीय ने पूर्ण उत्साह के साथ इसका समर्थन किया है। लॉकडाउन के अचानक लागू होने के बावजूद देशवासियों ने इससे संबंधित अभूतपूर्व चुनौतियों का सामना करने और हर तरह से घाटे को सहन करने के लिए एकजुटता, साहस और परिपक्वता का प्रदर्शन किया है।

लॉकडाउन जैसे किसी भी आपात उपाय को अनिश्चित काल के लिए नहीं लगाया जा सकता, क्योंकि इससे देश के आर्थिक विकास और अन्य सामयिक गतिविधियों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। लिहाजा लॉकडाउन में जारी प्रतिबंधों को चरणबद्ध तरीके से धीरे-धीरे उठाया जाना चाहिए। हमें इसके लिए तत्काल, मध्यवर्ती और दीर्घकालिक कार्य योजना बनाने की जरूरत है। सभी अंतरराष्ट्रीय विमान परिचालन को 30 जून तक बंद रखना चाहिए। घरेलू उड़ानों और रेलगाड़ियों एवं अंतरराज्यीय सड़क संचालन को भी चरणबद्ध रूप से धीरे-धीरे बहाल किया जाना चाहिए। इसमें इस बात का ध्यान रखा जाना चाहिए कि ये सेवाएं उन्हीं क्षेत्रों में बहाल की जाएं जहां से लॉकडाउन के दौरान कोरोना पोजिटिव के एक भी मामले सामने नहीं आए हों।

हमें महामारी के सक्रिय हॉटस्पॉट की पहचान करनी होगी और उन क्षेत्रों में संक्रमण को रोकने के लिए गंभीर प्रतिबंध और कार्य योजना को लागू करना होगा। एक व्यावहारिक एवं बेहतर निदान यह भी हो सकता है कि आखिरी के चार दिन पूर्णतया लॉकडाउन हो जैसा कि पिछले दो दिनों से कई राज्यों में कोरोना हॉटस्पॉट की पहचान करते हुए किया जा रहा है। संक्रमण के अधिक घनत्व वाले जिलों को जून के अंत तक अलग-थलग किया जाना चाहिए। किसानों को अपने ही गांवों में उचित सावधानी बरतते हुए काम शुरू करने की अनुमति दी जानी चाहिए, ताकि खेती के कार्य संपन्न हो सकें और अनाज का भंडारण किया जा सके।

इस दिशा में सबसे महत्वपूर्ण कदम नागरिकों के स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों से समझौता किए बिना आर्थिक विकास को पुनर्जीवित करने के लिए कार्य योजना की आवश्यक समीक्षा है। नगद मुद्रा सतत प्रवाह और वस्तुओं की उपलब्धता जन अर्थव्यवस्था की आवश्यक जीवन रेखा है और इस पर तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता है। अगले दो वर्षों के लिए उद्योगों को करों से राहत और प्रोत्साहनों के बेलआउट पैकेज भविष्य की आर्थिक मंदी को रोकने और निरंतर विकास को बढ़ावा देने के लिए जरूरी है। सरकार को गैर सरकारी क्षेत्रों के आर्थिक बोझ को आंशिक रूप में स्वीकार करना चाहिए।

हालांकि निजी क्षेत्र ने संकट के इस समय में बड़ी जिम्मेदारी के साथ काम किया है, लेकिन हाल ही में वहां कई अप्रिय प्रवृत्तियां भी उभरी हैं जिनके दुष्परिणामों के चलते कर्मचारियों को मजबूरन अवैतनिक छुट्टी अथवा वेतन में कटौती का सामना करना पड़ रहा है। इसके परिणामस्वरूप पूरे देश में मध्यम और निम्न मध्यम वर्ग के एक बहुत बड़े वर्ग की सामाजिक और आर्थिक स्थिति विषम रूप से प्रभावित हो रही है या फिर हो सकती है। इसलिए महामारी के कारण निजी क्षेत्रों में नौकरियों को खत्म होने से बचाने हेतु सख्त अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए मुकम्मल उपाय अमल में लाने की आवश्यकता है।

(रक्षा एवं स्वास्थ्य विशेषज्ञ)

खरी-खरी

कोरोना और पत्नी करीना!

राजेंद्र देवधरे 'दर्पण'

कोरोना एक बीमारी का नाम है और करीना मेरी पत्नी का हालांकि अनुभव कहता है कि पत्नी और बीमारी दोनों एक ही बात हैं! कोरोना बाहर से आई है तो करीना के कदम भी मेरे घर में बाहर से ही पड़े हैं। दोनों की राशि एक है। शायद इसीलिए दोनों का अब तक कोई इलाज नहीं है! दोनों ही मामलों में सिर्फ बचाव ही इलाज है!

कोरोना के प्रकोप से बचने के लिए बार-बार हाथ धोना पड़ता है। पत्नी करीना के क्रोध से बचने के लिए भी यही उपाय है। कभी झाड़ू लगाने के बाद तो कभी सब्जी काटने के पहले। कभी पोंछा निपटाने के बाद तो कभी आटा गूंथने के पहले। कभी बर्तन धोने के बाद, कभी उसके पांव दबाने से पहले!

जानकार बताते हैं कि कोरोना से बचने का एक और तरीका है, कम से कम तीन हाथ की दूरी। अपन पत्नी से छह हाथ की दूरी रखते हैं! फिर भी वह मुझे अपनी ग्रीप में ले ही लेती है और सिद्ध करती है कि करीना कोरोना से ज्यादा मारक है! कोरोना के कारण मुंह पर मास्क, हाथ में ग्लब्ज पहनना पड़ते हैं। इधर घर में अपना मुंह बिना मास्क के बंद रहता है। और हाथ तो इतनी चीजों से धो बैठे हैं कि अब सैनिटाइजर भी शरमाने लगे हैं।

ये कमबख्त कोरोना मोहल्ले में किसी एक पर भी कुपित हो जाए तो अड़ोस-पड़ोस के सात घर थर्रा जाते हैं। इधर पत्नी कुपित हो तो मेरी सात पुश्तें अपने-अपने लोक में थर्राकर सेल्फ क्वारंटाइन हो जाती हैं! सूक्ष्म-परीक्षणकर्ता कहते हैं कि कोरोना की बनावट में कांटे ही कांटे नजर आते हैं तो पत्नी कौन सी फूलमति है! उसकी धारदार जुबान, तेज नाखून और पैने दांत! एक बार चला दे तो आत्मा तक लहूलुहान हो जाती है, एक झटके में जिंदगी 'वुहान' हो जाती है!

कोरोना खुद चलकर कभी नहीं आता, मूर्ख लोग गाड़ी पर बैठकर बाहर निकलेंगे और इससे संक्रमित होकर घर लौटेंगे। पत्नी को भी घर लाने का यही प्रोसेस है! यहां लोग घोड़ी पर बैठकर बाहर निकलते हैं और जीवनभर के लिए संक्रमित होकर लौटते हैं! लॉकडाउन में निकलने वालों को पुलिस बजा रही है, जब हम करीना जी को लेने निकले थे तब बैंड वाले बाजा बजा रहे थे।

ट्वीट-ट्वीट

अब लोगों के लिए वर्ग, जाति और रंग जैसे वर्गीकरण महत्वपूर्ण नहीं होंगे। अब दुनिया में दो ही तरह के लोग होंगे। एक वे जिनका इम्युनिटी सिस्टम मजबूत होगा और दूसरे वे जिनका इम्युनिटी सिस्टम कमजोर होगा। इसमें कमजोर इम्युनिटी वाले हमेशा मजबूत इम्युनिटी वालों से ईर्ष्या करेंगे।
तसलीमा नसरीन@taslimanareen

तीन हफ्तों का लॉकडाउन जरूरी है, लेकिन उसे इससे ज्यादा लंबा खींचना अंधेरे में तीर चलाने जैसा होगा। इसमें करोड़ों गरीबों और अधिकांश छोटे उद्यमों की किस्मत दांव पर लगी है। हमें कुछ बेहतर तौर-तरीकों की दरकार होगी जिसमें लोगों की जिंदगी के साथ उनका रोजगार भी बचाया जा सके।
जयप्रकाश नारायण@JP_LOKSATTA

एक सभ्यता के रूप में निरंतरता की भारत ने सबसे उम्दा मिसाल कायम की है। हजारों वर्षों के इतिहास में नाना प्रकार की प्राकृतिक आपदाओं और मानवीय दमन झेलने के बावजूद भारत अक्षुण्ण रहा। भारत की मजबूती का क्या आधार है? असल में अपने ज्ञान एवं विवेक के माध्यम से यह आदि एवं अनंत से बखूबी जुड़ा हुआ है।
डॉ. डेविड फ्राउले@davidfrawleyved

हरियाणा सरकार ने बहुत अक्लमंदी का फैसला किया है जो वह कोविड-19 से लड़ने वाले स्वास्थ्य अधिकारियों और श्रमिकों का वेतन दोगुना करने जा रही है।
शेखर गुप्ता@ShekharGupta

जागरण जनमत — कल का परिणाम

क्या कोरोना महामारी के खिलाफ भारत की तैयारियां सही दिशा में हैं?

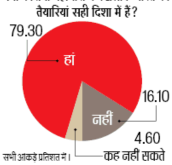

सभी आंकड़े प्रतिशत में।

आज का सवाल
क्या कोरोना वायरस के संक्रमण को रोकने में देशव्यापी लॉकडाउन प्रभावी साबित हो रहा है?

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है।

जनपथ

मानव बम बनकर छुपे जगह-जगह कुछ लोग,
अपनों में फैला रहे कोरोना का रोग।
कोरोना का रोग सगा इनको मत मानो,
ये हैं यम के दूत इन्हें दुश्मन ही जानो।
बैठे रहे छुपाय इन्हें घर में यदि तुम-हम,
तो बांटेंगे मौत सभी को ये मानव बम।
– ओमप्रकाश तिवारी

आलोक मिश्रा
स्थानीय संपादक, बिहार

बिहार डायरी

लक्ष्मण रेखा की मर्यादा बचाने की चुनौती

जब सीधी उंगली से घी न निकले तो उंगली टेढ़ी करनी ही पड़ती है। मुख्यमंत्री से लेकर प्रधानमंत्री तक एक सुर में सभी से लॉकडाउन का पालन करने को कह रहे हैं, लेकिन लोग हैं कि मानते ही नहीं। वो भी उस हालत में जब कोरोना दिन प्रतिदिन अपने पांव पसारता जा रहा है। ऐसे में बिहार सरकार को आखिरकार सजा का नियम लागू करना ही पड़ा। अब छह माह से लेकर दो साल तक की सजा का प्रावधान लागू कर दिया गया है, ताकि लोग शायद अब मानें और घर में बैठें, क्योंकि कभी फूल देकर तो कभी माला पहनाकर समझाने की कोशिशें काम नहीं आई हैं। शायद उनके लिए कोरोना एक विषय भर ही है, इसलिए लक्ष्मण रेखा पार करने में जरा भी हिचक नहीं है।

बिहार में अब धीरे-धीरे कोरोना संक्रमितों की संख्या बढ़ने लगी है। 22 मार्च को पहला मरीज मिला था, उसके बाद 18 दिन में इनकी संख्या 39 तक ही पहुंच पाई थी। जिसमें मौत सिर्फ एक की हुई और 17 ठीक होकर घर भी लौट गए, लेकिन गुरुवार को अचानक 19 मरीजों के मिलने और शुक्रवार को सुबह दो मरीजों के सामने आने से यह संख्या उछल कर 60 पहुंच गई। हालांकि अभी गनीमत यह है कि इसमें 29 सिर्फ सिवान जिले के हैं, जिसमें 21 एक ही परिवार के हैं। अभी तक बिहार के 38 जिलों में सिवान सहित 10 जिलों में कोरोना पॉजिटिव मिले हैं। सरकार ने सतर्कता बरतते हुए सिवान, नवादा और बेगूसराय के हॉटस्पॉट इलाकों को सील कर दिया है, लेकिन इससे बात तब तक नहीं बनेगी, जब तक लोग लॉकडाउन का पालन न करें। लगभग सभी जिलों में लोग इसका उल्लंघन कर रहे हैं। सब्जी मंडियों से लेकर घरेलू सामानों की खरीदारी के लिए फिजिकल डिस्टेंसिंग का पालन कहीं नहीं हो रहा। बैंकों में भी भीड़ जुट रही है। जबकि

यह दृश्य पटना के कुर्जी इलाके की एक सरकारी राशन दुकान का है, जहां राशन न मिलने पर महिलाएं आक्रोशित हो गईं और शारीरिक दूरी बनाकर रखने का निर्देश हवा हो गया। जागरण

प्रशासन उन्हें समझाने के लिए हर संभव प्रयास कर रहा है। कहीं पुलिस वाले फूल भेंट कर रहे हैं तो कहीं माला पहना कर लज्जित किया जा रहा है, लेकिन लज्जा किसी को नहीं आ रही।

देश एवं प्रदेश की स्थिति देखते हुए अब सरकार ने उंगली टेढ़ी करने का मन बना लिया है। अब बिना किसी आपात स्थिति के या अनुमति के घर से बाहर पाए जाने पर छह माह से दो साल तक जेल भेज दिया जाएगा। केंद्रीय गृह मंत्रालय का भी इससे संबंधित दो बार पत्र आ चुका है। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार भी कई बार लोगों से घर पर ही रहने की अपील कर चुके हैं। देश में पिछले एक सप्ताह से प्रतिदिन 500 मरीज बढ़ रहे हैं, ऐसे में लॉकडाउन का पालन बहुत जरूरी है। बिहार में भले ही 28 जिले अभी अछूते हों, लेकिन लोग घरों में नहीं रहे तो इनका भी बचना मुश्किल है, क्योंकि जांच की गति बेहद धीमी है। अभी तक केवल चार प्रयोगशालाओं में ही जांच की सुविधा है और अभी तक कुल 5457 सैंपल ही जांचे गए हैं। जबकि लगभग दो लाख लोग अन्य प्रदेशों एवं देशों से ही यहां आ चुके हैं। हालांकि सरकार का दावा है कि जांच के मामले में देश में हम सातवें पायदान पर हैं। सरकार भले ही दावा करे और अन्य प्रदेशों की चर्चा करे, लेकिन जांच में तेजी लाने से इन्कार नहीं किया जा सकता।

बिहार में भले ही 60 मरीज अभी तक मिले हों, लेकिन बेहतर यह है कि इनमें से न तो कोई आइसीयू में गया और न ही किसी को वेंटिलेटर पर रखा गया। वे स्वस्थ भी तेजी से हो रहे हैं। अगर लोग लक्ष्मण रेखा लांघना बंद कर देंगे तो बढ़ती संख्या को रोका जा सकता है, क्योंकि अभी तक जो भी मिले हैं, वे या तो विदेश से आए या उनके संपर्क में आए। अन्य लोगों में संक्रमण नहीं फैल पाया है। इसे देखते हुए बिहार सरकार भी अन्य राज्यों की तरह लॉकडाउन की अवधि बढ़ाने के पक्ष में है। शनिवार को प्रधानमंत्री की नीतीश से वार्ता के बाद इस पर फैसला ले लिया जाएगा। सरकार पहले ही मन बना चुकी थी कि अगर लॉकडाउन खोलने की जरूरत पड़ी तो उसे चरणबद्ध तरीके से ही खोला जाएगा। फिलहाल यह जरूरी भी लग रहा है कि कम से कम दो सप्ताह तक इसे और बढ़ा दिया जाए, लेकिन इसकी उपयोगिता भी तभी होगी, जब इसका पालन सख्ती से हो। तभी जिस वर्तमान आंकड़े पर अभी संतोष व्यक्त किया जा रहा है, वह आगे भी बरकरार रहेगा।

मंथन

कपिल शर्मा
स्वतंत्र टिप्पणीकार

सही समय पर मिलें सही सूचनाएं

यदि लक्षित समूह तक प्रशासन अपनी बात को सही तरीके से सही समय पर नहीं पहुंचा पाता है तो सूचनाओं के उस खाली स्थान को सोशल मीडिया के माध्यम से अफवाहें भर देंगी

यह दौर सूचनाओं का है। एलेन तूरेन और डेनियल बेल जैसे विख्यात समाजशास्त्रियों ने बताया था कि तकनीक के विकास के साथ औद्योगिक समाज की जो अगली सदी आएगी वह सूचना समाज होगी और सूचनाएं ही मानव जीवन को नियंत्रित करने वाला प्राथमिक आधार हो जाएंगी। यह बात सच साबित हुई और सूचनाओं के महाजाल ने आज वैश्विक अर्थव्यवस्थाओं को आपस में जोड़ दिया है और पूरी दुनिया को एक वैश्विक गांव बना दिया है। इधर सोशल मीडिया के विकास ने इस वैश्विक गांव को एक मोबाइल के अंदर बंद कर दिया है जो साधारण से आदमी की मुट्ठी में भी आसानी से उपलब्ध है।

चीन के वुहान से निकले कोरोना वायरस ने पूरी दुनिया को अपनी चपेट में ले लिया है। व्यापक जान-माल की हानि से बचने के लिए भारत में 21 दिनों का लॉकडाउन किया गया है, लेकिन एक वर्ग ऐसा है जो आज भी कोरोना के खतरों के प्रति जागरूक नहीं है और सरकारी निर्देशों के आलोक में अनुशासन का पालन नहीं कर रहा है। इसके साथ ही व्यापक भ्रांतियां, अफवाहों और अटकलबाजियों का भी आसानी से शिकार हो जा रहा है। ऐसे में कोरोना को नियंत्रित करने के प्रयास प्रभावी बनाए रखने के लिए प्रधानमंत्री कार्यालय ने प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया माध्यमों से जागरूकता संबंधी प्रचार के साथ फेक न्यूज के प्रसार को रोकने के लिए साझा प्रयास में सहयोग करने का अनुरोध किया। इस अपील का सीधा प्रभाव हम मीडिया में देख रहे हैं। यह बात तय है कि जब हमारा देश-हम दो हमारे दो, के नारे के साथ जनसंख्या नियंत्रण या एड्स के प्रति जागरूकता को लेकर पिछले तीन दशकों से चलाए जा रहे जागरूकता कार्यक्रम भी बेहद सक्रिय सफलता नहीं पा सके तो अचानक से एक-दो सप्ताह के भीतर 130 करोड़ की जनसंख्या को कोरोना के खतरे से अवगत कराते हुए राष्ट्रव्यापी लॉकडाउन के लिए तैयार करना अपने आप में एक ऐतिहासिक कदम रहा है। पिछले छह महीनों में देश में भ्रामक एवं फेक सूचनाओं के प्रचार-प्रसार ने विभिन्न जटिल हालातों को प्रशासन के सामने पैदा किया है। फिर वह चाहे नागरिकता संशोधन कानून से संबंधित घटनाएं हों, दिल्ली में भीषण दंगे हों या अब लॉकडाउन। अनुभव बताते हैं कि अवांछित सूचनाओं व फेक न्यूज पर जब प्रभावी नियंत्रण नहीं हो पाया है, साधारण सी घटनाएं भी गंभीर चुनौतियों में बदल गई हैं। प्रशासन में सूचनाओं का प्रबंधन सबसे जटिल कार्य है। साथ ही इसमें कार्यकुशलता और प्रशिक्षण की भी व्यापक कमी है। इसलिए आपदा के समय प्रशासन के लिए कुशल संवाद के लिए तीव्र संचार करना संभव नहीं हो पाता और परिस्थितियां नियंत्रण से बाहर होने लगती हैं।

इसका परिणाम यह होता है कि प्रशासन का ज्यादातर समय गलत सूचनाओं का स्पष्टीकरण देने या प्रसारित हो चुकी अफवाहों को खारिज करने में चला जाता है। ऐसे में आपदा या कानून-व्यवस्था की कठिन परिस्थितियों में प्रशासन के सामने प्रभावी रणनीति बनाने का समय कम हो जाता है। नए रचनात्मक प्रविधियों के विकास का भी प्रयास सक्रिय नहीं हो पाता है और सारा जोर बस हालात को संभालने की ओर फोकस हो जाता है। ध्यान देने लायक बात यह है कि प्रशासन को विभिन्न पक्षों के साथ कार्य करना होता है और आम लोगों के बीच में अपनी विश्वनीयता को बनाए रखना किसी भी प्रशासनिक संगठन की पहली प्राथमिकता होती है। प्रभावी सूचना प्रबंधन न केवल जल्द ही समस्या के समाधान को सामने लाता है, बल्कि प्रभावित पक्षों को भी प्रशासन द्वारा दिए जा रहे निर्देशों से स्पष्ट रूप से अवगत कराता है। ऐसे में हालात नियंत्रित होने के साथ क्राइसिस मैनेजमेंट सरल हो जाता है।

देखा जाए तो किसी भी अफवाह, भ्रामक समाचार या फर्जी खबर को रोकते हुए अपने सुनियोजित प्रयासों को सही तरीके से क्रियान्वित करना और सभी सहभागी पक्षों का सहयोग प्राप्त कर लेना ही सफल प्रशासनिक कूटनीति है। सोशल मीडिया के इस दौर में अटकलबाजी और अफवाह फैलाने के लिए सभी के लिए खुला मैदान उपलब्ध है और कोई भी अपनी शून्य स्तर की अपुष्ट जानकारी के साथ भी गंभीर से गंभीर विषय में अटकल लगाते हुए अफवाहों को मजबूत आधार दे सकता है। प्रशासन में सही समय पर सही संचार करना एक बहुत बड़ा गुण है। यहां हद से ज्यादा सूचनाओं का प्रसार करना उतना ही घातक है जितना अपनी कार्यप्रणाली को लेकर किसी भी तरह के संचार करने से अथवा सूचना देने की बात को खारिज करना। दोनों ही हालातों में विश्वसनीयता खोने का भय बना रहता है।

सफल नेतृत्व की पहचान यही है कि वह मीडिया व सभी संभावित हितधारकों को सभी आवश्यक सूचनाओं को बिना किसी भ्रामक तथ्य के साथ उपलब्ध कराता रहे और मीडिया द्वारा प्रशासनिक गोपनीयता में दखलअंदाजी को भी रोकने में सक्षम रहे। अभी तो देश के सामने पहली प्राथमिकता कोरोना के संकट से निपटना है, लेकिन सूचना प्रबंधन को लेकर देश के प्रशासनिक तंत्र को व्यापक तैयारी करनी होगी ताकि भविष्य में प्रभावी कानून-व्यवस्था बनाए रखने में उत्पन्न चुनौतियों के लिए प्रशासनिक व्यवस्था को पहले से ज्यादा सुदृढ़ और सशक्त बनाया जा सके।

हाइड्रोक्सीक्लोरोक्विन बनाने को तैयार है आइडीपीएल

जासं, ऋषिकेश : जीवनरक्षक दवा निर्माण के लिए कभी एशिया की प्रमुख कंपनियों में शामिल रही इंडियन ड्रग्स एंड फार्मास्युटिकल लिमिटेड (आइडीपीएल) ऋषिकेश एक बार फिर संकट के दौर में देश के काम आ सकती है। कोरोना महामारी के इलाज के लिए आज जिस हाइड्रोक्सीक्लोरोक्विन दवा की विश्व में मांग बढ़ी है, उसका उत्पादन आइडीपीएल कई वर्ष पहले कर चुकी है।

खाद्यान्न उठाने को लेकर सभी प्रमुख राज्यों से बात हुई है। वे जल्द अपने कोटे का अनाज लेंगे। हमें इस सीजन के गेहूं भंडारण के लिए भी गोदामों में जगह की जरूरत होगी।

— राम विलास पासवान, खाद्य व उपभोक्ता मामलों के मंत्री

वेतन काटने वाली कंपनियों पर अब कसेगा शिकंजा

सख्ती ▸ केंद्रीय श्रम मंत्रालय ने जारी किए कारवाई के आदेश

केंद्र के अधिकार क्षेत्र में आने वाले उपक्रमों से अनुबंधित फर्मों पर भी हो सकती है कार्रवाई

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

लॉकडाउन के नाम पर कर्मचारियों तथा मजदूरों को मार्च का पूरा वेतन देने में हीलाहवाली करने वाली बैंकिंग व बीमा कंपनियों तथा सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रमों के साथ अनुबंध पर कार्य करने वाली इकाइयों और कांट्रैक्टर्स पर केंद्र सरकार का शिकंजा कस सकता है । इस संबंध में श्रम मंत्रालय की ओर से केंद्रीय श्रमायुक्त को केंद्र के अधिकार क्षेत्र में आने वाली समस्त इकाइयों के बारे में शिकायतों पर कार्रवाई के आदेश जारी कर दिए गए हैं।

दरअसल, केंद्रीय श्रम मंत्रालय को यूनियनों के अलावा कुछ कर्मचारियों की व्यक्तिगत शिकायतें प्राप्त हुई हैं कि एक सरकारी कंपनी के लिए कांट्रैक्ट पर सेवाएं देने वाली उनकी कंपनी ने अब तक अनेक कर्मचारियों को मार्च का वेतन नहीं दिया है। पूछने पर लॉकडाउन का हवाला देकर मार्च का वेतन रोके जाने अथवा एक हफ्ते का वेतन काट कर देर से दिए जाने की बातें की जा रही हैं।

बैंकिंग एवं बीमा कंपनियों और सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रमों के अलावा रेलवे, छावनी बोर्ड, प्रमुख पोर्ट, खदानें और ऑयल फील्ड, एयरलाइन एवं एयरपोर्ट सेवाएं, सीमेंट, पेट्रोलियम जैसे निर्यंत्रित उद्योगों से संबंधित इकाइयां तथा केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रम आदि आते हैं। ये उपक्रम तो आम तौर पर कर्मचारियों को लॉकडाउन की अवधि का विशेष अवकाश देकर मार्च का पूरा वेतन दे रहे हैं। परंतु इनके साथ अनुबंध पर कार्य करने वाली निजी क्षेत्र की कंपनियां अपने कर्मचारियों को वेतन देने में हीलाहवाली कर रही हैं।

सूत्रों के अनुसार श्रम मंत्री संतोष गंगवार के निर्देश पर कार्यालय में विशेष कंट्रोल रूम बनाया गया है। एक सूत्र ने कहा कि आमतौर पर इकाइयों में हर माह की 10 तारीख तक वेतन दे दिया जाता है। लॉकडाउन के कारण इस बार 15 अप्रैल तक मार्च का वेतन दिए जाने की छूट दी जा सकती है। लेकिन यदि इसके बाद भी शिकायत मिलती है तो कार्रवाई होगी। गौरतलब है कि प्रधानमंत्री ने लॉकडाउन की घोषणा करते वक्त सभी कंपनियों से लॉकडाउन के दौरान कर्मचारियों का वेतन न काटने की अपील की थी।

केंद्र ने आवंटित अनाज उठाने का राज्यों से किया आग्रह

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

- उत्तर प्रदेश, बिहार व मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्रियों से राम विलास पासवान ने की बात
- राज्यों के अनाज उठा लेने से एफसीआइ को भी मिलेगी सहूलियत

प्रतीकात्मक।

कोरोना वायरस की वजह से लागू लॉकडाउन की चुनौतियों से निपटने के लिए केंद्र ने राज्यों को अतिरिक्त अनाज का आवंटन किया है। लेकिन कई बड़े राज्य अपने हिस्से का अनाज अभी उठा नहीं रहे हैं। केंद्रीय खाद्य मंत्रालय ने सभी राज्यों से आवंटित अनाज जल्द से जल्द उठा लाने को कहा है। केंद्रीय उपभोक्ता व खाद्य मंत्री राम विलास पासवान ने इस संबंध में संबंधित राज्यों के मुख्यमंत्रियों से बात भी की है।

केंद्र सरकार ने लॉकडाउन के दौरान सभी 80 करोड़ उपभोक्ताओं को अगले तीन महीने तक पांच-पांच किलो अनाज मुफ्त में देने का फैसला किया है। यह अनाज राशन कार्ड पर रियायती दर की दुकानों पर पहले से मिल रह अनाज के अतिरिक्त होगा। इसके लिए उपभोक्ताओं को किसी तरह का भुगतान नहीं करना होगा। इसका वितरण राशन की दुकानों से किया जाएगा। इसके लिए सभी राज्यों को अतिरिक्त अनाज का आवंटन कर दिया गया है।

केंद्रीय उपभोक्ता व खाद्य मंत्री राम विलास पासवान ने जागरण से बातचीत में बताया कि उत्तर प्रदेश, बिहार और मध्य प्रदेश जैसे बड़े राज्यों ने अभी तक अपना अनाज उठाना शुरू नहीं किया है। केंद्र सरकार चाहती है कि उपभोक्ताओं को जितनी जल्दी हो, अनाज बांट दिया जाना चाहिए ताकि देश के लोगों को यह भरोसा हो जाए कि अनाज की कोई कमी नहीं है। राज्यों के अनाज उठा लेने से सरकारी गोदाम खाली हो जाएंगे, जिसका उपयोग रबी सीजन की खरीद वाले गेहूं के भंडारण में किया जाएगा। इससे केंद्र सरकार को भी सुविधा होगी।

दरअसल, सामान्य तौर पर राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा कानून के अमल में राशन प्रणाली के लिए हर महीने 60 लाख टन अनाज की जरूरत होती है। जबकि तीन महीने के पांच किलो अतिरिक्त अनाज बांटने पर कुल 122 लाख टन खाद्यान्न की जरूरत है। इस तरह 200 लाख टन नया गेहूं रखने की जगह मिल जाएगी। 14 अप्रैल तक अनाज उठा लेने पर एफसीआइ को भी सहूलियत होगी। अभी उसके कर्मचारी अनाज के उठाव में व्यस्त है, जबकि इसके बाद रबी सीजन के नए गेहूं के भंडारण में जुट जाएंगे।

कोरोना की दवा ही नहीं, खाद्यान्न निर्यात भी करेगा भारत

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली : कोरोना की इस विश्वव्यापी महामारी के दौर में सबकी नजर भारत ओर है, जो सबके लिए कुछ निश्चित दवाएं बना रहा है। दवाओं के साथ भारत अब कुछ जरूरतमंद देशों को खाद्यान्न का निर्यात भी करेगा। इसके लिए सरकारी एजेंसी नैफेड को नामित किया गया है। चालू रबी मार्केटिंग सीजन में गेहूं की बंपर पैदावार होने का अनुमान है, जो घरेलू मांग के मुकाबले काफी ज्यादा होगी। कुछ देशों की मांग को देखते हुए सरकार ने उन्हें गेहूं के निर्यात का फैसला किया है। इसके तहत 50 हजार टन गेहूं अफगानिस्तान और 40 हजार टन लेबनान को निर्यात किया जाएगा। सरकारी खरीद एजेंसी भारतीय खाद्य निगम (एफसीआइ) के पास गेहूं का पर्याप्त स्टॉक है। लेकिन विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) की शर्तों के मुताबिक एफसीआई गेहूं व चावल की सीधी खरीद किसानों से न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) पर करती है। इसीलिए निर्यात का यह दायित्व नैफेड को सौंपा गया है। इसलिए इसके लिए कोई टेंडर प्रक्रिया नहीं अपनाई जाएगी। सौदा दोनों देशों की सरकारों के बीच हुआ है, लिहाजा किसानों से एमएसपी पर खरीदे गए गेहूं का ही निर्यात किया जाएगा। सूत्रों के मुताबिक एफसीआइ के स्टॉक में पड़े पिछले साल के गेहूं का निर्यात किया जा सकता है। खाद्यान्न की दूसरे देशों की मांगों पर भी सरकारी विचार कर सकती है।

एफसीआइ के एक लाख कर्मियों को मिलेगी कोरोना बीमा सुरक्षा

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

- अनुबंध पर रखे गए श्रमिकों समेत सभी कर्मचारियों को मिलेगा इसका लाभ

कोरोना महामारी के मद्देनजर लागू देशव्यापी लॉकडाउन के दौरान खाद्यान्न आपूर्ति में सक्रिय सहयोग कर रहे भारतीय खाद्य निगम (एफसीआइ) के कर्मचारियों को सरकार जीवन सुरक्षा बीमा देगी। एफसीआइ के एक लाख से अधिक कर्मचारी देशभर में अनाज की आपूर्ति कराने में रात-दिन लगे हुए हैं। इन्हें 10 लाख से लेकर 35 लाख रुपये तक की कोरोना बीमा सुरक्षा दी जाएगी।

एफसीआइ में कुल 1.09 लाख कर्मचारी काम करते हैं। इनमें श्रमिकों की संख्या 80 हजार है। इससे पहले तक इन्हें किसी तरह की जीवन बीमा सुरक्षा का लाभ नहीं मिलता है। जबकि बाकी कर्मचारियों को आतंकवादी हमले अथवा प्राकृतिक आपदा में मौत हो जाने पर जीवन बीमा का लाभ मिलता है। लेकिन कोरोना की महामारी के खतरे को देखते हुए सरकार ने सभी कर्मचारियों को बीमा सुरक्षा देने का फैसला किया है। कोविड-19 के प्रकोप के बावजूद एफसीआइ के कर्मचारी दिनरात रेलवे रैक और ट्रकों पर लदान करने और उतारने में जुटे हुए है। रबी खरीद सीजन भी चालू हो गया है, जिसमें जल्द ही मंडियों में गेहूं की सरकारी खरीद शुरू हो जाएगी। सीमित समय में अत्यधिक मात्रा में होने वाली गेहूं खरीद के स्टॉक का भंडारण बहुत जरूरी होगा। इसमें एफसीआइ के श्रमिकों और अन्य कर्मचारियों की भूमिका बहुत अधिक बढ़ने वाली है।

केंद्रीय उपभोक्ता व खाद्य मंत्री राम विलास पासवान ने जोर देकर कहा कि अनुबंध पर काम करने वाले श्रमिकों को भी इस जीवन बीमा का लाभ दिया जाएगा। पासवान ने कहा कि कांट्रैक्ट मजदूरों ने अपनी मेहनत का शानदार प्रदर्शन किया है। लॉकडाउन के दौरान अब तक 750 रेल रैक्स में लगभग 21 लाख टन अनाज का लदान किया है।

कोरोना संक्रमण के खतरे के बीच देशभर में खाद्यान्न आपूर्ति में चौबीस घंटे लगे इन श्रमिक योद्धाओं को कोविड-19 से मौत होने पर जीवन बीमा सुरक्षा कवच देने का फैसला किया गया है।

कोविड-19 से मुकाबले के लिए भारत को 16,500 करोड़ रुपये देगा एडीबी

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

- एडीबी प्रेसीडेंट ने वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण को फोन कर दिया भरोसा
- असाकावा ने कहा आपातकालीन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए है प्रतिबद्ध

निर्मला सीतारमण। फाइल

एशियाई विकास बैंक (एडीबी) ने कोरोना से लड़ाई में भारत के प्रयासों की सराहना करते हुए 220 करोड़ डॉलर यानी 16,500 करोड़ रुपये का पैकेज प्रदान करने का भरोसा दिया है। एडीबी के प्रेसीडेंट मसात्सुगु असाकावा ने शुक्रवार को वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण को इस बात का आश्वासन दिया।

असाकावा ने सीतारमण से फोन पर बात करते हुए कोविड-19 के विरुद्ध भारत सरकार द्वारा उठाए गए निर्णायक कदमों की सराहना की, जिनमें राष्ट्रीय स्वास्थ्य आपदा कार्यक्रम के अलावा उद्योग-व्यापार जगत के लिए टैक्स तथा अन्य प्रकार की रियायतों के अलावा गरीबों, महिलाओं तथा श्रमिकों को आय एवं उपभोग के संबंध में तत्काल मदद के लिए 26 मार्च को घोषित 1.70 लाख करोड़ रुपये का आर्थिक राहत पैकेज शामिल है। असाकावा ने कहा कि ये कदम अहम हैं।

असाकावा ने कहा कि एडीबी भारत की आपातकालीन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्रतिबद्ध है। इस समय हम स्वास्थ्य क्षेत्र की मदद तथा गरीबों, असंगठित क्षेत्र के मजदूरों, सूक्ष्म, लघु एवं मझोले उद्यमों तथा वित्तीय क्षेत्र को महामारी के प्रभाव से उबारने में सहायता के लिए 220 करोड़ डॉलर कर तात्कालिक सहायता देने की तैयारी कर रहे हैं।

असाकावा ने कहा, 'भारत को एडीबी की सहायता में जरूरत पड़ने पर और वृद्धि की जाएगी। भारत की आवश्यकताओं की पूर्ति तथा एडीबी कोष के तीव्र वितरण के लिए हम अपने सभी वित्तीय विकल्पों को आजमाएंगे। इनमें आपातकालीन सहायता, नीति-आधारित कर्ज तथा बजट सहायता शामिल है।' एक वक्तव्य में एडीबी ने कहा कि वो प्राइवेट सेक्टर के साथ भी जुड़ा हुआ है। इसलिए कोरोना वायरस की महामारी के दौरान वह प्राइवेट कंपनियों की वित्तीय आवश्यकताओं को भी पूरा करेगा। इससे पहले वर्ल्ड बैंक की ओर से 100 करोड़ डॉलर यानी करीब 7,500 करोड़ रुपये की मदद दी गई है। उम्मीद जताई जा रही है कि इससे अर्थव्यवस्था को बेहतर बनाने में मदद मिलेगी।

सवा लाख से अधिक ग्राहकों ने निकाला आंशिक पीएफ

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (ईपीएफओ) ने कोरोना से मुकाबले के लिए लागू लॉकडाउन के दौरान अपने ग्राहक कर्मचारियों के 1.37 लाख दावों का निपटारा करते हुए उन्हें लगभग 280 करोड़ रुपये की भविष्य निधि रकम के भुगतान की प्रक्रिया प्रारंभ की है। शीघ्र ही ये रकम ग्राहकों के खातों में पहुंच जाएगी

इस प्रावधान के तहत केवाईसी प्रक्रिया पूरी कर चुका कोई भी सदस्य कर्मचारी तीन महीने के मूल वेतन व महंगाई भत्ते अथवा ईपीएफ खाते में मौजूद रकम के 75 फीसद के बराबर तक रकम (दोनो में जो कम हो) निकाल सकता है। इसके लिए ऑनलाइन आवेदन करना होगा, ताकि लॉकडाउन अवधि के दौरान भविष्य निधि निकालने के लिए कहीं आने जाने की जरूरत न पड़े। ये भी निर्णय लिया गया था कि आवेदन के बाद संपूर्ण प्रक्रिया कंप्यूटर द्वारा अपने आप संपन्न होगी। इसके तहत अब तक 1.37 लाख ग्राहकों को 279.65 करोड़ रुपये की भविष्य निधि रकम के त्वरित और ऑनलाइन भुगतान की व्यवस्था की जा रही है। यह रकम जल्द ही ग्राहकों के खातों में पहुंच जाएगी।

एनपीएस से भी आंशिक निकासी होगी संभव

नई दिल्ली, प्रेट्र : नेशनल पेंशन स्कीम यानी एनपीएस के खाताधारक अब कोविड-19 के इलाज के लिए अपने खाते से आंशिक रकम की निकासी कर सकेंगे। भारतीय पेंशन फंड नियामक एवं विकास प्राधिकरण (पीएफआरडीए) ने शुक्रवार को इसकी इजाजत दे दी है। हालांकि प्राधिकरण ने स्पष्ट किया है कि अटल पेंशन योजना एपीवाई के खाताधारकों को यह सुविधा नहीं मिलेगी। प्राधिकरण ने एनपीएस के खाताधरकों और साझीदारों को सर्कुलर के माध्यम से इसकी सूचना दी है।

मोबाइल संदेश पर उपज खरीदने पहुंचेंगी एजेंसियां

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

- उबर टैक्सी की तर्ज पर एसएमएस से बुलाना होगा आसान
- ई-नाम से जुड़े 7.76 लाख ट्रक और 1.92 लाख ट्रांसपोर्टर

प्रतीकात्मक

कोरोना वायरस की महामारी के चलते लागू लॉकडाउन से कृषि के हित संरक्षण के लिए आधुनिक टेक्नोलॉजी का उपयोग किया जाएगा। फिलहाल रबी सीजन की प्रमुख फसल गेहूं की खरीद एक बड़ी चुनौती है, जिसके लिए नए विकल्प तैयार किए हैं। इनमें मोबाइल से भेजे संदेश पर सरकारी अथवा प्राइवेट एजेंसी सीधे खेत पर पहुंच सकती है।

उबर और ओला टैक्सी सर्विस की तर्ज पर खेती में इस सेवा की शुरुआत की गई है। फिलहाल गेहूं की खरीद में ई-नेशनल एग्रीकल्चर मार्केट (ई-नाम) से अब तक 7.76 लाख ट्रक और 1.92 लाख ट्रांसपोर्टरों को जोड़ दिया गया है। किसानों की टेलीफोन कॉल पर भी ट्रकों को बुलाया जा सकता है। सरकारी व प्राइवेट एजेंसियां इसमें अहम भूमिका निभा सकती हैं। किसानों को उनकी उपज का न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) अथवा इससे अधिक मूल्य मिल सकता है।

केंद्र सरकार ने सभी राज्यों से किसानों को सुविधा देने के लिए डायरेक्ट मार्केटिंग की सहूलियत देने का आग्रह किया है। बड़े उपभोक्ताओं को सीधे किसानों के खेत से उपज खरीदने की छूट होनी चाहिए। इसमें प्रोसेसिंग इकाइयों को विशेष रियायत देने को कहा गया है। बागवानी क्षेत्र के उपज की अंतरराज्यीय आवाजाही को सहज बनाने के लिए राज्य एजेंसियों को निगरानी करनी चाहिए। कृषि उपज की ढुलाई के लिए 62 मार्गों पर 109 ट्रेनें चलाई जा रही हैं। इनमें आवश्यक वस्तुओं, फल, सब्जियों, दूध, बीज समेत अन्य वस्तुओं की ढुलाई से हो रही है। कृषि उत्पादों की सप्लाई लाइन को दुरुस्त रखने के लिए सरकार हरसंभव प्रयास कर रही है।

कच्चे तेल के दाम को फिर मिलेगी धार

मैक्सिको सिटी, एएफपी : बीते तीन महीनों में 60 प्रतिशत से ऊपर टूट चुके कच्चे तेल के दाम को एक बार फिर धार मिलने वाली है। दुनियाभर में कच्चे तेल उत्पादकों और निर्यातकों के सबसे बड़े संगठन ओपेक और चुनिंदा अन्य सहयोगी देशों ने शुक्रवार की बैठक में कच्चे तेल के उत्पादन में कटौती की बाधा पार कर ली। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने मैक्सिको को कच्चे तेल के उत्पादन में कटौती के लिए मना लिया, जिससे जल्द ही उत्पादन में रोजाना एक करोड़ बैरल तक की कटौती का रास्ता सापफ हो गया है।

अब तक इस फैसले से बाहर रहने की घोषणा कर चुके मैक्सिको के राष्ट्रपति आंद्रेज मैन्युएल लोपेज ओब्राडोर ने कहा कि उनका देश कच्चे तेल के उत्पादन में रोजाना एक लाख बैरल तक की कटौती करने को तैयार है। इससे पहले अमेरिका और ओपेक के बाकी सदस्य मैक्सिको पर रोजाना चार लाख बैरल तक की कटौती का दबाव बना रहे थे, जिससे उसने साफ इन्कार कर दिया था। इस मुददे पर दोनों देशों में हुई सहमति के मुताबिक मैक्सिको चार लाख बैरल के बदले उत्पादन में रोजाना सिर्फ एक लाख बैरल की कटौती करेगा।

चीन से 'डिस्टेंसिंग' भारत के लिए अवसर

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

- चीन से कारोबार समेटने पर जापान ने की पहल, अमेरिकी कंपनियां पहले से तैयार
- मोदी व एबी के बीच वार्ता में कोविड-19 के बाद के हालात में आर्थिक सहयोग पर चर्चा

पीएम नरेंद्र मोदी और एबी शिंजो। फाइल

कूटनीतिक व वैश्विक कारोबार के सर्किल में जो बात पहले धीरे धीरे कही जाती थी अब वह खुलेआम कही जा रही है। जापान ने तीन दिन पहले चीन से कारोबार समेटने वाली अपनी कंपनियों के लिए आर्थिक पैकेज का एलान कर दिया है। कोविड-19 के खिलाफ बड़ी लड़ाई में उलझे अमेरिका के राजनेता व सांसद धमकी दे रहे हैं कि अब चीन पर अपनी निर्भरता कम करनी ही होगी। ऐसे में भारत के लिए चीन के विकल्प के तौर पर स्थापित होने का एक सुनहरा अवसर आता दिख रहा है। आम बजट 2020-21 में वित्त मंत्री ने पहले ही यह मंशा जता दी है कि भारत अपनी तमाम रोजमर्रा उत्पाद जरूरतों के लिए चीन पर अपनी निर्भरता खत्म करेगा। इस बारे में दुनिया में चल रही कवायदों को देख भारत सरकार आगे भी अपनी नीतियों में बड़े बदलाव की तैयारी में है। चीन के साथ व्यापारिक दूरी बनाने वाले देशों को अपने यहां निवेश के लिए आमंत्रित करने और उनके लिए अनुकूल वातावरण बनाना प्राथमिकता होगी।

ऐसे में भारतीय पीएम नरेंद्र मोदी और जापान के पीएम एबी शिंजो के बीच शुक्रवार को हुई टेलीफोन वार्ता का अपना महत्व है। विदेश मंत्रालय के मुताबिक दोनो नेताओं के बीच कोविड-19 के खिलाफ साझा सहयोग के अलावा इस महामारी के बाद के माहौल में साझा आर्थिक सहयोग के मुद्दों पर भी चर्चा हुई। दोनो देशों में पहले ही जापान को एक लाख प्रशिक्षित श्रमिक देने को लेकर समझौता हुआ है। सनद रहे कि इस हफ्ते की शुरुआत में चीन में काम करने वाली जापानी कंपनियों को वहां से अपना बोरिया-बिस्तर समेट कर जापान में उत्पादन शुरू करने के लिए एबी सरकार ने 200 करोड़ डॉलर यानी करीब 15,000 करोड़ रुपये का फंड दिया है। जापान ने चीन से बाहर किसी अन्य देश में जाकर उत्पादन करने पर उन जापानी कंपनियों को 21.5 करोड़ डॉलर की मदद का प्रस्ताव रखा है।

यूएस इंडिया स्ट्रैटेजिक एंड पार्टनरशिप फोरम (यूएसआइएसपीएफ) के मुताबिक अमेरिका-चीन के बीच ट्रेड वार के चरम पर चीन में उत्पादन करने वाली 200 अमेरिकी कंपनियां पिछले साल ही भारत में निवेश की इच्छा जता चुकी हैं। अब कोरोना वायरस की उत्पत्ति के लिए चीन के जिम्मेदार होने से ये कंपनियां भारत में निवेश के लिए और भी जल्दीबाजी दिखा सकती है।

सीआइआइ के नेशनल आइसीटीई कमेटी के चेयरमैन विनोद शर्मा कहते हैं कि निश्चित रूप से भारत के लिए निवेश लाने का बड़ा अवसर है क्योंकि दुनिया में चीन के खिलाफ हवा बह रही है। इलेक्ट्रॉनिक्स, मोबाइल जैसी जापानी और अमेरिकी कंपनियों को लाने में सफलता इसलिए भी मिल सकती है क्योंकि हाल में ही सरकार ने इन क्षेत्रों में निवेश के लिए 30,000 करोड़ रुपये से अधिक के पैकेज का एलान किया है। लेकिन यह तभी संभव हो सकता जब केंद्र और राज्य दोनों ही सरकार एकजुट होकर काम करेंगी क्योंकि सिर्फ केंद्र की तरफ से तत्परता दिखाने से काम नहीं बनने वाला है। विशेषज्ञों के मुताबिक चीन के खिलाफ कई बार ऐसे मौके आए हैं जिसे भारत भुना सकता था। एक उदाहरण वियतनाम का है जिसने सही समय पर कदम उठा कर चीन से बाहर जा रही इलेक्ट्रॉनिक्स कंपनियों को अपने यहां बुला लिया। वियतनाम अभी 90 अरब डॉलर का इलेक्ट्रॉनिक्स निर्यात करता है जबकि भारत 8.5 अरब डॉलर के आस-पास ही अटका है।

मंत्रालय सूत्रों के मुताबिक सरकार निवेश को लेकर ऐसी नीति बना रही है जो केंद्र व राज्य दोनों जगह मान्य होगी। राज्य सरकार की तरफ से केंद्र के फैसले में राजनीतिक या अन्य वजहों से रोड़े नहीं अटकाये जा सकेंगे। ऐसा करने पर उनके खिलाफ वैधानिक कार्रवाई होगी। एक तय समय में सिंगल विंडो से निवेश की मंजूरी मिलने पर उस आवेदन को मंजूर समझा जाएगा।

केपीएमजी का मत

राहत पैकेज काम किया तो वृद्धि दर 5.3-5.7 फीसद, अगर वैश्विक मंदी जल्दी नहीं दूर हुई तो वृद्धि दर 4-4.5 फीसद, घरेलू मांग व वैश्विक हालात नहीं सुधरे तो विकास दर तीन फीसद से भी नीचे

कई उद्योगों पर रहेगा खतरे का साया

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

प्रतीकात्मक।

कोविड-19 की वजह से देशभर में और दुनिया के कई दूसरे देशों में लगा लॉकडाउन अगले कुछ हफ्तों में खत्म हो जाएगा। लेकिन केपीएमजी की रिपोर्ट की मानें तो लॉकडाउन के खात्मे के बाद भी कई उद्योगों के लिए स्थिति सामान्य होने में वक्त लगेगा। सिनेमा हॉल जैसे एंटरटेनमेंट उद्योग, रेस्टोरेंट व होटल कारोबार, पर्यटन जैसे उद्योगों के लिए लॉकडाउन खात्मे के बाद भी कारोबार को सामान्य करना आसान नहीं होगा। इसकी वजह यह है कि 'सोशल डिस्टेंसिंग' जब तक कायम रहेगी, इन उद्योगों के लिए सेवा देना आसान नहीं होगा। इसी तरह से कोविड-19 के दौर में जिन देशों की मुद्राओं में ज्यादा अवमूल्यन हुआ है या जिनके शेयर बाजार को ज्यादा झटका लगा है उन्हें भी लंबे समय तक इसका असर भुगतना पड़ेगा। केपीएमजी की रिपोर्ट के मुताबिक कई देशों पर विदेशी कर्जे का बोझ बढ़ेगा। खास तौर पर जिस तरह से बांड्स की कीमतों में गिरावट का रुख देखा गया है उसका खामियाजा लंबे समय तक इन देशों को भुगतना पड़ेगा।

केपीएमजी की रिपोर्ट एक तरह से भारतीय नीति नियामकों को लिए एक सलाह रिपोर्ट भी है कि उन्हें किस तरह से आगे अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाने की तैयारी करनी चाहिए। रिपोर्ट ने कहा है कि भारतीय इकोनॉमी के सामने निजी खपत में कमी होने, सप्लाई चेन के बाधित होने और निर्यात बाजार के सुस्त होने का खतरा है लेकिन इसके बावजूद दूसरी जिस तरह से अमेरिका, भारत समेत तमाम दूसरे देश मंदी को बेअसर करने के लिए भारी-भरकम पैकेज दे रहे हैं उसका बड़ा सकारात्मक असर भी हो सकता है। इससे चालू वित्त वर्ष (2020-21) की दूसरी छमाही में उम्मीद से भी ज्यादा तेजी से हालात सामान्य हो सकते हैं। ऐसी स्थिति में भारत की आर्थिक विकास दर इस वर्ष 5.3 से 5.7 फीसद हो सकती है। लेकिन अगर वैश्विक अर्थव्यवस्था में भारत जैसा विकास नहीं होता है तो यहां की आर्थिक विकास दर 4.5 फीसद तक ही रहेगी। एक तीसरा अनुमान केपीएमजी ने यह लगाया है कि अगर घरेलू मांग भी नहीं बढ़ी और विदेशी अर्थव्यवस्था भी नहीं सुधरती है तो भारत की विकास दर तीन फीसद से भी नीचे रह सकती है।

ध्यान रहे कि मध्य मार्च तक की अंकटाड की रिपोर्ट में आशा जताई गई थी कि भारत और चीन की इकोनॉमी ही मौजूदा संकट को झेलने में सक्षम होंगी। उसके बाद स्थितियां और बदली हैं।

पीएम-केयर्स में पावर ग्रिड ने दिए 200 करोड़ रुपये

नई दिल्ली, (वि.): कोविड-19 से मुकाबले के लिए सार्वजनिक क्षेत्र की बिजली कंपनी पावर ग्रिड कॉरपोरेशन ने 31 मार्च को समाप्त हुए वित्त वर्ष में 130 करोड़ रुपये का योगदान दिया है। इसके साथ ही कंपनी ने चालू वित्त वर्ष के लिए भी पीएम-केयर्स फंड में 70 करोड़ रुपये देने का वादा किया है। इसके अलावा कंपनी के कर्मचारी भी अपने वेतन का एक हिस्सा कोविड-19 से लड़ने के काम में योगदान के रूप में दे रहे हैं। कंपनी ने इस मुश्किल वक्त में लोगों की मदद के लिए झुग्गी बस्तियों में भोजन के पैकेट भी बंटवाए हैं। कंपनी अपने कर्मचारियों की सुरक्षा के लिए मास्क, सैनिटाइजर, साबुन इत्यादि बांट रही है।

कोरोना से लड़ने को आइसीएआइ देगी 21 करोड़

नई दिल्ली, (वि) : इंस्टीटयूट ऑफ चार्टर्ड अकाउंटेंटस ऑफ इंडिया (आइसीएआइ) ने पीएम-केयर्स और प्रधानमंत्री राष्ट्रीय राहत कोष (पीएमएनआरएफ) में 21 करोड़ रुपये के योगदान का वादा किया है। संस्था ने साझीदारों और कर्मचारियों-छात्रों के योगदान के तहत छह करोड़ में से 1.72 करोड़ रुपये की रकम पीएमएनआरएफ में जमा करा दी है। शेष 4.28 करोड़ रुपये की रकम संस्था 20 अप्रैल तक पीएम-केयर्स फंड में जमा कराएगी। इसके अलावा आइसीएआइ ने पीएम-केयर्स फंड में 15 करोड़ रुपये योगदान देने का वादा किया है।

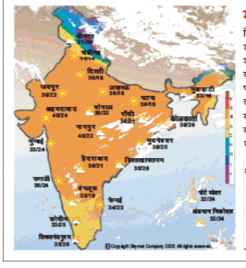

मौसम विशेष

दिल्ली, पंजाब, हरियाणा और राजस्थान में सुबह सुहावनी बनी रहेगा तथा दिन का मौसम गर्म व शुष्क रहेगा। जबकि उत्तर-पश्चिम राजस्थान का मौसम काफी गर्म रहेगा। जम्मू-कश्मीर व हिमाचल प्रदेश में आंशिक बादल छाये रहेंगे तथा एक-दो भागों में वर्षा होने की संभावना है।

18 हजार से ज्यादा लोगों की मौत हो चुकी है कि इटली में कोरोना के चलते। पोप फ्रांसिस ने पीड़ितों के इलाज में जी जान से जुटे डॉक्टरों, नर्सों और पादरियों की सराहना करते हुए उन्हें अग्रिम पंक्ति का 'संत' बताया है।

न्यूज गैलरी

वांग्लादेश के 34 रोहिंग्या शिविर लॉकडाउन

ढाका : बांग्लादेश के तटीय शहर कॉक्स बाजार में रोहिंग्या शरणार्थियों के 34 शिविरों को पूरी तरह लॉकडाउन कर दिया गया है। बांग्लादेश के शरणार्थी मामलों के आयुक्त मुहम्मद महबूब तालुकदार ने गुरुवार को इसका एलान करते हुए बताया कि इन शिविरों में अब आपात सेवा के अंतर्गत सिर्फ चिकित्सा और खाने-पीने से जुड़े कर्मियों को ही प्रवेश मिलेगा। इलाके में दाखिल होने से पहले अनुमति लेना अनिवार्य कर दिया गया है। सरकार ने इस इलाके में पहले ही सेना तैनात कर दी थी। बांग्लादेश की सरकार ने ये सख्त कदम कोरोना वायरस संक्रमण को फैलने से रोकने के लिए उठाए हैं। मुल्क में कोरोना संक्रमितों की संख्या 330 हो गई है और 20 मरीजों की मौत हो चुकी है। संक्रमण को रोकने के लिए घनी आबादी वाले इन शरणार्थी शिविरों में लोगों के आवाजाही पर पहले से सख्ती बरती जा रही थी। इन शिविरों में म्यांमार से पलायन कर आए करीब आठ लाख रोहिंग्या शरणार्थी रह रहे हैं। (आइएएनएस)

वायरस के चलते यमन में संघर्ष विराम की घोषणा

सना : दुनियाभर में फैली कोरोना वायरस महामारी को देखते हुए सऊदी अरब के नेतृत्व वाली गठबंधन सेना ने युद्ध से तबाह यमन में अगले दो हफ्ते के लिए संघर्ष विराम की घोषणा की है। संयुक्त राष्ट्र (यूएन) की अपील पर अमल करते हुए गठबंधन सेना ने गुरुवार को यह एलान किया। इस बीच, देश में कोरोना संक्रमण की शुरुआत हो गई है। शुक्रवार को पहला मामला हदरामोत प्रांत में सामने आया। मुल्क में स्वास्थ्य व्यवस्था पहले से ही खस्ताहाल है। लंबे समय से जारी जंग की वजह से लाखों लोगों के सामने खाद्यान का संकट खड़ा हो गया है। देश की राजधानी सना पर ईरान समर्थित हाउती विद्रोहियों का नियंत्रण है। हाउती विद्रोहियों के साथ पिछले पांच वर्षों से जारी जंग में एक लाख से ज्यादा लोग जान गंवा चुके हैं। संघर्ष विराम के फैसले पर हाउती विद्रोहियों की तरफ से अभी कोई प्रतिक्रिया नहीं आई है। (एजेंसियां)

चाड की सेना ने मार गिराए बोको हराम के 1000 आतंकी

जामेना : अफ्रीकी देश चाड की सेना ने दावा किया है कि बीते दस दिनों में उसने बोको हराम के करीब 1000 आतंकियों को मार गिराया। चाड की सेना के प्रवक्ता आजम बर्मादोआ ने गुरुवार को बताया कि आतंकियों के खिलाफ गत 31 मार्च को शुरू किए गए विशेष सैन्य अभियान में 52 जवान शहीद हुए और 196 सैनिक घायल हैं। इस अभियान में सेना ने चाड के अलावा नाइजर और नाइजीरिया की सीमा से लगते चाड झील क्षेत्र के दुर्गम इलाके में आतंकियों के ठिकानों को नेस्तनाबूद कर दिया। चाड ने यह सैन्य कार्रवाई पिछले महीने बोको हराम द्वारा उसकी एक सैन्य छावनी पर किए गए आतंकी हमले के जवाब में की। उस आतंकी हमले में चाड के 100 सैनिक मारे गए थे। बता दें कि पिछले एक दशक से कई अफ्रीकी देशों में इनका आतंक जारी है। (रायटर)

अमेरिका में कोरोना से गई डेढ़ करोड़ से ज्यादा की नौकरी

- पटरी से उतर रही अर्थव्यवस्था, दो लाख करोड़ डॉलर का पैकेज भी नहीं आ रहा काम
- अब तक चार लाख 70 हजार लोग संक्रमित, मरने वालों का आंकड़ा 17 हजार के करीब

वाशिंगटन, एजेंसियां : कोरोना महामारी से दुनिया के सबसे ताकतवर देश अमेरिका में हालात भयावह होते जा रहे हैं। इस देश में ना सिर्फ सबसे ज्यादा लोग संक्रमित हो रहे हैं बल्कि अर्थव्यवस्था भी पटरी से उतरती जा रही है। इस महामारी ने महज तीन हफ्तों में डेढ़ करोड़ से ज्यादा लोगों की नौकरी छीन ली। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने हालांकि भरोसा जताया है कि आने वाले महीनों में अर्थव्यवस्था पटरी पर लौट आएगी। देश में अब तक करीब चार लाख 70 हजार लोग कोरोना संक्रमण की चपेट में आ चुके हैं और लगभग 17 हजार लोंगों की जान चली गई।

महामारी के चलते 33 करोड़ की आबादी वाले अमेरिका में जनजीवन पूरी तरह ठहर गया है। 97 फीसद आबादी घरों में कैद है। कारोबार ठप पड़ा है। हवाई यातायात में 96 फीसद की कमी दर्ज की गई है। बीते तीन हफ्तों में ही करीब 1.6 करोड़ लोग बेरोजगार हो गए। इस अवधि में 66 लाख अमेरिकियों ने बेरोजगारी लाभ के लिए आवेदन किए हैं। बेरोजगारी के इन आंकड़ों से जाहिर होता है कि दो लाख करोड़ डॉलर (करीब 150 लाख करोड़ रुपये) का राहत पैकेज भी काम नहीं कर रहा। इन आंकड़ों पर हालांकि राष्ट्रपति ट्रंप ने शुक्रवार को व्हाइट हाउस में कहा, 'मुझे लगता है कि अर्थव्यवस्था बहुत बेहतर होने जा रही है। हमारे पास जबरदस्त योजना है। हम वापसी करेंगे।' ट्रंप ने यह भी बताया कि उन्होंने अपने कृषि मंत्री को कोरोना से प्रभावित अमेरिकी किसानों की तत्काल मदद करने का आदेश दिया है।

अमेरिका में कोरोना वायरस के कारण बड़ी संख्या में लोगों की नौकरियां जा रही हैं। इसके चलते फूड बैंकों पर भारी भीड़ हो रही है। सैन एंटोनियो फूड बैंक ने गुरुवार को रिकॉर्ड 10000 लोगों को भोजन मुहैया कराया। तस्वीर में लोग अपनी बारी का इंतजार कर रहे हैं। एपी

हार्ट आइलैंड पर दफनाए जाएंगे न्यूयॉर्क के शव

न्यूयार्क में कोरोना से बड़ी संख्या में हो रही मौतों के चलते शवों के अंतिम संस्कार के लिए जगह कम पड़ती जा रही है। इसलिए शवों को अब शहर के हार्ट आइलैंड पर दफनाने का फैसला किया गया है। न्यूयॉर्क के अधिकारियों ने बताया कि इस काम के लिए मजदूरों को नौकरी पर रखा गया है। इस आइलैंड पर सिर्फ नाव से ही पहुंचा जा सकता है। हाल में ऐसी खबरें आई थी कि शहर के मुर्दाघरों में भी शवों को रखने के लिए जगह नहीं बची है। न्यूयॉर्क के कब्रिस्तानों के निदेशकों का कहना है कि उन्होंने ऐसे हालात कभी नहीं देखे। शवों का अंतिम संस्कार रात में भी किया जा रहा है। राज्य के गवर्नर एंड्रयू कुओमो ने कहा कि ऐसा लगता है कि न्यूयॉर्क शहर में महामारी अपने चरम पर पहुंच गई है।

अस्पताल में भर्ती लोगों की संख्या में कमी

नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ एलर्जी एंड इंफेक्शंस डिजीज के निदेशक और कोरोना वायरस पर व्हाइट हाउस टास्क फोर्स के सदस्य एंटनी फासी ने कहा, 'हम मरने वालों की संख्या में इजाफा देख रहे हैं। लेकिन अस्पताल में भर्ती होने वाले लोगों की संख्या में कमी देखी जा रही है। इससे लगता है कि सब कुछ सही दिशा में चल रहा है।'

जज ने कैदियों को रिहा करने से किया इन्कार

अमेरिका के शिकागो शहर के एक जज ने एक जेल के कैदियों को रिहा किए जाने से इन्कार कर दिया है। शहर की कुक काउंटी जेल में करीब 4500 कैदी हैं। इस जेल के 276 कैदी कोरोना पॉजिटिव पाए गए हैं। इसी के चलते बाकी कैदियों को रिहा करने या दूसरी जगह ले जाने का प्रयास किया गया था।

अमेरिका में फंसे भारतीयों की मदद कर रहा दूतावास

ह्यूस्टन, प्रेट्र : कोरोना महामारी की रोकथाम के लिए लगाई गई तमाम पाबंदियों के चलते अमेरिका में बड़ी संख्या में भारतीय भी फंस गए हैं। ऐसे लोगों की मदद के लिए ह्यूस्टन स्थित भारतीय महावाणिज्य दूतावास आगे आया है। अप्रत्याशित संकट की घड़ी में दूतावास भारतीयों को सहयोग और दिशा-निर्देश दे रहा है।

महामारी के चलते भारत और विश्व के कई देशों के लिए होने वाली उड़ानें अचानक रद होने से हजारों की संख्या में भारतीय छात्र, कारोबारी और पर्यटक अमेरिका के कई राज्यों में फंसे हैं। ह्यूस्टन स्थित यह दूतावास अरकंसास, कोलोराडो, कंसास, लुसियाना, न्यू मैक्सिको, नेब्रास्का, ओक्लाहोमा और टेक्सास राज्य से जुड़े राजनयिक मामले देखता है। महावाणिज्य दूत असीम महाजन ने कहा, 'अप्रत्याशित आपातकालीन हालात के मद्देनजर यह दूतावास गत 14 मार्च से निरंतर पूरी सक्रियता के साथ जानकारियां और सहयोग मुहैया करा रहा है। हालांकि 14 अप्रैल तक कोई भी उड़ान भारत के लिए रवाना नहीं होने वाली है और हालात के आधार पर स्थितियां बदल सकती हैं।'

इटली और स्पेन में लॉकडाउन बढ़ाने की हो रही तैयारी

वायरस का प्रकोप ▸ कोरोना से दुनियाभर में मरने वालों का आंकड़ा एक लाख के करीब

यूरोप-अमेरिका में संक्रमण चरम पर पहुंचने के संकेत

ब्रसेल्स, एजेंसियां : कोरोना महामारी से पूरी दुनिया में जान गंवाने वालों की संख्या एक लाख के करीब पहुंच गई है। अब तक इस खतरनाक वायरस से करीब दो सौ देशों के 16 लाख से ज्यादा लोग संक्रमित हो चुके हैं। इस भयावह आंकड़े के बीच ऐसे शुरुआती संकेत मिले हैं कि यूरोप और अमेरिका में यह महामारी अब अपने चरम पर पहुंच रही है। इसके चलते महामारी से बुरी तरह प्रभावित इटली और स्पेन में लॉकडाउन की अवधि मई की शुरुआत तक बढ़ाने की तैयारी चल रही है।

इटली के प्रमुख अखबारों ने लिखा है कि प्रधानमंत्री ग्यूसेप कोंटे ने तीन मई तक लॉकडाउन बढ़ाने का मन बना लिया है। इसका एलान जल्द ही किया जा सकता है। कोरोना की रोकथाम के प्रयास में पूरे इटली में गत दस मार्च से लॉकडाउन है। यूरोप में कोरोना के कहर से सबसे ज्यादा प्रभावित इटली में मरने वालों की संख्या 18 हजार के पार पहुंच चुकी है।

कुछ इसी तरह के हालात स्पेन में भी हैं। इस यूरोपीय देश में भी मई के शुरू तक लॉकडाउन बढ़ाए जाने की संभावना है। स्पेन में हालांकि पिछले 17 दिनों में शुक्रवार को सबसे कम मौत दर्ज की गईं। सरकार ने बताया कि बीते 24 घंटों में 605 पीड़ितों ने दम तोड़ा। स्पेन में मरने वालों की संख्या 16 हजार के करीब पहुंच गई है। स्पेन के प्रधानमंत्री पेड्रो सांचेज ने शुक्रवार को कहा, 'महामारी से लगी आग अब काबू में आ रही है।' उन्होंने कहा कि कोरोना पर अंकुश लगाने के प्रयास में उठाए गए सख्त कदमों से बहुतों की जिंदगी बचाने में मदद मिली है।

ईरान में कारोबार बहाल होने से पहले 122 की मौत : ईरान के स्वास्थ्य मंत्रालय ने शुक्रवार को बताया कि मुल्क में बीते 24 घंटों में 122 और पीड़ितों ने दम तोड़ दिया। इससे मरने वालों का आंकड़ा 4200 के पास हो गया है। संक्रमण के 1,972 नए मामले पाए गए हैं। ईरान में शनिवार से निम्न खतरे वाले कारोबारों को दोबारा शुरू करने की तैयारी है। ईरान ने प्रतिबंधों से प्रभावित अपनी अर्थव्यवस्था को बचाने के लिए कारोबार बहाल करने का मन बनाया है।

फिलीपींस में 23 दिन के शिशु की मौत : फिलीपींस में 23 दिन के एक शिशु की कोरोना वायरस के चलते मौत हो गई। राजधानी मनीला से करीब 70 किलोमीटर दूर लिपा में इस नवजात की मौत हुई। फिलीपींस में कोरोना से अब तक 203 लोगों की मौत हो चुकी है और चार हजार से ज्यादा लोग संक्रमित पाए गए हैं।

पाकिस्तान में 66 की मौत : पाकिस्तान में कोरोना संक्रमितों की संख्या 4600 से ज्यादा हो गई है। देश में अब तक 66 मरीजों की मौत हो चुकी है। मुल्क में सबसे ज्यादा मामले पंजाब प्रांत में आए हैं। संक्रमण के बढ़ते मामलों को देखते पाकिस्तान सरकार ने अंतरराष्ट्रीय और घरेलू उड़ानों पर पाबंदी 21 अप्रैल तक बढ़ा दी है।

मलेशिया में 28 अप्रैल तक आवाजाही पर रोक बढ़ी : मलेशिया में कोरोना वायरस पर रोकथाम के प्रयास में आवाजाही पर रोक 28 अप्रैल तक बढ़ा दी गई है। इस एशियाई देश में गत 18 मार्च से आवाजाही पर रोक है। मलेशिया में कोरोना के 4,300 से ज्यादा मामले पाए गए हैं। 70 पीड़ितों की जान भी जा चुकी है।

अफ्रीकी देश नाइजीरिया में भी कोरोना वायरस के कारण भय और सन्नाटा पसरा हुआ है। रायटर

सबसे प्रभावित देश

देश	मौत	संक्रमित
इटली	18,279	1,43,626
अमेरिका	16,709	4,69,362
स्पेन	15,843	1,57,022
फ्रांस	12,210	1,17,749
ब्रिटेन	7,978	65,077
ईरान	4,232	68,192
चीन	3,336	81,907
बेल्जियम	3,019	26,667
जर्मनी	2,607	1,18,235
तुर्की	908	42,282

चिनफिंग ने दिया कार्यस्थलों की सुरक्षा सुनिश्चित करने का निर्देश

बीजिंग, प्रेट्र : कोरोना वायरस संक्रमण के चलते दो महीने से भी अधिक लंबे चले लॉकडाउन के बाद चीन के राष्ट्रपति शी चिनफिंग ने कार्यस्थलों पर सुरक्षा उपायों की निगरानी कड़ी करने का आह्वान किया है। इस दौरान चीन में कोविड-19 के 42 नए मामलों की पुष्टि की गई है। इनमें से 38 मामले चीन के बाहर से आने वालों के हैं। इस तरह चीन में अब तक 81,907 लोग संक्रमित हो चुके हैं।

चीनी राष्ट्रपति चिनफिंग ने शुक्रवार को अपने अधिकारियों से कहा कि लॉकडाउन खुलने के बाद से अन्य देशों से चीन लौटे चीनी नागरिकों के कारण संक्रमण के मामले बढ़ गए हैं। इसलिए निगरानी के तौर-तरीकों को और कड़ा किया जाए। सात ही कोरोना से सुरक्षा संबंधी कानूनों को और सख्ती से लागू किया जाए। उन्होने कहा कि प्रशासन को कार्यस्थल की सुरक्षा निचले स्तर तक बढ़ानी होगी। पिछले साल भी चीन ने कार्यस्थलों पर सुरक्षा उपाय बढ़ाने के सफल प्रयास किए थे। उन्होंने कहा कि वह मानते हैं कि अभी भी बहुत खतरा है और इस दिशा में काम करना बाकी है। सरकार ने होटलों में भी आने वाले सभी मेहमानों का कोरोना टेस्ट करने का आदेश दिया है।

संकट के बीच वुहान में सैन्य उद्योग लगाने का एलान

नई दिल्ली, आइएएनएस : एक तरफ जहां सारी दुनिया कोरोना वायरस महामारी के खिलाफ संघर्ष कर रही है और प्रतिदिन सैकड़ों लोगों की मौत हो रही है, वहीं दूसरी तरफ चीन महत्वाकांक्षी रक्षा अभ्यास को अंजाम देने में जुटा है। शी चिनफिंग प्रशासन ने यह भी घोषणा की है कि वह वुहान में सैन्य उद्योग लगाने जा रहा है, जो कोविड-19 महामारी का मूल केंद्र रहा है। पिछले महीने चीनी वायु सेना के विमान ने ताइवान जलडमरूमध्य को पार करते हुए रात में समुद्र के ऊपर उड़ान भरी। ताइवान ने भी एफ-16 लड़ाकू जेट विमान से इसका जवाब दिया। हालांकि, ताइवान के पास उत्तेजक सैन्य और नौसैनिक गतिविधियों का संचालन पीपुल्स लिबरेशन आर्मी के लिए कोई नई बात नहीं है, लेकिन यह पहली बार था कि उसके विमान ने रात में जलडमरूमध्य पार किया। एक अप्रैल को चीनी वायु सेना ने ताइवान के पास 36 घंटे का युद्ध अभ्यास किया।

क्लोरोक्विन भेजने पर इजरायली पीएम ने जताया मोदी का आभार

▸ भारत से भेजी गई पांच टन दवाओं की खेप

यरुशलम, प्रेट्र : इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने मलेरिया रोधी हाइड्रोक्सी क्लोरोक्विन समेत पांच टन दवाओं की खेप भेजने पर अपने भारतीय समकक्ष नरेंद्र मोदी का आभार जताया है। कोरोना संक्रमण के इलाज में प्रभावी समझी जा रही क्लोरोक्विन दवा के निर्यात को भारत ने हाल में मंजूरी दी है। इस फैसले के लिए अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और ब्राजील के राष्ट्रपति जेर बोल्सोनारो समेत कई देशों के नेताओं ने प्रधानमंत्री मोदी की तारीफ की थी।

नेतन्याहू ने गुरुवार को एक ट्वीट में कहा, 'मेरे प्रिय दोस्त भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी क्लोरोक्विन भेजने के लिए इजरायल के सभी नागरिकों की ओर से आपका धन्यवाद।' भारत से एक विमान दवाओं की खेप लेकर मंगलवार को इजरायल पहुंचा। इस खेप में क्लोरोक्विन और हाइड्रोक्सी क्लोरोक्विन दवाएं तैयार करने की सामग्री है। दुनियाभर में ये दवाएं कोरोना के संभावित उपचार के तौर पर देखी जा रही हैं। नेतन्याहू ने गत तीन अप्रैल को प्रधानमंत्री मोदी से फोन पर बातचीत में क्लोरोक्विन दवाओं की आपूर्ति का आग्रह किया था। भारत दुनिया में इन दवाओं का सबसे बड़ा उत्पादक और निर्यातक है। भारत ने हालांकि अपनी जरूरतों को ध्यान में रखते हुए इन दवाओं के निर्यात को सीमित कर दिया है। इजरायल में कोरोना संक्रमण का आंकड़ा दस हजार के करीब पहुंच गया है। 86 रोगियों की मौत भी हो चुकी है।

बेंजामिन नेतन्याहू। फाइल/रायटर

भारत में फंसे ब्रिटिश नागरिकों को लाने के लिए एक दर्जन और उड़ानें

लंदन, प्रेट्र : कोरोना वायरस संक्रमण रोकने के लिए लागू लॉकडाउन के कारण भारत में फंसे 3000 से ज्यादा ब्रिटिश नागरिकों को वापस लाने के लिए अतिरिक्त 12 चार्टर विमान भेजे जाएंगे। ब्रिटिश सरकार ने शुक्रवार को इस आशय की घोषणा की। अतिरिक्त विमानों की योजना भारत के विभिन्न हिस्सों से की गई है। इसमें पंजाब, गुजरात, बंगाल और दक्षिण भारत शामिल हैं। पिछले सप्ताह गोवा, मुंबई और नई दिल्ली से सात चार्टर उड़ानों की घोषणा की गई थी। इस तरह 19 उड़ानों से वापस लाए गए लोगों की संख्या 5000 के आसपास हो जाएगी।

दक्षिण एशिया के लिए विदेश एवं राष्ट्रमंडल कार्यालय में विदेश एवं राष्ट्रमंडल मंत्री तारिक अहमद ने कहा, 'भारत में फंसे हजारों ब्रिटिश नागरिकों को लाने के प्रयास में हम जुटे हैं। यह बड़ा अभियान है जिसमें भारत सरकार के साथ मिलकर काम करना है ताकि इन विमानों तक पहुंचने के लिए भारत के भीतर अपने लोगों को यात्रा कराई जा सके।'

आइसीयू से निकलकर आराम कर रहे हैं ब्रिटिश प्रधानमंत्री बोरिस जॉनसन

- प्रधानमंत्री कार्यालय ने कहा, जॉनसन स्वस्थ होने के शुरुआती दौर में
- अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने इसे सुखद समाचार बताया

लंदन, एजेंसियां : सघन चिकित्सा कक्ष (आइसीयू) से बाहर आने के बाद ब्रिटेन के प्रधानमंत्री बोरिस जॉनसन आराम कर रहे हैं और उनकी हालत में तेजी से सुधार हो रहा है। ब्रिटिश प्रधानमंत्री लंदन के सेंट थॉमस अस्पताल में कोरोना संक्रमण का इलाज करा रहे हैं। कोरोना वायरस पॉजिटिव आने के बाद से अस्पताल के डॉक्टर उनके स्वास्थ्य पर करीब से नजर रख रहे हैं। इस बीच, बोरिस जॉनसन के पिता स्टैनली जॉनसन ने भी अपने पुत्र को आराम करने की सलाह दी है। उन्होंने कहा कि आप इस हालत में सीधे डाउनिंग स्ट्रीट जाकर काम शुरू नहीं कर सकते हैं। काम शुरू करने से पहले कुछ दिनों का गैप लेना जरूरी है।

कोरोना वायरस के चलते अस्पताल में भर्ती होने वाले जॉनसन पहले वैश्विक नेता हैं। उनकी गैरहाजिरी में विदेश मंत्री डोमिनिक राब ब्रिटेन के प्रधानमंत्री का काम देख रहे हैं। इस दौरान ब्रिटेन की हालत तेजी से खराब हुई है।

प्रधानमंत्री के डाउनिंग स्ट्रीट कार्यालय ने कहा कि जॉनसन स्वस्थ होने के शुरुआती दौर में हैं और अभी यह स्पष्ट नहीं है कि उनको कितने दिनों तक अस्पताल में रहना पड़ेगा। लेकिन, उनकी सेहत में सुधार से पूरा ब्रिटेन खुश है। इसके अलावा अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने इसे सुखद समाचार बताया है। उल्लेखनीय है कि तेज-तर्रार माने जाने वाले जॉनसन की बीमारी ने पूरे देश को हिला दिया था।

जॉनसन की गर्भवती मंगेतर, जिनमें कोरोना वायरस के लक्षण पाए गए थे, ने स्वास्थ्य क्षेत्र से जुड़े कार्यकर्ताओं के समर्थन में एक इंद्रधनुष की तस्वीर ट्वीट की है। इसके अलावा उन्होंने ताली बजाने की इमोजी भी ट्वीट की है।

इस बीच, सरकार इस बात पर विचार कर रही है कि लॉकडाउन को कब खत्म किया जाए। हालांकि, राब ने कहा है कि इस समय कोई फैसला लेना जल्दबाजी होगी, क्योंकि ब्रिटेन महामारी के शीर्ष पर नहीं पहुंचा है। सरकार ने कहा है कि इस बात पर अगले सप्ताह विचार करना बेहतर होगा कि क्या लॉकडाउन से कोरोना वायरस संक्रमितों की संख्या और अस्पताल आने वाले कम हुए हैं।

बोरिस जॉनसन। फाइल/एएफपी

सिंगापुर में 250 भारतीय कोरोना की चपेट में

सिंगापुर, प्रेट्र : सिंगापुर में भारतीय उच्चायुक्त जावेद अशरफ ने शुक्रवार को बताया कि यहां अब तक 250 भारतीय नागरिक कोरोना पॉजिटिव पाए गए हैं। अशरफ के अनुसार, इनमें में आधी संख्या उन लोगों की है जो विदेशी कामगारों की डॉरमिट्री में रह रहे थे। सिंगापुर में कोरोना से बचाव के लिए बड़ी संख्या में भारतीयों समेत विदेशी कामगारों को डॉरमिट्री में ही क्वारंटाइन किया गया है। इन जगहों से अब तक 460 लोगों के कोरोना संक्रमित होने की पुष्टि हो चुकी है। गुरुवार को सिंगापुर में 287 नए मामले सामने आए, जिनमें 200 डॉरमिट्री में रहने वाले लोग हैं। देश में कोरोना के अब तक 1910 मामले सामने आए हैं और छह की मौत हो चुकी है।

किया आगाह

संयुक्त राष्ट्र प्रमुख ने सुरक्षा परिषद को चेताया, सभी सदस्य देशों से की एकता बनाए रखने की अपील

आतंकी कोरोना को बना सकते हैं हथियार

संयुक्त राष्ट्र, एजेंसियां : संयुक्त राष्ट्र के महासचिव एंतोनियो गुतेरस ने कहा कि कोविड-19 की वैश्विक महामारी ने एक झलक दिखा दी है कि किस तरह से एक जैविक आतंकी हमला पूरे विश्व को तबाह कर सकता है। उन्होंने सुरक्षा परिषद के अमेरिका, चीन समेत सभी 15 सदस्य देशों से एकता बनाए रखने को कहा है।

संयुक्त राष्ट्र प्रमुख गुतेरस ने शुक्रवार को कोविड-19 पर संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (यूएनएससी) की पहली बैठक में ऐसे आतंकी संगठनों के प्रति आगाह करते हुए कहा कि कोरोना वायरस के संक्रमण के खिलाफ लड़ाई एक पीढ़ी की लड़ाई है। डोमिनिक रिपब्लिक की अध्यक्षता में वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिये हुए बैठक में उन्होंने कहा कि आतंकी संगठनों को अगर इस वैश्विक महामारी के घातक विषाणु मिल गए तो वो इसका इस्तेमाल जैविक आतंकी हमले में कर सकते हैं। आतंकी संगठनों को महामारी ऐसा ही एक अवसर लग सकता है। जबकि पूरे विश्व में सरकारों का पूरा ध्यान कोरोना वायरस से निपटने में ही लगा है।

एंतोनियो गुतेरस। फाइल

दुनिया के लिए परीक्षा की घड़ी

एंतोनियो गुतेरस ने कहा कि पूरी दुनिया एक बेहद मुश्किल परीक्षा के दौर से गुजर रही है। कोविड-19 अपने आप में पहला और सबसे बड़ा स्वास्थ्य संकट है। यह महामारी अंतरराष्ट्रीय शांति को बनाए रखने और सुरक्षा के लिए भी बड़ा खतरा है। इससे सामाजिक अस्थिरता और हिंसा के हालात भी बन रहे हैं। इन परिस्थितियों में इस वैश्विक महामारी से मुकाबला करना और भी मुश्किल हो जाएगा।

प्रत्येक देश भयावह मंजर का सामना कर रहा है

उन्होंने कहा कि हर देश कोविड-19 के बेहद भयावह मंजर का सामना कर रहा है। दसों हजार जानें जा चुकी हैं। परिवार टूट गए हैं। अस्पताल इस बेहद संक्रामक जानलेवा मरीजों से पटे पड़े हैं। साथ ही चिकित्सा सेवा, सुरक्षा और अन्य जरूरी सेवाओं के लोग लगातार दिन-रात काम करते थकते जा रहे हैं। हम सभी इस महामारी से मिलने वाले सदमे से उबर नहीं पा रहे कि लोगों की नौकरियां जा रही हैं और उद्योग धंधे बंद हो रहे हैं।

'कोविड-19 की मृत्यु दर इन्फ्लुएंजा से 10 गुना अधिक है'

जेनेवा, आइएएनएस : विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के महानिदेशक टेड्रोस एडहैनम घेब्रेयसस ने कहा है कि कोविड-19 की मृत्यु दर का अनुमान इन्फ्लुएंजा की तुलना में 10 गुना अधिक है। समाचार एजेंसी शिन्हुआ की रिपोर्ट के अनुसार, जेनेवा से कोविड-19 पर एक मिशन ब्रीफिंग के दौरान डब्ल्यूएचओ प्रमुख ने कहा कि इस वायरस से अब तक 13 लाख से अधिक लोग संक्रमित हो चुके हैं और लगभग 80,000 लोगों की जान जा चुकी है।

उन्होंने कहा कि यह स्वास्थ्य संकट से अधिक है। इससे मुकाबला करने के लिए पूरी सरकार को और पूरे समाज को मिलकर काम करने की आवश्यकता है। दुनिया में और तबाही मचाने के लिए अब यह गरीब और कमजोर देशों में जा सकता है। उन्होंने कहा कि बिना मदद और समुचित कार्रवाई इसे रोका नहीं जा सकता है।

दक्षिण कोरिया के महामारी केंद्र देगू में नया मामला नहीं

▸ देशभर में नए मामलों में दर्ज की गई रिकॉर्ड गिरावट

सियोल, रायटर : दक्षिण कोरिया में कोरोना महामारी का केंद्र बने देगू शहर में करीब दो माह बाद पहली बार कोई नया मामला सामने नहीं आया है। साथ ही देशभर में नए मामलों में रिकॉर्ड कमी दर्ज की गई है। महामारी के शुरुआती दौर में चीन के बाद संक्रमण के सबसे ज्यादा मामले दक्षिण कोरिया में ही सामने आए थे। गत फरवरी में देगू के एक चर्च से ही दक्षिण कोरिया में संक्रमण की शुरुआत हुई थी और बाद में यह महामारी पूरे देश में फैल गई। देश के कुल 10,450 मामलों में से 6,807 देगू में ही पाए गए थे।

दक्षिण कोरिया के रोग नियंत्रण और रोकथाम केंद्र के अनुसार, शुक्रवार को देश में 27 नए मामलों की पुष्टि हुई। यह संख्या भी रोजाना के नए मामलों में सबसे कम है। फरवरी के अंत में यहां हर दिन 900 से ज्यादा नए मामले सामने आ रहे थे। देश में हुई कुल 208 मौतों में से 142 अकेले देगू में हुई हैं। देगू राजधानी सियोल से करीब 300 किलोमीटर दूर है। दक्षिण कोरिया में उठाए गए सख्त कदमों के चलते कोरोना वायरस पर अंकुश पाने में काफी सफलता मिली है। संक्रमण की रोकथाम के लिए बड़े पैमाने पर लोगों की जांच की गई और सोशल डिस्टेंसिंग के उपाए अपनाए गए।

कोरोना रोगियों से पहले कराया गया मतदान : कोरोना महामारी के प्रकोप के बीच दक्षिण कोरिया में 15 अप्रैल को होने वाले संसदीय चुनाव से पहले शुक्रवार को कोरोना संक्रमितों से मतदान कराया गया। तीन हजार से ज्यादा कोरोना रोगियों और 900 चिकित्सा कर्मियों के लिए आठ मतदान केंद्र बनाए गए थे। चुनाव में हर वोटर के मताधिकार को सुनिश्चित करने के लिए यह कदम उठाया गया।

मेरे करियर की 2005 एशेज सीरीज सबसे ज्यादा रोमांचक और शानदार सीरीज रही।
— शेन वॉर्न, पूर्व ऑस्ट्रेलियाई स्पिनर

5,000 लोगों की मदद करेंगे सचिन तेंदुलकर

मुंबई, आइएएनएस : भारत के पूर्व बल्लेबाज सचिन तेंदुलकर ने कोरोना वायरस के कारण मौजूदा स्थिति को देखते हुए एक एनजीओ के माध्यम से शिवाजी नगर और गोवंदी एरिया के 5,000 लोगों को महीने भर तक मदद करने का फैसला लिया है। अपनालय नाम के एनजीओ ने तेंदुलकर को धन्यवाद देते हुए ट्वीट किया है कि अपनालय की मदद करने के लिए आगे आने के लिए धन्यवाद सचिन।

एक नजर में

हंगरी में फंसा भारतीय शतरंज खिलाड़ी

चेन्नई : हंगरी में इंटरनेशनल मास्टर्स खेलने गए 14 वर्ष के युवा भारतीय शतरंज खिलाड़ी लियोन मेनडोंका 18 मार्च से वहां फंसे हुए हैं। मेनडोंका ने कहा कि हम यहां पर सुरक्षित हैं और बुडापेस्ट में एक अपार्टमेंट में रह रहे हैं। हमें लॉकडाउन खुलने का इंतजार है, जिससे हम देश लौट सकें। (प्रेट्र)

ओलंपियन की पूरी मदद करेगा खेल मंत्रालय

नई दिल्ली : खेल मंत्री किरण रिजिजू ने अमेरिका में फंसे पूर्व ओलंपियन और 1975 विश्व कप विजेता हॉकी टीम के सदस्य अशोक दीवान की पूरी मदद करने की बात कही है। वह इस समय सेन फ्रांसिस्को में फंसे हुए हैं, जहां उनको स्वास्थ्य संबंधी दिक्कतों से गुजरना पड़ रहा है। (आइएएनएस)

टोक्यो ओलंपिक पर संशय

टोक्यो : जापान में कोरोना वायरस फैलने लगा है और टोक्यो गेम्स के सीईओ ने शुक्रवार को कहा कि कोई गारंटी नहीं है कि स्थगित हुए ओलंपिक 2021 में भी हो पाएं। जापान के प्रधान मंत्री एबी शिंजो ने इसी सप्ताह देश में इमरजेंसी घोषित कर दी थी। सीईओ तोशिरो मुतो ने कहा कि मुझे नहीं लगता कि कोई भी यह कह पाने में सक्षम है कि अगले वर्ष जुलाई तक स्थिति सामान्य हो जाएगी या नहीं। हम इस समय साफ उत्तर देने की स्थिति में नहीं है। (एपी)

बुंडिसलीगा में चमका भारतीय मूल का खिलाड़ी

कोलकाता : बुंडिसलीगा में भारतीय मूल के पहले खिलाड़ी सर्वप्रीत सिंह मैदान से बाहर भी अपना जलवा बिखेरने में कामयाब हो रहे हैं। एफसी बायर्न म्यूनिख के मिडफील्डर को फुटबॉल मैनेजर 20 गेम में सर्वश्रेष्ठ उभरता हुआ खिलाड़ी चुना गया। यह मुकाबला बुंडिसलीगा के युवा खिलाड़ियों और ग्लोबल फुटबॉल के खिलाड़ियों के बीच खेला गया था। बुंडिसलीगा में कई युवा खिलाड़ी सामने आ रहे हैं। ऐसे में जर्मन फुटबॉल ने कई नए खिलाड़ियों को खोजने के लिए एफएम-20 का सहारा लिया है। न्यूजीलैंड के सर्वप्रीत ने मैन ऑफ द मैच का पुरस्कार जीता और उन्होंने 9.0 प्लेयर रैंकिंग के साथ समाप्ति की। उनकी टीम ने गियो रेयना ने टीम जोशुआ जिरकी को 4-2 से हराया। (एपी)

समय का सही उपयोग कर रहे एथलीट

एथलीटों ने खोज लिया समय बिताने का तरीका, कुछ कर रहे ऑनलाइन क्लास तो कुछ बना रहे खाना

जागरण न्यूज नेटवर्क, नई दिल्ली : अब जब लॉकडाउन को लंबा समय बीत गया है, तो खिलाड़ियों ने खुद को फिट रखने और समय बिताने का इलाज खोज लिया है। कोई एथलीट बच्चों को ट्रेनिंग दे रहा है, तो कोई रोबोट के संग अभ्यास कर रहा है। वहीं कई एथलीट खाना बनाना सीखकर कुछ नया करने का लुत्फ उठा रहा है।

बटलर कर रहे पत्नी के साथ अभ्यास: इंग्लैंड क्रिकेट टीम के खिलाड़ी जोस बटलर भी पत्नी लुइस के साथ अभ्यास कर रहे हैं, जो एक पेशेवर ट्रेनर भी हैं। कभी-कभी वह हेलमेट, पैड्स और बल्ले के साथ भी एक्सरसाइज करते हैं।

स्क्वॉश खिलाड़ी घोषाल बने पोषण विशेषज्ञ

सौरव घोषाल • ट्विटर

नई दिल्ली : भारतीय स्क्वॉश खिलाड़ी सौरव घोषाल न्यूट्रीशियन का कोर्स कर रहे हैं। स्क्वॉश में बेहतरीन फिटनेस की जरूरत होती है और घोषाल खुद को फिट रखना चाहते हैं। घोषाल ने कहा कि मैंने फैसला किया कि एक मान्यता प्राप्त न्यूट्रीशियन का कोर्स करूं। फिलहाल मैं अभी प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेटस, फैट, मिनरल, विटामिन की शुरुआती जानकारियां जान पाया हूं।

साइकिल चला रहे टाइगर वुड्स

टाइगर वुड्स • ट्विटर

दिग्गज अमेरिकन गोल्फर टाइगर वुड्स ने कहा कि वह से वापसी के लिए मेहनत कर रहे हैं और साइकिल चला रहे हैं। उन्होंने कहा कि अगर इस सप्ताह मास्टर्स कप होता तो मैं उसमें खेलने के लिए तैयार था। मैं पहले से बहुत बेहतर महसूस कर रहा हूं। मैं सकारात्मकता महसूस कर रहा हूं।

रोबोट के साथ अभ्यास करते साथियान • ट्विटर

रोबोट के साथ कर रहे अभ्यास साथियान

नई दिल्ली : कोरोना के कारण खिलाड़ियों का अभ्यास कार्यक्रम भी गड़बड़ा गया है। ऐसे में भारत के नंबर-1 टेबल टेनिस खिलाड़ी जी. साथियान ने अलग ही तरीका निकाला है। शारीरिक दूरी के कारण अभ्यास के लिए उनके पास कोई प्रतिद्वंद्वी नहीं है लेकिन एक रोबोट के साथ वह अभ्यास कर रहे हैं। साथियान चेन्नई में अपने घर पर सुबह एक्सरसाइज करते हैं और फिर रोबोट के साथ अभ्यास में जुट जाते हैं। यह रोबोट बटरफ्लाई एमिकस प्राइम है जो टेबल टेनिस खिलाड़ियों को ट्रेन करने के लिए डिजाइन किया गया है। यह पोर्टेबल रोबोट है जो एक मिनट में 120 बार बॉल डिलीवर करने की क्षमता रखता है। वह स्पिन, स्पीड और फ्रीक्वेंसी को भी बदल सकता है।

अतानु दास के लिए दीपिका सीख रहीं खाना पकाना

अतानु दास और दीपिका • ट्विटर

रांची : भारतीय तीरंदाज दीपिका रेंज पर निशाना लगाने का अभ्यास नहीं कर सकती इसलिए वह मंगेतर और साथी अंतरराष्ट्रीय तीरंदाज अतानु दास के लिए चिकन पकाना सीख रही हैं। दो साल पहले दोनों की सगाई हुई थी और शादी से पहले दोनों टोक्यो ओलंपिक पर ध्यान लगाना चाहते थे, लेकिन खेल महाकुंभ 2021 तक स्थगित हो गए। दीपिका ने कहा कि उन्हें चावल और दाल पकाना आता था। अब मांसाहारी (विशेषकर चिकन) खाना बनाना सीख रही हूं। मैं दिन की शुरूआत प्राणायम से करती हूं और फिर 45 मिनट तक अभ्यास करती हूं। नाश्ते के बाद खाना पकाना सीखती हूं। हमने हाल में पांच मीटर की रेंज बना ली है जिसमें दोनों दोपहर में करीब दो घंटे तक अभ्यास करते हैं।

ऑनलाइन फिटनेस क्लास दे रहे खिलाड़ी

ट्रैक से उतरकर लिविंग रूम में रहने को मजबूर विश्व के कई एथलीट लोगों को स्वस्थ रखने के लिए ऑनलाइन फिटनेस क्लास दे रहे हैं। इससे दूसरों को फिट रहने में मदद मिल रही है। पूर्व मैराथन विश्व रिकॉर्ड धारक और विश्व एथलेटिक्स के लिए ऑनलाइन क्लास लेने की तैयारी कर रहीं पाउला रेडक्लिफ ने कहा कि इस समय परिजन और उनके बच्चों पर भार है। ऐसे में यह सिर्फ सभी को एक्टिव रखने का एक प्रयास है। उन्होंने हाल ही में रनिंग इवेंट आयोजित किया था। इस वक्त क्योंकि सभी घर के अंदर है तो उन्होंने ऑनलाइन क्लास देने की तैयारी की है।

रांची में अपने फार्महाउस में घास काटते महेंद्र सिंह धौनी • सौजन्य सीएसके

बीसीसीआइ ने बिना कटौती के किया भुगतान

क्रिकेट डायरी

जागरण न्यूज नेटवर्क, नई दिल्ली: भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआइ) ने केंद्रीय अनुबंधित खिलाड़ियों की तिमाही बकाया राशि का भुगतान कर दिया है। साथ ही बोर्ड ने कहा है कि कोविड-19 के कारण बनी अनिश्चितता के बावजूद वह किसी को परेशान नहीं होने देगा। कोरोना वायरस के कारण वैश्विक अर्थव्यवस्था पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा है। इंग्लैंड और ऑस्ट्रेलिया जैसे प्रमुख क्रिकेट बोर्ड ने खिलाड़ियों के वेतन में कटौती के संकेत दिए हैं।

बीसीसीआइ के एक अधिकारी ने कहा कि लॉकडाउन 24 मार्च को घोषित किया गया और इसके बावजूद बीसीसीआइ किसी भी तरह की स्थिति के लिए तैयार था। बोर्ड ने अपने खिलाड़ियों की केंद्रीय अनुबंध भुगतान की तिमाही किश्त चुका दी है। उन्होंने कहा कि भारत या भारत-ए की तरफ से खेलने वाले सभी खिलाड़ियों का मैच शुल्क ये सभी बकाए वित्तीय वर्ष के आखिर तक चुका दिए गए हैं। इंग्लैंड और ऑस्ट्रेलिया के खिलाड़ियों ने खुले तौर पर स्वीकार किया है कि वे वेतन में कटौती के लिए तैयार हैं। ऑस्ट्रेलिया में केंद्रीय अनुबंध की घोषणा टाल दी गई है जबकि इंग्लैंड के कप्तान जो रूट ने यॉर्कशायर के अपने साथियों सहित सरकारी अवकाश पर जाने के लिए आवेदन किया है। इसके तहत ब्रिटिश सरकार वेतन का 80 प्रतिशत का भुगतान करती है।

एंड्रयू फ्लिंटॉफ के ओवर को याद कर पोंटिंग ने की तारीफ: ऑस्ट्रेलिया के पूर्व कप्तान रिकी पोंटिंग ने एंड्रयू फ्लिंटॉफ के एक ओवर को अपने करियर का सबसे सर्वश्रेष्ठ ओवर करार दिया है। 2005 की एशेज सीरीज के एजबेस्टन टेस्ट में फ्लिंटॉफ ने पोंटिंग को काफी परेशान किया था। इस ओवर में पोंटिंग बिलकुल भी सहज नजर नहीं आ रहे थे।

मेरे समय में तेंदुलकर थे सर्वश्रेष्ठ : क्लार्क

मेलबर्न : पूर्व ऑस्ट्रेलियाई कप्तान माइकल क्लार्क का मानना है कि विराट कोहली की बड़े शतक जमाने के प्रति दृढ़ इच्छा सचिन तेंदुलकर जैसी है, जो अपने जमाने के सबसे संपूर्ण बल्लेबाज थे। क्लार्क ने कहा कि उन्हें याद नहीं आता कि जब वह खेला करते थे तब तेंदुलकर की तरह कोई दूसरा संपूर्ण बल्लेबाज था। उन्होंने कहा कि तेंदुलकर को आउट करना मुश्किल था और उनकी तकनीक में कोई खामी नहीं थी। मैंने जितने बल्लेबाज देखे उनमें संभवत: वह (तेंदुलकर) तकनीकी तौर पर सर्वश्रेष्ठ थे। उन्हें आउट करना बहुत मुश्किल था।

बिना दर्शकों के आइपीएल नहीं : मदनलाल

आइपीएल डायरी

जागरण न्यूज नेटवर्क, नई दिल्ली: 1983 विश्व कप टीम के सदस्य रहे मदन लाल ने कहा है कि आइपीएल के 13वें सत्र को लेकर फैसला तभी लिया जा सकता है जब कोरोना वायरस से स्थिति ठीक हो जाएगी।

आइपीएल की शुरुआत 29 मार्च को होनी थी लेकिन कोरोना वायरस के कारण इसे 15 अप्रैल तक के लिए टाल दिया गया है। इस समय कोविड-19 के कारण जो स्थिति है उसे देखकर यह कहना मुश्किल होगा कि इस साल आइपीएल हो पाए। मदनलाल ने कहा कि एक बार कोरोना वायरस चला जाए तो क्रिकेट निश्चित तौर पर हो सकता है क्योंकि यह काफी प्रसिद्ध खेल है जिसे लगभग सभी लोग पसंद करते हैं। यहां तक की खिलाड़ी भी दर्शकों के सामने खेलना पसंद करते हैं और यह तभी हो सकता है जब स्थिति ठीक हो जाए। मदनलाल ने कहा कि खाली स्टैंड में आइपीएल खेलने का कोई मतलब नहीं हैं। यह सिर्फ खिलाड़ियों और प्रशंसकों की बात नहीं है। यह उन लोगों की भी बात है जो प्रसारण आदि जैसे कामों के लिए सफर करते हैं। स्थिति सुधर जाए तो बाकी सीरीज भी हो सकती हैं और बीसीसीआइ समय की भरपाई कर सकती है।

बंद स्टेडियम में आइपीएल खेलने को तैयार हैं कमिंस

मेलबर्न : आइपीएल के सबसे महंगे विदेशी खिलाड़ी पैट कमिंस ने कहा कि वह दर्शकों के बिना भी इस टी-20 टूर्नामेंट में खेलने के इच्छुक हैं क्योंकि इससे कोविड-19 महामारी से परेशान दुनिया भर के लोगों में परिस्थितियां सामान्य होने की भावना पैदा होंगी। कमिंस से पूछा गया कि क्या वह बिना दर्शकों के मैचों का आयोजन करने का समर्थन करेंगे, उन्होंने कहा कि निश्चित तौर पर। मैं उस हर चीज का समर्थन करूंगा जिसमें इन बड़े टूर्नामेंट का सुरक्षित आयोजन संभव हो। कमिंस को कोलकाता नाइटराइडर्स ने 15.5 करोड़ रुपये में खरीदा था जिससे वह लीग के सबसे महंगे विदेशी खिलाड़ी बन गए थे। उन्होंने कहा कि प्रत्येक गेंद पर चाहे छक्का पड़े या विकेट मिले जो शोर उठता है, वहां जो माहौल बनता है उसी को देखकर हमें भारत में खेलना पसंद है।

इंटर मिलान में जाने से मेसी का इन्कार

फुटबॉल डायरी

ब्यूनस आयर्स, आइएएनएस : स्पेन के फुटबॉल क्लब बार्सिलोना के स्टार खिलाड़ी लियोन मेसी ने इटली के क्लब इंटर मिलान जाने की खबरों को खारिज कर दिया है। अर्जेंटीना के इस स्टार खिलाड़ी ने साथ ही अपने देश के क्लब नेवेल में जाने की खबरों को भी गलत बताया है।

मेसी ने इंस्टाग्राम में कहा कि नेवेल ओल्ड ब्वॉयज को लेकर कुछ सप्ताह पहले जो कहा जा रहा था वह भी गलत है। शुक्र है कि किसी ने यह बात नहीं मानी। मेसी ने साथ ही ब्राजील के रोनाल्डिन्हो की जमानत में मदद करने की बात को भी नकार दिया है। रोनाल्डिन्हो को हाल ही में पैराग्वे की जेल से जमानत पर रिहाई मिली है।

लियोन मेसी • फाइल फोटो, प्रेट्र

बेलारूस में चल रही फुटबॉल लीग: यूरोप में बेलारूस अकेला ऐसा देश है जहां पर अब भी दर्शकों की मौजूदगी में फुटबॉल लीग चल रही है। हालांकि डर के कारण लोगों की संख्या स्टेडियम में कम ही है। ऐसे में लीग की मौजूदा चैंपियन टीम डेनामो ब्रेस्ट ने दर्शकों की दूरी बनाने के बाद स्टैंड में पुतले रख दिए हैं, जिनके सामने खिलाड़ी ऑनलाइन टिक खरीदे आभासी प्रशंसकों के पुतलों के आगे गोल या जीत का जश्न मना रहे हैं।

टूर्नामेंट शुरू करना गैरजिम्मेदाराना : इनफेंटिनो

ज्यूरिख : फीफा अध्यक्ष गियानी इनफेंटिनो ने कहा है कि बिना 100 फीसद सुरक्षा के इस समय किसी भी टूर्नामेंट को शुरू करना गैरजिम्मेदाराना होगा। हमारी प्राथमिकता, हमारे सिद्धांत, जो लोग हमारे टूर्नामेंट में काम करते हैं साथ ही हम जिन लोगों को बुलाते हैं उनका स्वास्थ्य पहले आता है। मैं कितना भी इस पर जोर दूंगा वो काफी नहीं होगा। एक मैच के लिए इंसानों की जान जोखिम में डालना बहुत बड़ा जोखिम है। हर किसी को यह बात साफ होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि अगर स्थिति 100 फीसद तक ठीक नहीं होती है तो इस स्थिति में टूर्नामेंट शुरू करना गैरजिम्मेदाराना होगा।

चैरेटी इवेंट में भाग लेंगे रीयल मैड्रिड और लिवरपूल

लंदन : रीयल मैड्रिड और लिवरपूल के खिलाड़ी ईए स्पोर्टस फीफा 20 स्टेय और प्ले कप में भाग लेंगे। यह ऑनलाइन चैरेटी इवेंट बुधवार से शुरू हुआ और 19 अप्रैल तक चलेगा। इसमें अजाक्स, एस रोमा, चेल्सी, एफसी कोपेनहागेन, लिवरपूल की टीम भाग लेंगी। यूरोप सहित पूरी दुनिया में इस वक्त कोरोना वायरस के कारण फुटबॉल नहीं खेला जा रहा है।

राष्ट्रीय

नदी पुत्र रमनकांत बने हिंडन नदी वाटरकीपर

जागरण संवाददाता, गाजियाबाद

मेहनत का सम्मान

हिंडन के पुनर्जीवन में अमेरिका का अंतरराष्ट्रीय संगठन करेगा मदद

पर्यावरण और हिंडन नदी के संरक्षण की दिशा में सराहनीय कार्य करने वाले नीर फाउंडेशन के अध्यक्ष नदी पुत्र रमनकांत त्यागी को अमेरिकी संस्था ने हिंडन नदी वाटरकीपर चुना है। अब उनके साथ मिलकर हिंडन नदी के सुधार और संरक्षण में अमेरिका का अंतरराष्ट्रीय संगठन वाटरकीपर एलाइंस मदद करेगा। 2006 से लगातार जल, पर्यावरण और नदी संरक्षण और सुधार के लिए प्रयासरत रमनकांत त्यागी की मेहनत रंग ला रही है। उनके पर्यावरण एवं जल संरक्षण में विशेष योगदान के लिए उन्हें अंतरराष्ट्रीय स्तर के अवार्डों से नवाजा ही नहीं जा रहा, बल्कि मदद के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर की संस्थाएं आगे भी आने लगी हैं। एलाइंस ने रमनकांत के नदी सुधार मॉडल को प्रमाणिकता भी दी है।

रमनकांत ने बताया कि वाटरकीपर चुने जाने की जानकारी एलाइंस की रेक्यूरमेंट निदेशक शैरोन खान और दक्षिण एशिया प्रभारी मिन जिंग ने दी है। उन्होंने जनता से भी इस अभियान में जुटने का आह्वान किया। यह काम कोरोना वायरस से जंग जीतने के बाद किए जाएंगे।

नदी पुत्र रमनकांत त्यागी। सौजन्य : नीर फाउंडेशन

हिंडन नदी पुनर्जीवन के लिए किए प्रयास : नीर फाउंडेशन के अध्यक्ष रमनकांत त्यागी ने बताया कि हिंडन नदी के लिए 2006 में प्रयास किए गए। उस समय नदी का कोई नक्शा नहीं था, संसाधन नहीं थे। केवल नदी में काला पानी बहता दिख रहा था। नदी को पूरा समझने के लिए तीन बार नदी की पूरी यात्रा की। जमीनी अध्ययन के आधार पर हिंडन नदी और उसकी सहायक नदियों का एक नक्शा बनाया। नदी को देखकर जो समझ बनी उसी के आधार पर पुनर्जीवन के लिए एक मॉडल बनाया। इस पर 2006 में ही अध्ययन भी पूरा किया। उनका कहना है अभियान में उनके साथ पर्यावरण प्रेमी और सरकारी अधिकारियों ने भी प्रयास किया। 2018 में 22 अप्रैल से 22 मई तक नदी की सहायक नदियों को गंदगी मुक्त करने के लिए अभियान चलाया गया। हिंडन नदी के किनारे लगातार रसायन मुक्त कृषि के लिए अभियान चलाकर जागरूक किया जा रहा है। इसी क्रम में अब हिंडन नदी सुधार में वाटरकीपर एलाइंस मदद करेगा।

महानिर्वाणी अखाड़े के महंत प्रकाशपुरी का निधन

नईदुनिया, उज्जैन: मध्य प्रदेश के उज्जैन में विश्व प्रसिद्ध ज्योतिर्लिंग महाकाल मंदिर स्थित महानिर्वाणी अखाड़े के महंत प्रकाशपुरी महाराज का शुक्रवार तड़के हरियाणा के कलाबड़ यमुनानगर के राधामाई मठ में निधन हो गया। सुबह करीब 11 बजे साधु-संतों ने उन्हें समाधि दी। महंत प्रकाशपुरी महाराज महाकाल की महंत गादी पर करीब 40 साल तक विराजित रहे। करीब डेढ़ माह पहले ही वे महाकाल मंदिर को छोड़कर राधामाई मठ में विश्राम के लिए गए थे।

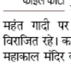

महंत प्रकाशपुरी फाइल फोटो

महाराज के शिष्य परमहंस स्वामी अवधेशपुरी महाराज ने बताया कि महंत प्रकाशपुरी ने साधक के रूप में जीवन व्यतीत किया। उन्होंने 40 साल तक भगवान महाकाल की सेवा की। मंदिर प्रबंध समिति की ओर से प्रशासक एसएस रावत ने शोक संवेदना प्रकट की।

26 हस्तियों को मिलेगा हिंदी सेवा सम्मान

जागरण संवाददाता, आगरा : केंद्रीय हिंदी संस्थान ने 26 हिंदी सेवियों को सम्मानित करने का निर्णय किया है। संस्थान के निदेशक प्रो. नंद किशोर पांडेय ने शुक्रवार को 2017 के लिए 26 नामों की घोषणा की। पांडेय ने बताया कि राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी के विकास, प्रचार-प्रसार व प्रोत्साहन के लिए संस्थान द्वारा हर साल हिंदी सेवी सम्मान दिए जाते हैं। इसके तहत बारह श्रेणियों में 26 हिंदी सेवी विद्वानों को सम्मानित किया जाता है। अभी केवल नामों की घोषणा की गई है। पुरस्कार प्रदान करने की तिथि तय नहीं हुई है।

इन्हें मिलेगा सम्मान

1. हिंदी प्रचार-प्रसार एवं हिंदी प्रशिक्षण के क्षेत्र के लिए गंगा शरण सिंह पुरस्कार : राधा गोविंद थुंगाम (मणिपुर), डॉ. टीजी प्रभाशंकर प्रेमी (बेंगलुरू), डॉ. विजय कुमार मोहंती (ओडिशा) और प्रो. मनमोहन सहगल पंजाब
2. गणेश शंकर विद्यार्थी पुरस्कार : कोलकाता के डॉ. कृष्ण बिहारी मिश्र व दिल्ली के केजी सुरेश
3. विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान व अभियांत्रिकी के क्षेत्र में आत्माराम पुरस्कार : उदयपुर के प्रो. बद्रीलाल और लखनऊ के डॉ. सूर्यकांत
4. सृजनात्मक एवं आलोचनात्मक क्षेत्र में लेखन कार्य के लिए सुब्रहमण्य भारती पुरस्कार : जयपुर के डॉ. रत्न कुमार सांभरिया और लखनऊ के प्रो. सदानंद प्रसाद गुप्त
5. महापंडित राहुल सांकृत्यायन पुरस्कार : भोपाल के डॉ. विनय षडंगी राजराम व जयपुर के डॉ. मथुरेश नंदन कुलश्रेष्ठ
6. विदेशों में हिंदी के प्रचार प्रसार एवं लेखन के लिए डॉ. जॉर्ज ग्रियर्सन पुरस्कार : मॉरिशस के उदयनारायण गंगू व उज्बेकिस्तान के आमिर फैजुल्लाह
7. विदेशों में हिंदी के प्रचार-प्रसार व लेखन के लिए अप्रवासी भारतीयों को दिए जाने वाला पद्मभूषण डॉ. मोटुरि सत्यनारायण पुरस्कार : इंग्लैंड की दिव्या माथुर व डेनमार्क की अर्चना पेन्यूली
8. सरदार बल्लभ भाई पटेल पुरस्कार : कानपुर के डॉ. हरेश प्रताप सिंह व नई दिल्ली के डा. शंकर शरण
9. मानविकी क्षेत्र एवं कला, संस्कृति एवं विचार की भारतीय चिंतन परंपरा में लेखन कार्य के लिए दीनदयाल उपाध्याय पुरस्कार : दिल्ली के डॉ. महेश चंद्र शर्मा व मध्यप्रदेश के डॉ. श्रीराम परिहार
10. भारतविद्या के लिए स्वामी विवेकानंद पुरस्कार : उप्र के प्रो. ईश्वर शरण विश्वकर्मा व उत्तराखंड के प्रो. योगेंद्र नाथ शर्मा अरुण
11. शिक्षाशास्त्र एवं प्रबंधन में हिंदी माध्यम से लेखन कार्य के लिए पंडित मदन मोहन मालवीय पुरस्कार : अहमदाबाद की इंदुमती व इंदौर के प्रो. प्रभु नारायण मिश्र
12. विधि एवं लोक प्रशासन के क्षेत्र में हिंदी भाषा में उल्लेखनीय लेखन कार्य के लिए राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन पुरस्कार : जौनपुर के डॉ. राम अवतार सिंह व जयपुर के डॉ. रमेश कुमार अरोड़ा।

भारतीय जवानों ने तोपों और मोर्टार का किया इस्तेमाल

प्रथम पृष्ठ से आगे

भारतीय जवानों ने भी तोपखाने और मोर्टार का इस्तेमाल किया। इसमें पाकिस्तानी सेना की दोमेल चौकी के अलावा दुदनियाल में स्थित उसके ब्रिगेड मुख्यालय को भारी नुकसान पहुंचा है। इसके अलावा एथमुकाम और दुदनियाल के बीच स्थित आतंकियों का लांचिंग पैड पूरी तरह तबाह हो गया। इसी लांचिंग पैड पर सुबह पाकिस्तानी सेना की गतिविधि देखी गई थीं। हालांकि, इसकी अधिकारिक स्तर पर पुष्टि नहीं हुई है। लेकिन सूत्रों की मानें तो पाकिस्तानी सेना के चार से पांच सैनिक मारे गए हैं या जख्मी हुए हैं। उन्होंने बताया कि शाम साढ़े चार बजे पाकिस्तानी बंदूकें पूरी तरह खामोश हो गई। गौरतलब है कि गत सप्ताह केरन सेक्टर के रास्ते ही पांच घुसपैठिए दाखिल हुए थे। इन्हें गत रविवार को हुई मुठभेड़ में मार रिराया था। हालांकि इस दौरान पांच सैन्यकर्मी भी शहीद हो गए थे। पिछले सप्ताह ही सुंदरबनी-नौशहरा सेक्टर में भी पाकिस्तान ने गोलाबारी की थी, जिसमें छह जवान जख्मी हो गए थे। इस साल एक जनवरी से 23 फरवरी तक पाकिस्तान 646 बार संघर्ष विराम का उल्लंघन कर चुका है।

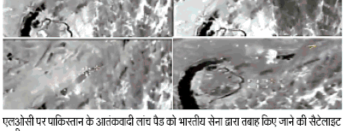

एलओसी पर पाकिस्तान के आतंकवादी लांच पैड को भारतीय सेना द्वारा तबाह किए जाने की सैटेलाइट तस्वीर। एएनआइ

सेना ने लोगों को सुरक्षित स्थानों पर भेजा : पाकिस्तानी सेना ने तोपों से पथरा और इसके पास के गांवों को भी निशाना बनाया। गोलाबारी से पंजगाम, मलिकपोरा, टीसीपी हफरुदा और फरकियां इलाके में दहशत फैल गई। इसके अलावा बलवीर और गुलाब पोस्ट को निशाना बनाने का प्रयास किया, लेकिन इसमें पूरी तरह नाकाम रही। गोलाबारी के मद्देनजर सेना ने नियंत्रण रेखा के अग्रिम इलाकों में बसे स्थानीय नागरिकों को सुरक्षित ठिकानों पर भेज दिया है।

बिहार में मृत मिले 50 कौए, बर्ड फ्लू नहीं

जागरण संवाददाता, पू. चंपारण

कोरोना संकट के बीच प्रखंड क्षेत्र के छोटा रमपुरवा गांव के किनारे बांसवारी (बांस बागान) में गुरुवार देर शाम को 50 कौए मृत पाए गए। शुक्रवार को प्रखंड पशुपालन पदाधिकारी डॉ. महाशंकर ने वहां का जायजा लिया। कहा कि प्रारंभिक लक्षणों से पता चलता है कि बर्ड फ्लू का मामला नहीं है।

मृत कौओं का शरीर सड़ चुका था। इसलिए नमूना एकत्रित नहीं किया जा सका। प्रखंड पशुपालन पदाधिकारी ने घटनास्थल से थोड़ी दूर स्थित विपिन सिंह के मुर्गी फॉर्म का भी निरीक्षण किया। जांच के बाद कहा कि किसी भी मृत कौए या मुर्गी में नोजल डिस्चार्ज जैसा लक्षण नहीं मिला है। यह बर्ड फ्लू का मुख्य लक्षण होता है। इसलिए बर्ड फ्लू की आशंका से इन्कार किया। कहा कि किसी जहरीली दवा के छिड़काव या संक्रमित खाद्य पदार्थ के खाने से कौओं की मौत हो सकती है। हालांकि, बिना जांच के कुछ कहना संभव नहीं है। इसलिए जांच की जा रही है और जल्द ही इसके कारणों का पता चलेगा।

हो रहा है छिड़काव : जिला पशुपालन पदाधिकारी डॉ. अजय कुमार चौधरी ने कहा कि पूर्व की घटना में लिए गए सैंपल की रिपोर्ट निगेटिव है। इसलिए बर्ड फ्लू का मामला नहीं है। सैनिटाइजेशन के लिए हो रहे छिड़काव का भी असर हो सकता है। स्थिति पर नजर रखी जा रही है ताकि सही वक्त पर सही कदम उठाए जा सकें।

उत्तर प्रदेश के संभल में तीन बंदर और मृत मिले

जागरण संवाददाता, संभल : उत्तर प्रदेश में संभल के पवांसा में शुक्रवार को तीन और बंदर मृत मिले। ग्रामीणों के मुताबिक पिछले पांच दिनों 30 बंदरों की मौत हो चुकी है। वहीं विभागीय अफसर 12 से 13 बंदरों की मौत मान रहे हैं। तीन और बंदरों की मौत की जानकारी पर मुरादाबाद से वन संरक्षक पूरी टीम के साथ पहुंचे। बीमार बंदरों को भी देखा। उनको केले में रखकर दवा भी खिलाई। डीएफओ देवेंद्र कुमार चतुर्वेदी ने बताया कि शुक्रवार को तीन बंदरों के शव मिले थे। एक शव को परीक्षण के लिए बरेली भारतीय पशु अनुसंधान संस्थान भेजा गया है। पहले सात अप्रैल को एक बंदर को पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया था, जिसकी पोस्टमार्टम रिपोर्ट में निमोनिया आया था। उसके बाद भी बंदरों की मौत हो रही है। इसलिए शुक्रवार को भी एक और शव परीक्षण के लिए भेजा है। जिससे सही बीमारी का पता लगाया जा सके। उन्होंने कहा कि पूरे इलाके में नजर भी रखी जा रही है।

दोस्त की फेसबुक आइडी हैक कर भड़काऊ पोस्ट करने वाले को भेजा जेल

नईदुनिया, खंडवा: दोस्त की फेसबुक आइडी हैक कर भड़काऊ धार्मिक पोस्ट करने के मामले में एक युवक को गिरफ्तार कि या गया है। आरोपित युवक से एक इलेक्ट्रॉनिक चैनल की माइक आइडी मिली है। मध्य प्रदेश में खंडवा जिले के मूंदी थाने में वसीम कुरैशी ने फेसबुक आइडी हैक होने की शिकायत की थी। उसकी आइडी से धार्मिक भड़काऊ पोस्ट की गई थी। मूंदी थाना प्रभारी अंतिम पंवार ने बताया कि जांच में पता चला है कि वसीम की आइडी उसके दोस्त नईस खान ने हैक की थी। नईस ने पूछताछ में आइडी हैक कर पोस्ट करने की बात कुबूल की है। उसे गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया है। विश्व हिंदू परिषद के कार्यकर्ताओं ने एसपी कार्यालय में ज्ञापन देकर आरोपित पर रासुका लगाने की मांग की है। उधर, एक अन्य मामले में वाट्सएप ग्रुप में अश्लील पोस्ट की शिकायत पर मूंदी पुलिस जांच कर रही है।

दैनिक जागरण
सबरंग
शहर के जानने के...
नई दिल्ली, शनिवार, 11 अप्रैल, 2020
सुझाव व प्रतिक्रिया के लिए लिखें : sabrang@nda.jagran.com
https://www.facebook.com/jagransabrang/

सन्नाटे का सुकून...

प्रदूषण की बेड़ियों से उन्मुक्त पर्यावरण और पर्यावास

कोयल की कुहू-कुहू, कौए की कांव-कांव, टिटिहरी का टिटियाना, तोतों की आवाज, छत व घरों की बालकनी में फुदकती गौरैया...। सब हैं आसपास आपके बेहद करीब। आसमां के कैनवस पर जब भोर में सूर्य के आगमन की सुर्ख लकीरें खिंचती हैं उसी के साथ इन पक्षियों का कलरव भी शुरू हो जाता है...मानो सूर्य देव के स्वागत में सब परिंदे मिल गीत गुनगुना रहे हैं। इन सब परिंदों की... आजकल आपकी बगिया में, अंगना और ऊंची अटारियों पर फ्लैट्स की बालकनी में चहचहाहट है। दिल्ली-एनसीआर में सुनसान सड़कों पर इनका अपनी धुनों में प्रकृति उत्सव जारी है। पर्यटकों से गुलजार रहने वाले कनॉट प्लेस में भी आज हर पेड़ पर किस्म-किस्म की चिड़िया बैठी दिखेंगी। प्रकृति की सांसें भी राहत भरी महसूस होंगी...जिसकी बानगी शुद्ध हवा का झोंका पेश कर रहा है। आइए सबरंग के इस अंक में पर्यावरण-पर्यावास इस लॉकडाउन में आपके कितना करीब है और अब से पूर्व कब ऐसी दिखी दिल्ली इससे रूबरू करा रहे हैं संजीव कुमार मिश्र :

अकेले मैं न रहती हूं...समूह में हमेशा चलती हूं...मैं हूं आजकल उन्मुक्त...इसीलिए लॉकडाउन में ऊंची अटारियो पर खूब दिखाई पड़ती हूं।

प्रकृति संवाद

सड़कों का सन्नाटा...ऊंची इमारतों वाले दफ्तरों की खामोशी...मुहल्लों की वीरान गलियां...चांदनी चौक की चमक...पर्यटकों की बांट जोहते एकांतवास में खड़ी हमारी धरोहर...सब इस एकांतवास में उज्ज्वल भविष्य की राह तैयार कर रहे हैं। इसी माहौल में पर्यावरण-पर्यावास और यमुना की जीवनदान मिला। कितना खूबसूरत लगता है जब बालकनी से ही पक्षियों के झुंड उन्मुक्त गगन में पंखों में फैराते फिरते हैं। मुंडेर पर बार-बार दाना लेने गौरैया और कौए चले आते हैं। यह दिल्ली के लिए सीख भी है। जिस यमुना को प्रदूषण मुक्त करने के लिए करोड़ों रुपये खर्च किए गए वो महज चंद दिनों के लॉकडाउन में निखर गई। जिन पक्षियों की आवाज सुनने को हम तरस गए वे अब डालियों पर उछल कूद कर रहे हैं। एक दौर और था जब दिल्ली आज जैसी ही होती थी। तभी आज फिर दिल्ली अपने अतीत से वर्तमान में आलिंगन कर रही है। बीच में जो हम भटक गए थे उसका पश्चाताप भी कर रही है। बहुत सुनहरा था पर्यावरण और पर्यावास का अतीत।

जब बाग ही बाग होते थे: दिल्ली और हरियाली का गहरा नाता रहा है। मुगल काल में बकायदा बागों की श्रृंखला शुरू हुई। मुगलों ने दिल्ली में बाग बनवाने का जो चलन शुरू किया था वो कई मायनों में अलग था। बर्नियर लाल किला में बादशाह की अनुपस्थिति में जनाना क्वार्टर की तरफ चला गया। वह लिखता है कि प्रत्येक दरवाजे के सामने पानी बहता है। गार्डन हर जगह है। खुशबूदार पौधे लगाए गए हैं। सूरज की रोशनी भी इन पौधों की वजह से घरों में दाखिल नहीं होती है। ऊपर से फव्वारा इसकी खूबसूरती बढ़ा देता है। किनारे किनारे बहते नालों मे चांदनी देखना सुखद है। माहताब बाग अथवा मून लाइट बाग की चांदनी तो अद्भुत होती थी। आजादी के बाद भी दिल्ली में बाग की परंपरा रही। भारत पाकिस्तान बंटवारे के समय बड़ी संख्या में मुस्लिम परिवारों ने यहां से जाते समय अपने बाग लोगों को बेच दिए। मसलन, हाफिज बाग, मतीन बाग, नाली वाला, ठाकुरदास, रतिराम का बाग, हीरोवाला बाग, मोटे वाला बाग, मजरुआ बाग, हजारा बाग, बनिया वाला बाग, बुलबुल बाग जैसे कई बाग। इतिहासकारों की मानें तो साल 1960-65 तक बाहरी दिल्ली में सिर्फ बाग ही हुआ करते थे। बादली, हैदरपुर, नरेला भलस्वा में तो आम के ही बाग हुआ करते थे। कई तो ऐसे बाग हैं, जो ऐतिहासिक घटनाओं की वजह से आज भी प्रासंगिक हैं हाल ही में शालीमार बाग की खूब चर्चा हो रही थी। 31 जुलाई 1658 को इसी बाग स्थित शीश महल में औरंगजेब की ताजपोशी हुई थी। 1857 में ब्रितानिया हुकूमत और विद्रोहियों के बीच यहां जमकर संग्राम हुआ था। गार्डन ऑफ द ग्रेट मुगल में सीएम विलियर्स स्टूअर्ट ने लिखा है कि सन् 1793 में लेफ्टिनेंट फ्रेंकलिन ने इस बगीचे का भ्रमण किया था। वो इसकी खूबसूरती से इस कदर प्रभावित हुए थे कि उन्होंने इसकी तारीफ में जी भर के कसीदे पढ़े। उन्होंने लिखा था कि बाग की खूबसूरती माशा अल्लाह है। सफेद प्लास्टर से बनी दीवारें दिल को छू लेती हैं। 1803 में ब्रिटिश अधिकारी इस बाग को बतौर समर रिट्रीट के लिए प्रयोग करते थे। यानी वो यहां आकर गर्मियों में तरोताजा होते थे। बाग में आज भी आम, नीम समेत अन्य पेड़ों की बहुलता है।

वृक्षों की विरासत है दिल्ली के पास : इतिहासकार आरवी स्मिथ कहते हैं कि आज हम दिल्ली के प्राकृतिक सौंदर्य के अतीत में जा रहे हैं, उसे याद कर रहे हैं क्योंकि हम इन दिनों जो देख रहे हैं, महसूस कर रहे हैं, वह दिल्ली की युवा पीढ़ी ने नहीं देखा था। उसने तो प्रदूषण से हांफती हुई दिल्ली को ही देखा है। पेड़ों की पत्तियों पर हमेशा धूल की झुर्रियां पड़ी हुई देखी हैं। अब लॉकडाउन में जैसी दिल्ली तो तीन-चार दशक पहले कभी दिखी होगी। वैसे दिल्ली में अब भी ऐसे कई पेड़ हैं, या कुछ समय पहले तक थे, जिनके साथ इतिहास जुड़ा हुआ है। ऐसा ही एक पेड़ लाल किले के अंदर था। जिसे किलर ट्री कहा गया। दरअसल, 1857 में अंग्रेजों ने हिंदुस्तानियों को इस पेड़ पर टांगकर मारा था। यह पेड़ करीब 30 साल पहले एक आंधी में गिर गया। इस पेड़ को मैंने भी देखा था। इसी तरह कोटला में एक बरगद का पेड़ है, जो सैकड़ों साल पुराना है। इस पेड़ के नीचे एक साथ 50 से ज्यादा लोग बैठकर आराम करते थे। वहीं प्रदीप कृष्णन अपनी पुस्तक दिल्ली ट्री में कहते हैं कि महरौली में दिल्ली का सबसे पुराना पेड़ खिरनी का है। यह पेड़ करीब 500 साल पुराना है। पुरानी दिल्ली में ऐसी कई गलियां हैं जो पेड़ों के नाम पर प्रसिद्ध हैं। इन गलियों में कभी इन पेड़ों की

सड़कें सूनी...दफ्तर खामोश....टिटहरी आकर बैठी दरवाजे की ओर...न जाने क्या यह कहती है...पर बड़े बुजुर्गों ने कहा बोली इसकी बेवजह न होती है। फोटो : सौरभ राय

अधिकता होती थी हालांकि समय के साथ ये पेड़ तो खत्म हो गए लेकिन कहानियां आज भी जिंदा हैं। ऐसी ही खजूर वाली गली है। कहते हैं कभी इस गली में खजूर के पेड़ों की अधिकता थी। लेकिन अंग्रेजों के जमाने में पेड़ों को काट दिया गया। ऐसा ही एक पेड़ राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय में भी है। यहां बरगद का पेड़ काफी पुराना है। जिसे दिल्ली सरकार ने विरासत पेड़ों की सूची में भी शामिल किया है। इस पेड़ के नीचे विभिन्न रंगकर्मी और फिल्म कलाकार घंटों रिहर्सल करते रहे। कभी साथियों के साथ सुख-दुख बांटते तो कभी भविष्य के सपने बुनते। इन कलाकारों में आशीष विद्यार्थी, नसीरुद्दीन शाह, ओमपुरी, नवाजुद्दीन सिद्दकी इत्यादि के नाम खासतौर पर उल्लखनीय हैं।

ऐसे ही लुटियंस दिल्ली के कई रास्ते ऐसे हैं जो विशेष प्रकार के पेड़ों के लिए जाने जाते हैं। मसलन, पृथ्वीराज रोड, औरंगजेब रोड, तीस जनवरी मार्ग, कृष्ण मेनन मार्ग पर नीम ही नीम हैं। वहीं तीन मूर्ति मार्ग, बाबा खड़क सिंह मार्ग, तिलक मार्ग, फिरोज शाह रोड पर इमली के खूब पेड़ मिलेंगे। पंडारा रोड पर अंजन के पेड़ मिलते हैं। राजेश पायलट रोड पर महुआ के पेड़ हैं।

प्रदूषण से त्रस्त दिल्ली को कुछ सुकून देने के लिए, दिल्ली के कुछ धरोहर रूपी पेड़ों को सरकार ने भी विरासत की तरह प्रस्तुत किया। इनमें एफआरआरओ दफ्तर भीकाजी कामा प्लेस का बरगद का पेड़, तुगलकाबाद के खंडहरों में शान से खड़ा ऐलान्थस का पेड़, लोदी गार्डन बड़ा गुंबद के उत्तर में स्थित मशहूर आम का विशाल पेड़, इंडिया गेट से 100 मीटर पर स्थित बरगद जो इंडिया गेट की पहचान का हिस्सा बन चुका है शामिल हैं। इसके अलावा राजघाट संग्रहालय का अर्जुन का पेड़, राजघाट स्थित अशोक वृक्ष, तीन मूर्ति स्थित नेहरु मेमोरियल में विशाल नीम का पेड़, नेहरु पार्क का ऐलान्थस पेड़, कुतुब मस्जिद स्थित मशहूर स्लवाडोरा का पेड़, बर्मा मिशन में स्थित पीपल का पेड़ जिसके नीचे भगवान बुद्ध की प्रतिमा है, कटवारिया सराय सेंट्रल पार्क का बरगद, तीन मूर्ति स्थित नेहरु मेमोरियल में सेमल का पेड़, कदम शरीफ मस्जिद स्थित नीम का पेड़, हौज खास डियर पार्क के पास स्थित पिलखन का पेड़, हौज खास आर्ट विलेज के पास स्थित इमली का पेड़, दादा बाड़ी जैन मुनि स्थित पीपल का पेड़ और चिराग दिल्ली दरगाह का खिरनी का पेड़...ये ऐसे वृक्ष हैं। ये सब पेड़ होते हुए भी दिल्ली सुकून भरी सांसें नहीं ले पाती थी। ऑक्सीजन देने वाले वृक्ष खुद ही कष्ट में थे अब सब सुकून में हैं।

मैं हूं मैना कोई मुझे कहता है गुरसल...आओ हर दिन इस लॉकडाउन में मेरी बोली...संवाद सुनो न। फोटो : सौरभ राय

जगह-जगह फुदकते दिखते हैं पक्षी : सूनी सड़कें, खामोश गलियां सब पक्षियों से गुलजार हैं। दिल्ली-एनसीआर के विभिन्न इलाके जहां ऊंचाईयों को चुनौती देती इमारतें खड़ी हैं वहां आजकल अद्भुत पक्षी देखने को मिल रहे हैं। टिटहरी, गौरैया, कौए सब दिख रहे हैं। हौजखास, वसंत विहार, सत्यमार्ग, आरकेपुरम, दिल्ली आइआइटी, नजफगढ़, ओखला, गुरुग्राम के कई क्षेत्रों में, गाजियाबाद में पुराने बसे शहर की तरफ तो पक्षी पेड़ों पर फुदकते, खेलते दिख ही रहे हैं, इसके अलावा इंदिरापुरम, वैशाली जहां ऊंची इमारतें हैं वहां भी तोते, किस्म-किस्म की चीड़िया वृक्षों पर मानो अपनी धुन में संवाद करती नजर आती हैं। वसंत विहार में लगभग ढाई दशक बाद तो रेड टर्टल डव दिखाई दी है। जबकि अन्य इलाकों में नील कपोत, लॉफिंग डव, पीले पैरों वाला हरा कबूतर, कोयल, शिकरा, ब्लैक काइट, हार्नबिल, मैना, इंडियन रॉबिन, गौरैया, पडुखी, कैटल इग्रेट, बुलबुल, ग्रीन सैंड पाइपर, टिटहरी, जलकाग, बगुला, इंडियन वाइट जैसे पक्षियों की लोग आवाज भी सुन रहे हैं और आसपास देख भी रहे हैं। अरावली बायोडायवर्सिटी पार्क के वैज्ञानिक एम शाह हुसैन कहते हैं कि यह पक्षियों के घोसला बनाने का समय है। लॉकडाउन की वजह से अभी पक्षियों ने कहां कहां घोसले बनाए इसकी पूरी जानकारी नहीं मिल पा रही है। लेकिन इतना तो तय है कि लॉकडाउन की वजह से आवासीय कॉलोनियों मे भी पक्षियों की आवक बढ़ी है। अब ये कितने दिनों तक रहता है, यह देखना होगा। अभी चूंकि इंसानों की आवाजाही बंद है लिहाजा पक्षी बेखौफ घूम रहे हैं। पक्षियों के प्रवास के लिहाज से गत वर्ष भी अच्छा रहा था। गत वर्ष दिल्ली में 250 से अधिक प्रजातियां दिखी थीं। पक्षियों की 15 रेयर प्रजातियां भी दिल्ली-एनसीआर में दिखाई दी। इनमें वाइट बिल्ड मिनीवेट, मार्शल लोरा, इंडियन पीटा, रेड नेक्ड फेलकॉन, वाइड बिल्ड ड्रोंगो, क्रिस्टेड बंटिंग, ओरिएंटल प्रेटिनकोल्स, इंडियन कर्शर शामिल थीं। यह प्रजातियां ज्यादातर रिज और यमुना फ्लड प्लेन में दिखाई दीं। रेजिडेंट्स बर्ड की प्रजातियों में करीब 35 प्रजातियां ऐसी भी नजर आईं जो अब सिर्फ भारत में ही नजर आती हैं। यमुना नदी और बाढ़ क्षेत्रों में, उप्र ओखला बैराज तक वाइट टेल्ड स्नोटचेट, पेंटेड स्टोर्क, सारस क्रेंस, ब्लैक नेक्ड स्टोर्क जैसे पक्षी नजर आते हैं। नजफगढ़ ड्रेन और इससे लगते क्षेत्र में जिसमें बसई वेटलेंड और सुल्तानपुर भी शामिल हैं। गर्मियों के दौरान यहां ओरिएंटल प्रेटिनकोल्स, ग्रेल बिल्ड कुकू, ब्लू टेल्ड बी ईटर आदि पक्षी नजर आते हैं। जंगल जिसमें असोला, संजय वन, दिल्ली कैंट और रजोकरी शामिल है। इसके अलावा हरियाणा का मांगर गांव, दमदमा और भोंडसी भी शामिल है। यहां पर मार्शल लोरा, क्रिस्टेड बंटिंग, जंगल प्रीनिया, इंडियन पीटा, आदि प्रजातियां नजर आती है। इसके अलावा यहां इजिप्शियन वॉल्चर, गोल्डन ओरिओल जैसी प्रजातियां भी दिखाई देती हैं। दिल्ली में पक्षियों की संख्या एवं प्रकार के बारे में मोहरान जैदी अपनी किताब बर्ड्स ऑफ दिल्ली में लिखते हैं कि यहां गौरैया, आशिया प्रिनिया, पर्पल सनबर्ड, ओरिएंटल वाइट आइ, लाल बुलबुल, मैना, रिंग डव समेत सैकड़ों हैं। दिल्ली गजेटियर 1883-84 में भी यमुना किनारे जंगली पशु पक्षियों का वर्णन मिलता है। इसके अलावा भी दिल्ली गजेटियर 1912 में सर्दियों के मौसम में कालहंस और बतख के पर्याप्त पानी वाले स्थान में निवास का भी जिक्र है।

बीते जमाने की 'नदी' यमुना की कहानी

दिल्ली की देहरी

नलिन चौहान
दिल्ली के अनजाने इतिहास के खोजी

हमारे यहां नदी केवल नदी नहीं है, एक संस्कृति भी हुआ करती है। नदी का इतिहास शहर के इतिहास से पुराना होता है। उसके किनारे जो भी शहर बसा हो उसका पूरा जीवन उस नदी के इर्द गिर्द घूमता है। दिल्ली का जीवन भी कभी यमुना से जुड़ा था, कभी यह दिल्ली यमुना के कारण बसी थी। यह एक इतिहास सम्मत तथ्य है कि राजधानी के रूप में दिल्ली के स्थान को यमुना के आकर्षक स्वरूप और पेयजल के लिए मीठे पानी की उपलब्धता के कारण चुना गया था। इतना ही नहीं, यमुना ने एक शहर के रूप में राजधानी के विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। लगभग सभी ऐतिहासिक विवरणों में दिल्ली के एक प्रमुख संसाधन के रूप में यमुना की सुंदरता का उल्लेख है।

दिल्ली में जमीन का ढलान और यमुना नदी के बहाव दोनों ही उत्तर से दक्षिण की ओर हैं। उत्तर भारत की प्राचीनतम नदियों में से एक यमुना अधिकांश उत्तर प्रदेश के साथ दिल्ली की पूर्वी सीमा रेखा के रूप में बहती है। यमुना नदी दिल्ली में पल्ला गांव से प्रवेश करती है और ओखला के पास जैतपुर में दिल्ली छोड़ देती है। दिल्ली में आने से पहले ही यमुना नदी से दो नहरें निकालने के कारण दिल्ली के मैदानी भाग में यह

भगवान श्रीकृष्ण की लीलाओं का साक्षी रही यमुना नदी आज अपनी नीलिमा में है। संजय

एक पतली धारा के रूप में बहती दिखती है, जिसे सिवाय बारिश के मौसम को छोड़कर सभी जगह से पार किया जा सकता है।

यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस से प्रकाशित पुस्तक 'रिवर ऑफ लव इन द ऐज ऑफ पॉल्यूशन, द यमुना रिवर ऑफ नॉदर्न इंडिया' (प्रदूषण के समय में प्रेम की सलिला, उत्तर भारत की यमुना नदी) में डेविड एल हैबरमैन ने दिल्ली के पारिस्थितिकी तंत्र और धार्मिक आस्था से उपजे द्वंद्व को रेखांकित किया है। यह एक रूप में, सदियों से एक देवी के रूप में पूजनीय, भगवान श्रीकृष्ण की प्रेमिका के रूप में प्रसिद्ध और अपने अनन्य भक्तों का एक क्षमाशील मां के रूप में पोषण करने वाली यमुना नदी की उपेक्षा की कथा है। इसमें औद्योगिक और मानव जनित कचरे के साथ आर्थिक और जनसांख्यिकीय विकास तथा मानवीय लापरवाही का योगदान जगजाहिर है। दूसरे शब्दों में, यमुना की यह दुर्दशा भारत सहित दुनिया के दूसरे देशों में जल स्त्रोतों के साथ किए गए धतकरम से जुदा नहीं है। समझने वाली बात यह है कि हैबरमैन ने इस समूचे विमर्श में स्थानीय समाज की धार्मिकता की बात को गौण नहीं होने दिया है।

हिन्दू पौराणिक आख्यानों के अनुसार, यमुना को 'यम की बहन' यानी 'मृत्यु के देवता की बहन' माना जाता है। हैबरमैन ने 'रिवर ऑफ डेथ' शीर्षक वाले अध्याय में नाटकीय रूप से इस पौराणिक और व्युत्पत्ति संबंधी कड़ी को सुलझाने का प्रयत्न किया है। पुस्तक में हैबरमैन ने जिस विस्तृत रूप से नदी के प्रदूषण और उसकी जलधारा के शोषण की आधुनिक कथा को प्रस्तुत किया है, वह पाठकों के लिए मनोवैज्ञानिक रूप से विचलित कर देने वाला प्रसंग है।

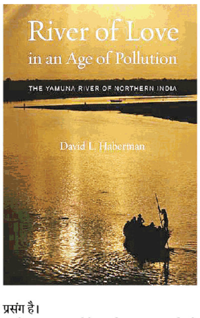

लेखक, जब उन्होंने पहली बार यमुना नदी को देखा था, ने पाठकों के समक्ष तुलनात्मक रूप से आज की स्थिति और 1980 के आरंभ में यमुना नदी के साथ अपनी मधुर स्मृतियों का विवरण दिया है। तब विशाल कछुए, पानी में उछलती मछलियां और कई जलपक्षी सभी पनप रहे थे और तब तैराकी तन-मन को आनंद देने वाली बात थी न कि जल प्रदूषण के कारण अकल्पनीय रूप से जान-जोखिम काम। दिल्ली और ब्रज, कृष्ण भक्ति और तीर्थयात्रा का सबसे पवित्र क्षेत्र, से सबसे अधिक कचरा सीधे जलधारा में आकर गिरता है। इस तथ्य को रेखांकित करते हुए हैबरमैन लिखते हैं, यह विडंबना है कि नदी का सर्वाधिक प्रदूषित भाग वह क्षेत्र है, जहां पर यमुना को लेकर धर्मशास्त्र और पूजा-अर्चना की सर्वव्यापकता का विकास हुआ है।

पुस्तक के अनुसार, हमेशा से हालात इतने बुरे नहीं थे। दिल्ली में लंबे समय से रहने वाले अनेक निवासियों के मन में एक नदी, जो कि अब पहले के समान नहीं है, की सुखद स्मृतियां हैं। मैं (हैबरमैन) अपने दिल्ली प्रवास में जिस होटल में अधिकतर ठहरता था, उसके मालिक, 60 वर्षीय मोहन शर्मा ने एक सुबह मुझसे नदी से जुड़े अपने अनुभव साझा किए। उन्होंने आंखों में खुशी और चेहरे पर मुस्कान के साथ मुझे 1950 की शुरुआत में दिल्ली की यमुना में तैरने की बात कही। उन्होंने बताया कि वे अपने भाइयों के साथ नदी तक साइकिल चलाकर आते थे और पानी में तैरते थे तथा उसके बाद रेतीले तट पर कुश्ती और खेल खेलते थे। इतना ही नहीं, पानी साफ और आसमान नीला होता था। पुस्तक में ऐसी ही एक कहानी, दिल्ली में यमुना के जल की स्थिति में सुधार की दिशा में कार्यरत एक गैर-सरकारी संगठन पानी मोर्चा के संस्थापक कमांडर सुरेश्वर सिन्हा की है। वे 1940 के अंत से लेकर 1960 के आरंभ तक दिल्ली में एक युवा नौसेना अधिकारी के रूप में तैनात थे। वे राष्ट्रीय नौसेना तैराक दल (नेशनल नेवल सेलिंग टीम) के सदस्य थे, और उन्हें तब कि दक्षिणी दिल्ली में ओखला स्थित यमुना में तैराकी की मधुर स्मृतियों का पूरा स्मरण है। वे उन दिनों नदी की सुंदरता को याद करते हैं जब वे यमुना में होने वाली नौकादौड़ स्पर्धाओं, जिनमें बड़ी संख्या में रंग-बिरंगी नौकाएं शामिल होती थीं, में भाग लेते थे। बकौल सिन्हा, मैं आपको बता नहीं सकता कि 1970 तक भी नदी कितनी साफ और सुंदर हुआ करती थी। अनेक दिल्लीवासी पिकनिक मनाने के लिए आते थे और नदी के किनारों पर पूरा दिन बिताते थे। सिन्हा ने हैबरमैन को बताया कि एक मौके पर वे नाव सहित नदी में डूब गए थे। इस कारण उनके पेट में अनायास काफी पानी चला गया था, जिसे उन्होंने बाहर किनारे आकर निकाला। उन्होंने नदी में डूबने और पेट में पानी जाने की घटना को एक सुखद अनुभव करार दिया। आज यह विश्वास करना कठिन है कि नदी और समाज में अपनत्व का ऐसा भी एक समय था। बहरहाल एक पखवारे से दिल्ली में यमुना नदी फिर से कुछ सुकून भरी सांसे ले रही है। अब देखना यह है कि हम यमुना नदी को यूं ही निरंतर स्वच्छता भरी सांसें लेने देंगे या घरों से बाहर निकलते ही हमारे मनोभाव बदल जाएंगे। दिल्ली खुद से इतना वायदा ले ही सकती है कि अपनी ओर से यमुना की लहरों को प्रवाह के साथ बहने देगी...।

एपल कंपनी ने लांच किया एपल-1 कंप्यूटर

आज ही के दिन 1976 में आईटी कंपनी एपल ने एपल-1 नामक अपना पहला कंप्यूटर बाजार में उतारा। इसे अमेरिकी इंजीनियर स्टीव वोजनेक ने बनाया था। वहीं उनके इंजीनियर दोस्त स्टीव जॉब्स ने इसे बेचने की तरकीब निकाली। शुरुआती दौर में इसकी कीमत 666.66 डॉलर थी।

अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन की स्थापना हुई

आज ही के दिन 1919 में दुनियाभर में श्रमिकों की समस्याएं दूर करने के लिए संयुक्त राष्ट्र के अंतर्गत अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन की स्थापना की गई। संयुक्त राष्ट्र के 193 सदस्य देशों में से 187 देश इससे जुड़े हैं। 1969 में इसे शांति के नोबेल पुरस्कार से नवाजा गया।

हिंदी सिनेमा के पहले सुपरस्टार थे के एल सहगल

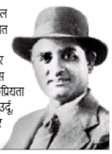

आज ही के दिन 1904 में गायक और अभिनेता कुंदनलाल सहगल का जन्म जम्मू में हुआ। 1932 में कोलकाता स्थित फिल्म इंडस्ट्री से फिल्मों में अभिनय शुरू किया। उस वक्त तक इंडियन ग्रामोफोन कंपनी उनके गानों का रिकॉर्ड जारी कर चुकी थी। 1935 में उन्होंने शरतचंद्र चट्टोपाध्याय के उपन्यास देवदास पर बनी फिल्म देवदास के किरदार और अपने गीतों से अपार लोकप्रियता पाई। उन्होंने खयाल, ठुमरी, गजल सहित कई विधाओं और हिंदी, उर्दू, बंगाली सहित भाषाओं में गाने गाए। 18 जनवरी 1947 को जालंधर में उनका देहांत हो गया।

इधर-उधर की

उड़ता कचरा पात्र, लॉकडाउन पर सोशल मीडिया में चर्चा

न्यूयॉर्क, एजेंसी : कचरा पात्र उड़ सकता है? जवाब सीधा है नहीं। लेकिन सोशल मीडिया पर एक उड़ते हुए कचरा पात्र की तस्वीर सामने आई है। तस्वीर में नजर आ रहा है कि एक

कचरा पात्र जमीन से उठा हुआ है और लग रहा है कि वो उड़ रहा है। इस तस्वीर को देखकर कोई भी इसे आभासी बता सकता है, लेकिन महामारी के इस दौर में हर चीज को लोग लॉकडाउन से जोड़ रहे हैं और कमेंट कर रहे हैं। एक शख्स ने लिखा कि यदि आपको कोई उड़ता हुआ कचरा पात्र दिखे तो आप समझ जाइए कि लॉकडाउन का यह दौर लंबा होने वाला है तो दूसरे ने लिखा कि यह लॉकडाउन की उपलब्धि है जब कचरा पात्र उड़ रहा है। एक अन्य ने लिखा कि लॉकडाउन और क्या-क्या दिखाने वाला है। हालांकि यह तस्वीर इससे पहले 2015 में इंस्टाग्राम पर पोस्ट की गई थी।

30 सेकंड में खत्म हो जाएगा वायरस

तलाशी राह ▶ आइआइटी गुवाहाटी के शोधकर्ताओं ने विकसित किया डिसिन्फेक्शन सिस्टम

अब आसानी से विसंक्रमित होंगे क्वारंटाइन सेंटर और आइसोलेशन वार्ड

गुवाहाटी, प्रेट्र : देश में कोरोना वायरस के बढ़ते संक्रमण को रोकने के लिए भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान गुवाहाटी (आइआइटी जी) के शोधकर्ताओं ने यूवीसी एलईडी आधारित एक किफायती कीटाणुशोधन प्रणाली (डिसिन्फेक्शन सिस्टम) विकसित की है। शोधकर्ताओं ने कहा कि यह प्रणाली महज 30 सेकंड में वायरस का खात्मा कर सकती है। साथ ही, व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरणों (पीपीई) की जरूरतों को भी पूरा सकती है। इसका उपयोग मुख्य रूप से क्वारंटाइन सेंटरों और आइसोलेशन वार्डों को विसंक्रमित करने के लिए होगा।

इसकी निर्माण सामग्री में जलरोधी क्षमता भी है यानी यह वाटरप्रूफ है। इसे तैयार करने के लिए आइआइटी गुवाहाटी के निदेशक, प्रोफेसर टीजी सीताराम ने केमिकल इंजीनियरिंग विभाग सेंथिलमुरुगन सुब्बैया के नेतृत्व में दो निजी कंपनियों के साथ मिलकर एक रिसर्च टीम का गठन किया है। सेंथिलमुरुगन सुब्बैया ने कहा, 'कोरोना की जंग लड़ने के लिए आइआइटी गुवाहाटी सरकारी और निजी एजेंसियों और संस्थाओं के

डिसिन्फेक्शन सिस्टम। साभार : आइआइटीजी

साथ मिलकर किफायती तकनीक पर काम कर रहा है।' संस्थान के मुताबिक, यूवीसी प्रणाली सूक्ष्मजीव संक्रमित सतह को साफ करने के लिए एक सिद्ध तकनीक है। इस परियोजना में टीम ने एक यूवीसी-एलईडी प्रणाली विकसित की है, जो 30 सेकंड में वायरस से संक्रमित सतह को सैनिटाइज कर सकती है। वाइपर के आकार का यह सिस्टम बगैर छेद वाली सतह को पूरी तरह सैनिटाइज करने में सक्षम है।

तकनीक में सुधार की कवायद : शोधकर्ताओं ने कहा कि अब हम इस तकनीक में सुधार कर छिद्र वाली सतह पर छुपे हुए वायरसों को मारने की इसकी क्षमता बढ़ाने के लिए प्रयासरत हैं। इसके लिए हम 'ओजोन सिस्टम' का प्रयोग कर रहे हैं, जो एकीकृत रूप से छिद्रयुक्त सतह को भी सैनिटाइज कर सकती है। उन्होंने कहा कि यह सिस्टम एक ऑब्जेक्ट मूवमेंट आइडेंटिटी फीचर से लैस है ताकि ऑपरेशन के दौरान मानव त्वचा को यूवीसी एक्सपोजर से बचा जा सके।

वार्ड, बस और रेल के डिब्बे होंगे सैनिटाइज : शोधकर्ताओं ने कहा कि उन्होंने साफ-सफाई के लिए, तीन प्रोटोटाइप विकसित किए हैं। उनमें से एक अस्पताल के वार्डों, बसों, महानगरों और रेलवे डिब्बों जैसे बड़े स्थानों को साफ करने के लिए बनाया गया है, जिन्हें कोरोना वायरस के मरीजों की देखभाल के लिए क्वारंटाइन सेंटरों और आइसोलेशन वार्ड में रूपांतरित किया गया है।

पीपीई भी होंगे बेहतर : शोधकर्ताओं ने कहा कि वैश्विक स्तर पर आज भारत कई बाहरी देशों को चिकित्सा सामग्री भी भेज रहा है। ऐसे में यह और जरूरी हो जाता है कि उसकी गुणवत्ता अच्छी हो, इसी बात को ध्यान में रखते हुए आइआइटी गुवाहाटी कई कंपनियों को टेक्निकल सपोर्ट भी दे रही है ताकि पीपीई (पर्सनल प्रोटेक्टिव इक्यूमेंट) को और बेहतर बनाया जा सके।

दक्षिण कोरियाई राष्ट्रपति ने किया मतदान

कोरोना वायरस के वैश्विक संकट के बीच शुक्रवार को दक्षिण कोरिया के राष्ट्रपति मून जे-इन ने पत्नी किम जुंग सुक के साथ आगामी संसदीय चुनाव के लिए मतदान किया। दक्षिण कोरिया में क्वारंटाइन में रह रहे करीब 450 लोगों को निर्धारित तिथि से पहले मतदान की सुविधा दी गई। यहां 15 अप्रैल को संसदीय चुनाव के लिए मतदान होंगे। एपी

कोरोना के इलाज के लिए छह दवाओं की पहचान

शोध अनुसंधान

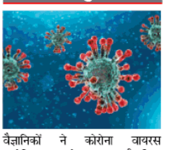

वैज्ञानिकों ने कोरोना वायरस (कोविड-19) के इलाज की दिशा में छह संभावित दवाओं की पहचान करने में सफलता पाई है। दस हजार से ज्यादा कंपाउंड्स में से पहचान की गई इन दवाओं से कोरोना के उपचार में मदद मिलने की संभावना जताई गई है। नेचर जर्नल में प्रकाशित अध्ययन के अनुसार, क्लीनिकल ट्रायल्स और अन्य कंपाउंड्स में पहचान की गईं इन दवाओं के प्रभाव का परीक्षण किया गया है। इसमें पाया गया कि इन दवाओं से कोरोना का उपचार करने में मदद मिल सकती है। ऑस्ट्रेलिया की क्वींसलैंड यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर ल्यूक गुडर ने कहा, 'मौजूदा दौर में कोरोना वायरस के लिए कोई प्रभावी उपचार विकल्प नहीं है। हमने क्लीनिकल उपयोग की दिशा में इन कंपाउंड्स में से दवा की जांच के लिए, प्रयोगशालाओं में एक प्रोग्राम की शुरुआत की है। हम यह पता लगाने के लिए, एक उन्नत कंप्यूटर सॉफ्टवेयर का भी इस्तेमाल कर रहे हैं कि ये विभिन्न दवाएं किस तरह वायरस से निपट सकती हैं।' शोधकर्ताओं ने कहा कि इस प्रोग्राम में कोविड-19 वायरस के एंजाइम को साधा गया है। इस एंजाइम को प्रोटीज या मेप्रो के तौर पर जाना जाता है। यह प्रोटीज वायरस की प्रतिकृति तैयार करने में अहम भूमिका निभाता है। उन्होंने बताया कि हजारों दवाओं को परखने के बाद ऐसी छह दवाओं की पहचान की गई है, जो इस एंजाइम को रोकने में प्रभावी दिखी हैं। ल्यूक ने कहा, 'हम हृदय रोग, गठिया, स्ट्रोक और कैंसर जैसे विकारों की रोकथाम और उपचार से जुड़े क्लीनिकल ट्रायल्स से मिली अहम जानकारियों पर भी गौर कर रहे हैं। हम इस बात को लेकर आशावान हैं कि आने वाले समय में कोविड-19 दवा की खोज हो सकती है।' -प्रेट्र

कोविड-19 के खिलाफ प्रभावी हैं ओईयू और डिजिटल थर्मामीटर

▶ एसीएल समर्थित स्टार्ट-अप ने विकसित की दोनों डिवाइस

▶ ओपन सोर्स में मौजूद है इनकी तकनीक, शोधकर्ता तैयार कर सकते हैं मशीनें

नई दिल्ली, आइएसडब्ल्यू : वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआइआर) पुणे की राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला (एनसीएल) द्वारा समर्थित स्टार्ट-अप कंपनियों ने दो ऐसे नए उत्पाद बनाए हैं, जो कोरोना से लड़ने में उपयोगी साबित हो सकते हैं। ये दोनों नवाचार - ऑक्सीजन संवर्धन यूनिट (ओईयू) और डिजिटल आइआर थर्मामीटर हैं, जिन्हें कोरोना वायरस के खिलाफ प्रभावी उपकरण माना जा रहा है।

शोधकर्ताओं ने कहा कि डिजिटल आइआर थर्मामीटर को मोबाइल फोन अथवा पावर बैंक की मदद से संचालित किया जा सकता है। इसका डिजाइन और इसकी तकनीक की जानकारी ओपन सोर्स में मौजूद है और भारतीय कंपनियां इस निशुल्क तकनीक के उपयोग से आइआर थर्मामीटर बना सकती हैं। एनसीएल ने यह पहला थर्मामीटर का उत्पादन बढ़ाने के उद्देश्य से की है, ताकि कोविड-19 के खिलाफ छिड़ी जंग में इसकी मांग को पूरा किया जा सके। इसे तैयार करने वाली कंपनी बीएमईके के सह-संस्थापक, प्रतीक कुलकर्णी ने कहा है कि हम डिजाइन को सरल बनाने और इसे सभी के साथ साझा करने की कोशिश कर रहे हैं, ताकि निर्माताओं को इस थर्मामीटर को विकसित करने के लिए अधिक शोध एवं विकास पर समय गंवाने की जरूरत न पड़े।

परीक्षण के दौरान मरीज के श्वास मास्क से जुड़ी ओईयू मशीन। साभार : आइएसडब्ल्यू

स्टार्टअप कंपनी जेनरिच मेम्ब्रेन्स द्वारा विकसित दूसरा उपकरण ऑक्सीजन संवर्धन यूनिट (ओईयू) है। इस यूनिट का उपयोग कोविड-19 से पीड़ित मरीजों के फेफड़ों के प्रभावित होने पर उन्हें पूरक ऑक्सीजन देने के लिए किया जाता है। ओईयू के उपयोग से सामान्य परिवेश में हवा में ऑक्सीजन का स्तर 38-40 प्रतिशत हो जाता है, जबकि सामान्य वातावरण में इसका स्तर 21-22 प्रतिशत होता है।

एनसीएल में पॉलिमर साइंस एंड इंजीनियरिंग डिवीजन के प्रमुख डॉ. उल्हास खारुल ने बताया कि इस यूनिट की मदद से आसपास की हवा को कंप्रेसर के जरिये पॉलिमरिक झिल्ली से गुजारा जाता है, जो झिल्ली में हवा को संपीड़ित करके उसे ऑक्सीजन युक्त बनाती है। यह तकनीक उन लोगों को ऑक्सीजन प्रदान करने का एक किफायती तरीका है, जिन्हें पूरक ऑक्सीजन की जरूरत होती है। इसे विकसित करने वाले शोधकर्ताओं का कहना है कि इन दोनों ही उपकरणों का प्रयोग कोरोना वायरस से संक्रमित मरीजों का इलाज में किया जा सकेगा और संक्रमितों की पहचान में भी तेजी आएगी।

तीन अंतरिक्ष यात्री पहुंचे अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन

अल्माटी, एएफपी : कोरोना वायरस महामारी से बेहाल धरती को पीछे छोड़ते हुए तीन अंतरिक्ष यात्रियों का एक दल गुरुवार को अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (आइएसएस) पर पहुंच गया। रूसी अंतरिक्ष एजेंसी रॉसकॉसमॉस ने अपनी वेबसाइट पर कहा है कि सोयुज एमएस-16 कैप्सूल सफलतापूर्वक आइएसएस से जुड़ गया है।

रूस की अंतरिक्ष एजेंसी रॉसकॉसमॉस के अनातोली इवानिशिन और इवान वागनर तथा अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा के क्रिस कैसीडी का अंतरिक्ष यान कजाकिस्तान स्थित रूस के बैकोनूर कॉस्मोड्रोम से रवाना होने के छह घंटे बाद अंतरराष्ट्रीय समयानुसार दो बज कर तेरह मिनट पर आइएसएस पर पहुंच गया। महामारी फैलने के कारण यान के प्रक्षेपण के समय में कुछ बदलाव किया गया था। सामान्य परिस्थितियों में प्रक्षेपण से पहले अंतरिक्ष यात्री मीडिया से मुखातिब होते हैं और उन्हें परिजनों द्वारा विदाई दी जाती है, लेकिन इस बार ऐसा कुछ भी नहीं हुआ।

मनरंजन

'आंखें' जैसी फिल्म आज नहीं बन सकती : अनीस बज्मी

निर्माता-निर्देशक और लेखक अनीस बज्मी इन दिनों लोनावला स्थित अपने बंगले में हैं। हाल में अनीस द्वारा लिखी फिल्म 'आंखें' की रिलीज को 27 साल पूरे हुए हैं। फिल्म से जुड़ी यादों को लेकर उन्होंने बताया कि निर्माता पहलाज निहलानी काफी सख्त थे। मैंने उनसे फिल्म लिखने के लिए वक्त मांगा था, लेकिन वह मुझे सीधे शूटिंग के लिए हैदराबाद ले गए। एक तरफ फिल्म की शूटिंग चलती थी, एक तरफ मैं अपने कमरे में बैठकर सीन लिखता था। कई बार तो सीन ऊपर चलता रहता था, मैं नीचे बैठकर लिखता था। मुझे

फिल्म के निर्देशक डेविड धवन से कहना पड़ता था कि थोड़ा धीरे शूट करो। यह पूरी फिल्म सेट पर लिखी गई थी। फिल्म में विलेन को लेकर मैं स्पष्ट नहीं था कि क्या लिखना है। मैं अपने गांव चला गया था। पहलाज ने लैंडलाइन पर फोन करके मुझे आने को कहा। उन दिनों शेयर दलाल हर्षद मेहता का मामला सुर्खियों में था। वहीं से मुझे विलेन का आइडिया आया। मैंने दिलीप कुमार की किसी फिल्म में बंदर का सीन देखा था। वहां से मुझे फिल्म में बंदर को लेने का आइडिया आया था। गोविंदा और चंकी पांडेय की तरह वह फिल्म का तीसरा हीरो था। एक गाना उस पर फिल्माया गया है। बंदर राजा बहुत मूडी था। उस जमाने में कोई स्पेशल इफेक्ट्स नहीं थे। हम बंदर के ट्रेनर को समझा देते थे। वह उसे ट्रेन करता था। धैर्य से काम करना पड़ता था। बहरहाल, इस फिल्म में कॉमेडी के साथ क्राइम का भी एंगल था। आज के जमाने में 'आंखें' जैसी फिल्म नहीं बन सकती है। फिलहाल अनीस आराम कर रहे हैं। उनके मुताबिक वह दिन में दो-चार घंटे अपनी फिल्म पर काम करते हैं। 'भूल भुलैया 2' के सीन्स पर भी काम चल रहा है। फिल्म की थोड़ी शूटिंग अभी बाकी है।

सलमान खान ने ब्रेकफास्ट में खाया चारा

सलमान खान पिछले तीन हफ्तों से अपने फार्म हाउस में हैं। सलमान ने खाली सड़क और कब्रिस्तान की तस्वीर साझा करते हुए लोगों का शुक्रिया अदा किया है कि वह शब-ए-बरात के मौके पर घरों से बाहर नहीं निकले। उन्होंने लिखा, 'वाह! देश के इन हालात की गहराई को समझने के लिए और बात मानने के लिए, शुक्रिया। ईश्वर आप सभी को स्वस्थ रखें।' इसके अलावा सलमान ने एक और मजेदार वीडियो को साझा किया है, जिसमें वह अपने फार्महाउस पर घोड़े को चारा खिला रहे हैं। मजे की बात यह है कि यह चारा वह खुद भी खा रहे हैं। सलमान ने इस वीडियो को साझा करते हुए लिखा, 'अपने प्यार के साथ ब्रेकफास्ट कर रहा हूं।' सलमान पिछले तीन हफ्तों से अपने फार्म हाउस में ही हैं। उन्होंने अपने पिछले वीडियो में बताया था कि उन्होंने तीन हफ्तों से अपने पिता को नहीं देखा है।

शशांक की असल जिंदगी से जुड़ा था लहंगे वाला सीन

शशांक खेतान की फिल्म 'हंप्टी शर्मा की दुल्हनिया' में आलिया का एक सीन था, जिसमें वह अपनी शादी के लहंगे को लेकर परेशान रहती हैं। उन्हें डिजाइनर लहंगा चाहिए था। शशांक ने बताया कि यह सीन उनकी असल जिंदगी से जुड़ा है। शशांक कहते हैं कि मैं और मेरी पत्नी स्कूल फ्रेंड्स रहे हैं। जब शादी हो रही थी, तो सारी चर्चाएं, ग्रुप में केवल लहंगे को लेकर होती थीं। मम्मी ने मुझसे पूछा कि तुम क्या पहनोगे? तो मैंने कहा- जो मिल जाएगा पहन लूंगा। शशांक कहते हैं कि मुझे याद है, एक लहंगे के लिए, हम कितने सारे स्टोर में गए थे। तब पता चला कि कितने टाइप के लहंगे होते हैं। तब मैंने सोचा था कि जब मैं फिल्म बनाऊंगा, तब इसे फिल्म में जरूर डालूंगा। शशांक बताते हैं कि उन्होंने लव स्टोरी काफी बनाई हैं, उनका मन है कि वह एक्शन थ्रिलर फिल्म बनाएं। शशांक ने यह भी बताया कि अगर किसी पुरानी फिल्म को रीमेक करने का मौका उन्हें मिलेगा तो वह 'मासूम' फिल्म को दोबारा बनाना चाहेंगे।

स्कूल के दिनों से ही सारा को पसंद है सजना-संवरना

इन दिनों कई सितारे अपनी पुरानी स्मृतियों के पन्ने उलट रहे हैं। सैफ अली खान की बेटी सारा अली खान पिछले कुछ दिनों से सोशल मीडिया पर अपनी पुरानी स्मृतियां साझा कर रही हैं। शुक्रवार को उन्होंने सोशल मीडिया पर अपनी दो तस्वीरें साझा कीं। दोनों तस्वीरों में सारा खूब सजी-संवरी नजर आ रही हैं। इन तस्वीरों में उनके चेहरे का भाव भी एक जैसा है। दोनों तस्वीरों में फर्क यह है कि एक तस्वीर उनके स्कूल के दिनों की है और दूसरी वर्तमान की। इन तस्वीरों को साझा करते हुए सारा ने लिखा, 'सच में कुछ चीजें कभी नहीं बदलतीं। छोटी सारा को ही देख लीजिए, एक जैसे हाव-भाव, वही सजना-धजना और वही विश्वास। मुझे पता है कि मैं एक डरावने बच्चे की तरह दिख रही हूं, लेकिन कृपया मेरी शरारती शक्ल पर ध्यान न देकर इन तस्वीरों में मेरी निरंतरता को देखिए।' सारा हाल ही में कार्तिक आर्यन के साथ फिल्म 'लव आज कल' में नजर आई थीं। आगामी दिनों में वह 'कुली नं 1' और 'अतरंगी रे' जैसी फिल्मों में नजर आएंगी।

नेक काम के लिए शुरू हुआ संगीत सेतु

इंडियन सिंगर्स राइट्स एसोसिएशन पीएम केयर्स फंड में मदद करने के लिए आगे आया है। इन्होंने दिलचस्प तरीका निकालते हुए वर्चुअल कॉन्सर्ट सीरीज की शुरुआत की है, जिसमें संगीत जगत से 18 कलाकार जुड़े हैं। इस कॉन्सर्ट में लता मंगेशकर, आशा भोसले, एसपी बालासुब्रमण्यम, उदित नारायण, कविता कृष्णमूर्ति, सुदेश भोसले, तलत अजीज, अलका याज्ञनिक, कुमार शानू, हरिहरन, शंकर महादेवन, सोनू निगम, सलीम मर्चेंट, शान, अनूप जलोटा, पंकज उधास और कैलाश खेर अपनी आवाज का जादू बिखेरेंगे। लता मंगेशकर ने इसके बारे में लिखा, 'हम संगीत सेतु लेकर आ रहे हैं। उम्मीद है आप सब इसका आनंद लेंगे।' सोनू निगम ने लिखा, 'नेक काम के लिए, गाना प्रतिष्ठा की बात है। योगदान देकर सम्मानित महसूस कर रहा हूं।' गायिका कविता कृष्णमूर्ति ने कहा कि संगीत ईश्वर है। संगीत सेतु कॉन्सर्ट शुक्रवार को शुरू हुआ है। यह 12 अप्रैल तक रोजाना रात 8-9 बजे कई डिजिटल और पोर्टल प्लेटफॉर्म्स के साथ टीवी पर भी दिखाया जाएगा। पीएम केयर्स फंड में मदद करने के लिए दूरदर्शन भी इसे दिखाएगा। इस पहल की प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सराहना की है।

माता-पिता को प्यार और सम्मान देने का यह बेहतरीन समय : शिल्पा

शिल्पा शेट्टी इस लॉकडाउन पीरियड को अपने माता-पिता तथा घर के बुजुर्गों को प्यार और उनका सम्मान करने के लिए, सही समय मानती हैं। शुक्रवार को उन्होंने सोशल मीडिया पर एक वीडियो साझा किया। इस वीडियो में शिल्पा की मां सुनंदा शेट्टी उनके बेटे विआन के हाथों पर स्केच पेन की मदद से भगवान शंकर का टैटू बना रही हैं। इस वीडियो को साझा करते हुए शिल्पा ने लिखा, 'हमारे माता-पिता ने हमारे लिए बहुत कुछ किया है। हमें प्यार करने साथ कड़ी मेहनत और त्याग किया है। उन्होंने जो किया उसे एक पल के लिए भी भुलाया नहीं जा सकता है। वर्तमान में हम एक अलग युग में रहते हैं, जहां हम अतीत को भुलकर भागती-दौड़ती जिंदगी जीते हैं। हालांकि यह गलती सिर्फ इंसान ही करता है। यह लॉकडाउन आत्मविश्लेषण करने और माता-पिता द्वारा अतीत में किए गए कार्यों की सराहना करने के लिए बेहतरीन समय है। कम से कम हम उन्हें अपना प्यार दिखा सकते हैं। यह अमूल्य वक्त है। मैं खुशनसीब थी कि शुरुआती दिनों में मुझे अपनी नानी के साथ रहने का मौका मिला। अपने बेटे को इसी तरह अपनी मां के साथ वक्त बिताते हुए देखने से मुझे अत्यधिक आनंद मिलता है। इन सभी चीजों के लिए धन्यवाद मां।' आगामी दिनों में शिल्पा 'निकम्मा' और 'हंगामा 2' जैसी फिल्मों में नजर आएंगी।

जी5 ला रहा ऑनलाइन शॉर्ट फिल्म फेस्टिवल

लॉकडाउन पीरियड में डिजिटल प्लेटफॉर्म की ओर लोगों का रुझान बढ़ा है। दर्शकों की दिलचस्पी देखते हुए नए-नए कार्यक्रमों घोषणा की जा रही है। अब जी5 नई वेब फिल्में और वेब सीरीज रिलीज करने के अलावा शॉर्ट फिल्म फेस्टिवल लेकर आ रहा है। 15 अप्रैल से शुरू होने वाले इस फिल्म फेस्टिवल में हिंदी सिनेमा के कई बड़े सितारों से सजी नौ शॉर्ट फिल्मों का प्रदर्शन किया जाएगा। इनमें विक्रांत मेस्सी और नसीरुद्दीन शाह अभिनीत 'हाफ फुल', राजीव खंडेलवाल और अनुप्रिया अभिनीत 'हार्टबीट', सेलिना जेटली अभिनीत 'सीजन्स ग्रीटिंग', रजत कपूर अभिनीत 'हाउ अबाउट ए किस', पारुल गुलाटी अभिनीत 'सेकेंड हैंड', श्रेया पिलगांवकर और रजित कपूर अभिनीत 'स्वाहा सो बी इट', अलका अमीन अभिनीत 'फूड फॉर थॉट्स', रिया चक्रवर्ती अभिनीत 'बूम नूम' और सुमित राघवन अभिनीत 'स्ट्रॉबेरी शेक' जैसी शॉर्ट फिल्मों का प्रदर्शन किया जाएगा।

आज के प्रमुख टीवी कार्यक्रम

डीडी नेशनल
रामायण : सुबह 9.00/रात 9.00
ब्योमकेश बक्शी : सुबह 11.00
श्रीमान श्रीमती : शाम 4.00
बुनियाद : शाम 5.00
देख भाई देख : शाम 6.00
चाणक्य : रात 10.00

डीडी भारती
उपनिषद गंगा : शाम 6.00
महाभारत : दोपहर 12.00/शाम 7.00

कलर्स
खतरों के खिलाड़ी : सुबह 8.00/रात 9.00
खतरा खतरा खतरा : सुबह 11.00
कॉमेडी नाइट्स विद कपिल : शाम 6.00
नागिन : रात 8.00

स्टार प्लस
सिया के राम : सुबह 5.00/शाम 7.00
महाराज की जय हो : सुबह 6.30/रात 10.30
ये रिश्ते हैं प्यार के : सुबह 7.00
राधाकृष्ण : सुबह 8.00/शाम 7.30
महाभारत : सुबह 9.00/शाम 6.00
इस प्यार को क्या नाम दूं : सुबह 11.00
ये रिश्ता क्या कहलाता है : दोपहर 1.00
दीया और बाती हम : दोपहर 3.00
मर्दानी 2 : रात 9.00

स्टार भारत
कॉमेडी कलासेज : सुबह 7.00
बेस्ट ऑफ लॉफ्टर चैलेंज : सुबह 9.00/शाम 8.00
सावधान इंडिया : दोपहर 3.00

सोनी
द कपिल शर्मा शो : सुबह 7.00/शाम 6.30
सुपर डांसर-चैप्टर 3 : दोपहर 3.30
इंडियाज बेस्ट डांसर : रात 8.00

सब टीवी
तारक मेहता का उल्टा चश्मा : सुबह 8.00/शाम 5.00